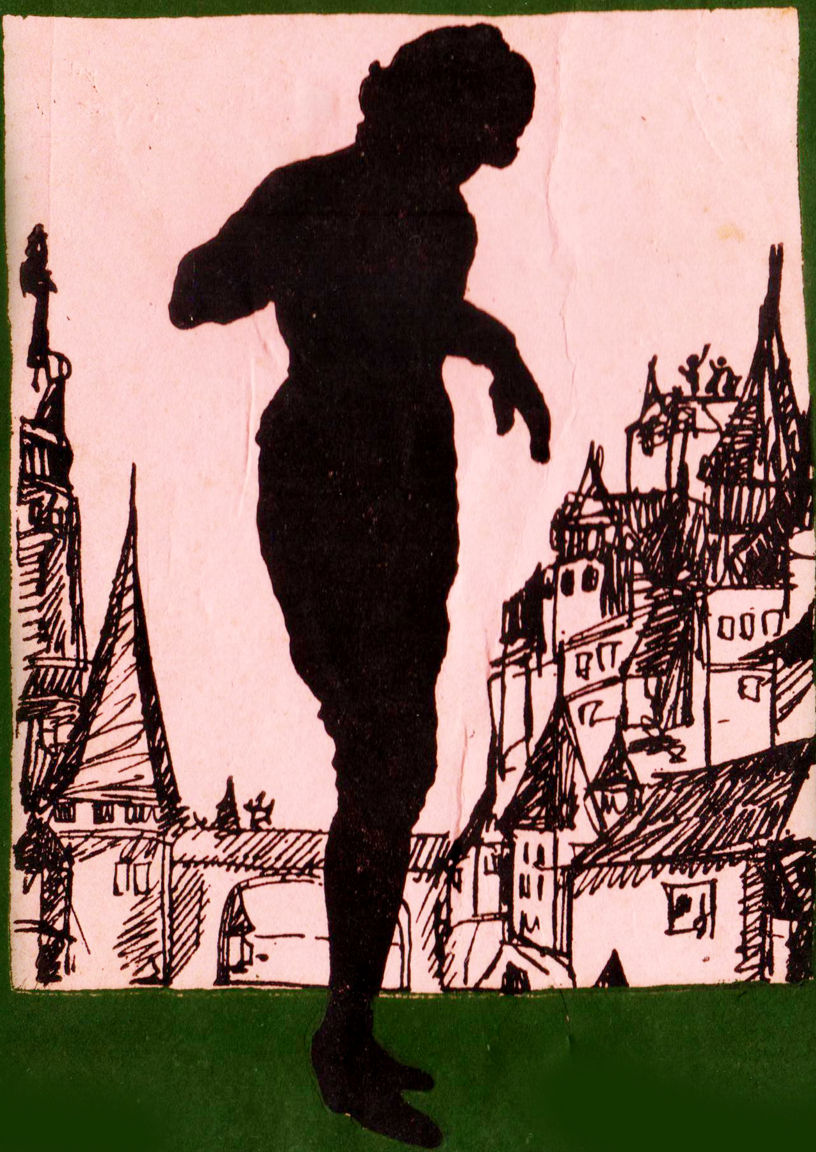
गुलिवर की यात्राएँ



विभा प्रकाशन

५०, चाहचन्द, इलाहाबाद

गुलिवर की यात्राएँ

जोनाथन स्विफ्ट

अनुवाद : सम्पादन

मृत्युंजय चौधरी



प्रथम संस्करण	१६८६
प्रकाशक	विभा प्रकाशन ५०, चाहचन्द इलाहाबाद
मुद्रक	जय हनुमान प्रिंटिंग प्रेस १-सी बाई का बाग इलाहाबाद
आवरण	इम्पैक्ट, इलाहाबाद

मूल्य : बाइस रुपये

'गुलिवर की यात्राएँ' अंग्रेजी साहित्य की अत्यन्त लोकप्रिय रचना है।

गुलिवर ने दो यात्राएँ कीं। पहली लिलीपुट की, जो बौनों का देश था और वहाँ के निवासियों के बीच यह राक्षस जैसा दिखता था। दूसरी यात्रा में वह ऐसे द्वीप में गया जहाँ के निवासी दानव जैसे थे और उनके बीच गुलिवर कीड़े जैसा दिखता था। इन दोनों यात्राओं में उसे अजीब-अजीब अनुभव हुए, जो अत्यन्त दिलचस्प हैं।

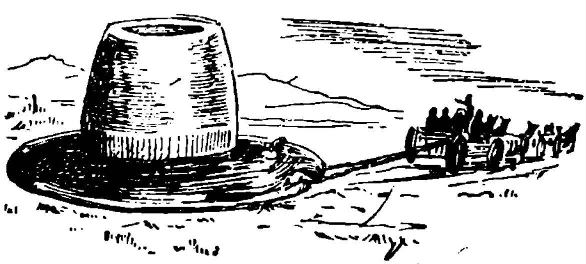
गुलिवर के इन्हीं मजेदार अनुभवों की कहानी यहाँ दी गई है, जिसे हर उम्र के पाठक—वृद्ध भी, बच्चे भी पढ़कर प्रसन्न होंगे।



गुलिवर की यात्राएँ

बौनों के देश में

[पहली यात्रा : लिलीपुट की]



एक

मेरा नाम है गुलिवर। हम लोग एक छोटे से शहर के रहने वाले हैं, जो इंग्लैण्ड में है। मेरे दो भाई मुझसे बड़े थे और दो छोटे। जब मैं चौदह साल का था तो मेरे पिता ने मुझे कालेज में पढ़ने भेजा। मैंने वहाँ केवल तीन साल पढ़ाई की। फिर जीविका के लिए लन्दन के प्रसिद्ध डाक्टर जेम्स बेट्स के यहाँ काम करने लगा। वहाँ भी मैं केवल चार साल ही रहा।

वहाँ से मैं फिर पिता के पास लौट आया। कुछ दिनों के बाद एक बड़े फौजी कमाण्डर कैप्टन पैनेल के साथ समुद्री यात्राएँ करने लगा। छोटी-छोटी कई यात्राएँ मैंने कीं। इस तरह साढ़े तीन साल बिताए।

इस बार लौटकर मैंने निश्चय किया कि अब लन्दन में ही रहूँगा। मेरे मित्र डाक्टर बेट्स ने भी यही सलाह दी। सो मैं लन्दन में ही जम गया। फिर लन्दन के एक बड़े व्यापारी की पुत्री मेरी बर्टन से मेरा विवाह हुआ। इस विवाह में मुझे थोड़ा सा धन भी मिल गया। अब मैंने एक छोटा-सा रोजगार शुरू किया और मजे में रहने लगा।

लेकिन मेरा दुर्भाग्य! मेरा मित्र बेट्स दो साल बाद ही मर गया। उसके मरने से मेरा कोई सच्चा मित्र नहीं रह गया। और मेरा रोजगार भी धीरे-धीरे समाप्त हो गया। तब मैंने अपनी पत्नी और अन्य कई मित्रों से सलाह ली और सबों की यही राय हुई कि मैं फिर अपने पुराने काम —जहाजी यात्रा—पर लौट जाऊँ।

फिर बिना कुछ और सोचे-विचारे मैं यात्रा के लिए निकल पड़ा। अनेक यात्राएँ कीं। पूर्व व पश्चिम के कई देशों का भ्रमण किया। लेकिन ये यात्राएँ बहुत लाभदायक नहीं सिद्ध हुईं। इनमें भी मैंने पूरे छः साल नष्ट किये। अन्त में बिल्कुल ऊब कर मैं घर वापस आकर रहने लगा।

एक दिन 'अतेलोप' जहाज के मालिक कप्तान विलियम प्रिचार्ड ने अपने साथ यात्रा करने का मुझे न्योता दिया। उस समय वे दक्षिण समुद्र की यात्रा पर जा रहे थे। हमें भी उन्होंने साथ ले लिया और हम लोग ब्रिस्टल से ४ मई, १६९९ को रवाना हुए।

जब हम लोग पूर्व की ओर बढ़ रहे थे तब हमें एक बहुत भयंकर तूफान का सामना करना पड़ा। इस तूफान में हमारे नाविकों में से बारह की मृत्यु हो गयी और कई समुद्री बीमारी के शिकार हुए। पाँच नवम्बर को मामला फिर बिगड़ा और हम लोगों ने देखा कि सामने से एक बहुत बड़ा बर्फ का पहाड़ हमारी ओर बढ़ा आ रहा है। हम लोगों ने उससे बचने की भरसक पूरी कोशिश की, लेकिन बचाव की कोई आशा न देख फौरन ही हम छः नाविक एक नाव के सहारे समुद्र में उतर पड़े कि किसी प्रकार उस बर्फ के पहाड़ को दूसरे रास्ते पर लगा दें। काफी मेहनत करनी पड़ी। लेकिन कोई खास नतीजा न निकला और अन्त में हमने अपने आप को लहरों की कृपा पर ही छोड़ दिया। लहरें चाहेंगी तो जीवित बचेंगे नहीं तो मर जाएँगे। इस तरह समुद्र में भाग्य के भरोसे एक घंटे से अधिक बहते रहने के बाद हम लोगों ने देखा कि अचानक उत्तर की ओर से तूफान का इतना बड़ा झोंका आया कि हम लोग अपने को किसी तरह सम्भाल न सके।

मेरे पाँचों साथियों व हमारी नाव का क्या हुआ, मैं नहीं कह सकता। हाँ, मैंने यह जरूर देखा कि मैं उस अथाह समुद्र में अकेला रह गया हूँ और मेरे पाँचों साथियों का कहीं पता न था। अब लहरों पर पड़ा मैं अपने भाग्य के सहारे दिशाहीन बहता जा रहा था। थोड़ी देर बाद, जब तूफान का असर कम हुआ तो मैंने तैरना शुरू किया। आशा बँधी कि शायद मेरा दुर्भाग्य अब समाप्त होने को है। क्योंकि करीब एक-डेढ़ मील तैरने के बाद मुझे किनारा दिखाई पड़ा और महसूस हुआ कि समुद्र की गहराई भी कुछ कम हो रही है। धीरे-धीरे सचमुच किनारा आ गया और मैं रेत पर पाँवों के बल चलने लगा। मेरा अन्दाज है कि उस समय शाम के आठ बज रहे थे।

किनारे पर पहुँच कर मुझे घोर निराशा हुई, क्योंकि आधा मील से अधिक चलने पर भी न तो मुझे कोई घर मिला, न कोई बस्ती, न कोई

आदमी। मैं बहुत ज्यादा थका तो था ही, इसलिए मैं किसी ऐसी जगह की तलाश में था जहाँ मैं सो सकूँ। मुझे जब कोई ठिकाना न दिखाई दिया तो मैं वहीं सूनसान मैदान में जहाँ हल्की-फुल्की मुलायम घासों की चादर बिछी थी, लेट गया। और लेटते ही मुझे इतनी गहरी नींद आ गयी कि शायद जीवन में और कभी वैसी नींद नहीं आयी थी। और जरूर ही मैं सात-आठ घंटे से अधिक ही सोया होऊँगा, क्योंकि जब मेरी आँखें खुलीं तो खूब अच्छी तरह दिन चमक रहा था। मैंने उठना चाहा पर मैं उठ न सका। क्योंकि मैं पीठ के बल सोया था और मैंने अनुभव किया कि मेरे पाँवों और बाँहों को बहुत कस कर जमीन से बाँध दिया गया है। मैंने तब अनुभव किया कि बाल, हाथ व पाँव ही नहीं, सारी देह ही हर तरफ से बाँध व जकड़ दी गयी है। मैं किसी तरह भी उठ नहीं सकता था, हाँ सिर्फ ऊपर की ओर ताक भर सकता था। अब तक धीरे-धीरे सूरज बहुत तेज हो गया था और उसकी रोशनी आँखों में गड़ने लगी थी। इससे मुझे बहुत कष्ट हो रहा था।

तभी मैंने सुना कि मेरे आस-पास कुछ फुसफुसाहट हो रही है। और दूसरे ही क्षण मैंने अनुभव किया कि कोई कीड़ा मेरे पाँव पर रेंग रहा है। फिर रेंगता हुआ वह मेरी छाती पर भी आया और मेरी ठुड्डी के पास तक आ पहुँचा। मैंने उत्सुकता से आँखें नीचे घुमाईं। मैंने देखा कि जिसे मैं कीड़ा समझ रहा था, वह कीड़ा नहीं बल्कि लगभग छः इंच का वह एक छोटा सा आदमी था, जिसके हाथ में धनुष-बाण था और उसकी पीठ पर तरकश बँधा था। तभी मुझे लगा कि उस जैसे ही चालीस-पचास



की तादाद में बौने उसी के पीछे चले आ रहे हैं। उन्हें देखकर मुझे बड़ा अचम्भा हुआ और मैं ठठा कर जोरों से हँस पड़ा। लेकिन मेरी हँसी सुन कर वे सब इतना डर गये कि सभी घबरा कर कूद-कूद कर वापस भागे। कुछेक के, जो मेरे कंधों से जमीन पर कूदे थे, हाथ-पाँव भी टूट गये। फिर काफी देर बाद वे हिम्मत करके वापस आये। उनमें से एक, बहुत हिम्मत करके मेरे सिर के पास तक आया और मेरे चेहरे का सारा भाग देख कर एकाएक चीख उठा। उसकी चीख का अर्थ तो मेरी समझ में नहीं आया पर उसकी आवाज कुछ इस तरह की थी—'हकीना दिगस'। और जो बौने नीचे खड़े थे, वे भी वही आवाज जोर-जोर से दोहराने लगे।

अब तक मैं बड़े कष्ट में था और अपनी पूरी ताकत लगा कर अपने बंधन ढीले करने की कोशिश कर रहा था। बड़ी मेहनत के बाद मैं अपने बाएँ कंधे की रस्सी के साथ गड़ी हुई कीलों को उखाड़ने में सफल हुआ। इसके बाद दर्द थोड़ा और बढ़ा लेकिन मैं ताकत लगाता ही रहा। फिर एकाएक जो सिर को झटक दिया तो बाईं तरफ, जिन रस्सियों से मेरे बाल बँधे थे, उनकी जकड़ ढीली हुई, और मैं करीब दो इंच सिर घुमा सकने की स्थिति में आ गया। अब मुझे हिलता देख कर वे छोटे-छोटे बौने भाग गये। फिर जब थोड़ी देर बाद हिम्मत कर के वे वापस आये तो उनमें से एक ने आदेश के स्वर में कहा—'तोलगो फोनक'। उसी क्षण आलपीन जैसे हजारों तीरों की वर्षा से मेरा दाहिना हाथ ढँक गया। उन तीरों की चुभन से लगता जैसे सुइयाँ चुभ रही हों। तभी इसके पहले कि मैं कुछ करूँ, फिर से तीरों की वर्षा शुरू हुई और इस बार वे तीर आकर मेरी देह और चेहरे पर गिरने लगे। झटपट घबरा कर मैंने बाएँ हाथ से अपना चेहरा ढँक लिया।

और थोड़ी देर बाद, जब तीरों की बरसात समाप्त हो गयी तो मैं फिर ताकत लगा कर और रस्सियाँ तोड़ने की कोशिश करने लगा। परन्तु इस बार मुझे सफलता नहीं मिली। सुइयों जैसे अनेक तीरों के चुभने से मेरी सारी देह में काफी दर्द भी हो रहा था। अतः मैं थक कर चुपचाप लेटा रहा।

मुझे खामोश देख कर तीरों का चलना बिल्कुल बन्द हो गया। लेकिन जैसी आवाजें आ रही थीं, उनसे मुझे यह समझने में देरी नहीं लगी कि

बौनों की संख्या प्रति-क्षण बढ़ती ही जा रही है। फिर अचानक मैंने सुना कि लगभग चार गज की दूरी पर कुछ इस तरह की आवाज आ रही थी जैसे कोई चीज ठोंकी जा रही हो। यह आवाज एक घण्टे से कुछ अधिक देर तक रही। तब ऊब कर मैंने उसी ओर सिर घुमाया। पूरी तरह सिर घूम न पाया, हाँ जितनी रस्सियाँ ढीली हुई थीं, केवल उतना ही सिर घूमा। और तब एक झलक में मैंने सिर्फ इतना ही देखा कि जिधर से शोर आ रहा था, उधर लगभग डेढ़ फुट ऊँचा एक बहुत लम्बा-चौड़ा मंच तैयार किया जा रहा था। ठोंक-पीट की आवाज इसी की थी। थोड़ी देर के बाद उस भीड़ में से एक आदमी आगे बढ़ा, जो संभवतः उन बौनों का कोई बड़ा अफसर या अधिकारी या उनका सरदार मालूम पड़ता था। उसने मुझे सुना-सुना कर लम्बा भाषण दे डाला, परन्तु मैं उसकी एक बात भी समझ न सका।

इसके बाद उस भीड़ में से लगभग पचास आदमी आगे बढ़े। मैं समझ न पाया कि वे क्यों आ रहे हैं। आकर उन्होंने सबसे पहले वह रस्सियाँ काट दीं, जिनसे मेरा सिर कसा हुआ था और मैं दाहिनी ओर सिर घुमाने लायक हो गया। अब मैं सिर घुमा कर उस भाषण देने वाले व्यक्ति को देखने लगा। उसकी कोई बात मैं समझ नहीं रहा था, लेकिन उसके हाव-भाव से लगता था कि कभी तो वह मुझ पर क्रोध दिखाता था, कभी धमकाता था और कभी दया दिखाता था।

जब वह चुप हो गया तो मैं धीरे-धीरे उससे बोलने लगा, लेकिन मुश्किल तो यह थी कि वह भी मेरी बात नहीं समझ रहा था। मैंने आकाश की ओर हाथ उठा कर उसे बताया कि आकाश गवाह है, और मैं उनका कोई नुकसान नहीं करूँगा। हाँ, जहाज छोड़ने के कुछ पहले ही मैंने खाना नहीं खाया था और इसलिए भूख के मारे मेरे पेट में चूहे कूद रहे थे। अतः मैंने अपने मुँह में उँगली डाल कर इशारा किया कि मैं कुछ खाना चाहता हूँ।

वह अफसर मेरे इशारे को समझ गया। उसने फौरन ही आदेश दिया और लगभग एक सौ बौने सीढ़ी से मेरे ऊपर चढ़ आये और मेरे मुँह की ओर टोकरियों में खाना लिए हुए बढ़े। टोकरियों में मांस था और वह शायद उनके राजा ने भिजवाया था।

मैंने अनुभव किया कि उन टोकरियों में अनेक प्रकार के जानवरों के मांस थे। और जरूर ही वे जानवर भी इन बौनों की तरह ही छोटे-छोटे रहे होंगे। मैं एक-एक बार में एक-एक ग्रास के रूप में उनकी दो-दो टोकरियों का खाना खा जाता। मेरे इस प्रकार से खाने को देख कर उन्हें महान् आश्चर्य हुआ और वे मुँह बना-बना कर अचम्भे में डूबे मेरे लिए जितना भी अधिक खाना पहुँचा सकते थे, लाते रहे।

फिर मैंने दूसरा इशारा किया। मुझे प्यास लगी थी। मेरे खाने के ढंग से उन्होंने समझ लिया था कि थोड़े पानी से काम नहीं चलेगा। अतः अपने यहाँ की सबसे बड़ी मश्क में पानी भर कर वे ले आये और बड़ी कठिनाई से मेरे मुँह तक मश्क को ला सके। मैंने एक ही साँस में पूरी मश्क खाली कर दी, पर वह तो ऊँट के मुँह में जीरा के समान हुई। वे सब मिल कर एक मश्क पानी और ले आये, लेकिन उससे भी प्यास तो बुझ नहीं पायी थी, इसलिए मैंने उन्हें फिर पानी लाने का इशारा किया। लेकिन उन बेचारों के पास जितना पानी था, वह सब वे पहले ही मुझे पिला चुके थे।

मेरे खाने-पीने को देख कर वे सब आश्चर्य में डूब गये और खुशी के मारे छाती पर चढ़ कर नाचने-कूदने लगे, जैसे उन्हें कोई मैदान मिल गया हो। उन्होंने इशारों से मुझसे कहा कि दोनों मश्कों को मैं जमीन पर रख दूँ और साथ ही उन्होंने अपने साथियों को भी दूर हट जाने का इशारा किया। जब उन सबों ने मेरे फेंकने पर मश्कों को हवा में उड़ कर गिरते देखा तो खुशी के मारे फूले न समाये।

जब उन्होंने देखा कि मैं खाने के लिए और नहीं मांग रहा तो उनको थोड़ा संतोष हुआ। मेरे पास एक बौना आया जो राजा का बड़ा अफसर जान पड़ता था। वह सरदार दस और लोगों के साथ मेरे पैरों पर चढ़ कर मेरे मुँह की ओर आने लगा। उसने सरकारी मुहर लगा एक कागज निकाल कर मुझे दिखाया और करीब दस मिनट तक कुछ कहता रहा। उसकी आवाज में क्रोध नहीं था, पर दृढ़ता जरूर झलकती थी। रह-रह कर वह राजधानी की ओर इशारा भी करता था। शायद राजा के दरबार का यह हुक्म था कि मुझे वहाँ पहुँचा दिया जाय।

मैंने भी संक्षेप में उत्तर दिया, पर बेकार। क्योंकि उन लोगों की

समझ में भी कुछ नहीं आया। फिर एक हाथ से इशारा करके मैंने समझाया कि मैं बंधन-मुक्त होना चाहता हूँ। मेरी बात शायद उसकी समझ में आ गई। उसने सिर हिला कर इन्कार किया और इशारे से बतलाया कि मुझे बन्दी के रूप में ही ले जाया जाएगा। उसने इशारे से ही यह भी बतलाया कि मुझे खाने और पीने के लिए सभी चीजें पर्याप्त मात्रा में दी जाएँगी और बरताव भी अच्छा ही किया जाएगा। मैंने भी संतोष की सांस लेते हुए मन-ही-मन कहा कि जो चाहो करो। इसके बाद उस सरदार और उसके साथियों ने मिल कर मुझे घसीटना शुरू कर दिया।

थोड़ी देर बाद मैंने अपने पास शोर-गुल होते सुना और महसूस किया कि बहुत से लोग मेरी बाईं ओर खड़े होकर रस्सी ढीली करने का प्रयत्न कर रहे हैं। अब मैं दाहिनी ओर मुड़ सकता था। उन लोगों ने मेरे दोनों हाथों में कोई खुशबूदार मलहम भी मल दिया था, जिससे तीरों की चुभन का सारा दर्द जाता रहा। अब मैं बहुत ताजगी महसूस कर रहा था। उनके दिये भोजन और पानी से मैं तृप्त हो ही चुका था। अतः मुझे नींद आने लगी और मैं सो गया। मैं करीब आठ घंटे सोया। उन लोगों को इस बात से कोई आश्चर्य नहीं हुआ। क्योंकि उन लोगों को राज दरबार के डाक्टर ने शायद बतला दिया था कि जो शराब पानी के साथ मुझे पिलाई गई थी उसमें नींद की दवा भी मिली हुई थी।

मुझे पता लगा कि मेरे किनारे पर आने के फौरन बाद ही राजा को मेरे आने की खबर कर दी गई थी और उन्होंने राज-दरबार में अपने सरदारों की राय से यह निश्चय किया था कि मुझे बांध कर रखा जाय और खाने-पीने की चीजें पर्याप्त मात्रा में दी जाएँ और राजधानी में लाने के लिए एक मशीन-गाड़ी तैयार की जाये।

ये लोग काफी समझदार थे। राजा के बराबर उत्साह दिलाते रहने के कारण ये लोग अच्छी गाड़ियाँ तैयार करने के अभ्यस्त हो गये थे। बड़े-बड़े पेड़ों और वजनी बोझों को ले जाने के लिए उनके पास कई मशीन-गाड़ी पहले से ही थीं। इन्हीं गाड़ियों की मदद से वे ज़ंगल से नौ फुट तक के लकड़ी के लट्ठे समुद्र के किनारे तक, जो वहाँ से तीन-चार गज की दूरी पर था, ले जा सकते थे। करीब पाँच सौ बढ़ई और इन्जीनियर मेरे ले जाने लायक मशीन-गाड़ी बनाने के काम में लगा दिये गये

थे। यह बाइस पहियों पर चलने वाली एक गाड़ी थी, जो सात फुट लम्बी और चार फुट चौड़ी थी और जमीन से तीन इंच ऊँची थी।

जो आवाज मैंने सुनी थी, वह शायद इसी गाड़ी की थी। यह गाड़ी मेरे आने के कुछ घंटे बाद चली थी और लाकर मेरे बगल में खड़ी कर दी गई थी। सबसे बड़ी दिक्कत की बात तो यह थी कि मुझे उठा कर लादा कैसे जाये। एक फुट ऊँचे अस्सी खंभे गाड़े गये और सबसे मोटी रस्सियों में हुक लगा कर मेरे बदन में बँधी हुई रस्सियों को गर्दन, पैर आदि में फँसा दिया गया। नौ सौ बौनों की मदद से, जो वहाँ के सबसे बलवान लोग थे, तीन घंटे की मेहनत के बाद मुझे उस गाड़ी पर लाद दिया गया। फिर उन सबों ने कस कर मुझे गाड़ी पर भी बाँध दिया।

यह सब मुझे बाद में मालूम हुआ था, क्योंकि जिस समय यह काम हो रहा था, मैं उस दवा के प्रभाव के कारण गहरी नींद में सो रहा था। मुझे राजधानी में ले जाने के लिए राजा के पन्द्रह सौ घोड़े उस गाड़ी में जोते गये। घोड़े भी करीबन चार इंच ऊँचे थे।

राजधानी उस स्थान से करीब आधा मील दूर थी। यात्रा शुरू होने के चार घंटे बाद मेरी नींद उस समय खुली, जब एक आकस्मिक घटना हो गई। जब गाड़ी एक स्थान पर मरम्मत के लिए रुकी तो दो-एक व्यक्ति कौतूहलवश गाड़ी पर चढ़ आये। मेरे मुँह के पास आकर उनमें से एक ने अपनी लाठी को मेरी नाक में घुसेड़ दिया और मुझे जोर से छींक आ गई। उसकी सींक जैसी लाठी ने नाक में सुरसुराहट पैदा कर दी थी और मुझे जोर की छींक आई थी। छींक की आवाज से घबरा करके सब भाग गये। करीब तीन हफ्ते बाद मुझे उस समय एकाएक जागने का कारण मालूम हुआ था।

उस दिन हम लोग दिन भर चलते रहे और रात में जब आराम करने के लिए रुके तो मेरे दोनों ओर पाँच-पाँच सौ सिपाहियों का पहरा लगा था। दूसरे दिन सूरज निकलते ही हम लोग फिर अपनी यात्रा पर चल दिये और दोपहर होते-होते राजधानी के फाटक से करीब दो सौ गज की दूरी तक पहुँच गये। राजा और उसके सब दरबारी मुझसे मिलने आये। दरबारियों ने राजा को मेरे शरीर पर चढ़ने के खतरे को मोल लेने की राय नहीं दी।

जिस स्थान पर गाड़ी रुकी थी, वहाँ पर एक प्राचीन मंदिर था। जो राज्य भर में सबसे बड़ा समझा जाता था। कुछ वर्ष पहले वहाँ एक हत्या हो गयी थी और अब वह अपवित्र समझा जाने लगा था। उसी मंदिर में मुझे ठहराने का निश्चय हुआ था।

मंदिर के बड़े फाटक का मुँह उत्तर की ओर था। वह करीब चार फुट ऊँचा और दो फुट चौड़ा था। और उसमें मैं आसानी से घुस सकता था। फाटक के दोनों तरफ खिड़कियाँ थीं जो जमीन से छः इंच ऊँची थीं। राजा के लुहार ने बाईं ओर खिड़की में इक्यानबे जंजीरें मगा रखी थीं, जो औरतों के गले की चैन जैसी थीं। उन्हीं जंजीरों को छत्तीस छल्लों की मदद से मेरे बाएँ पैर में बांध दिया गया था।

जब कारीगरों को यह विश्वास हो गया कि अब मैं जंजीरों को नहीं तोड़ सकता तो उन्होंने मेरे शरीर पर बँधी रस्सियों को काट दिया और मैं उठ खड़ा हुआ। उस समय मुझ पर भयानक रूप से आलस्य छाया था। पर मेरे उठने और चलने-फिरने को देख कर उन बौनों को कितना आश्चर्य हुआ, इसका वर्णन करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। मेरे पैरों में बँधी जंजीर करीब दो गज लम्बी थी। अतः मैं दरवाजे के पास—आगे-पीछे घूम सकता था और अंदर घुस कर मंदिर में आराम से सो भी सकता था।

दो

अब खड़े होकर मैंने चारों ओर देखा। सारा देश एक बड़ा बाग जैसा दिखाई पड़ता था। उसके खेत, जो करीब चालीस वर्ग-फुट के थे, बाग की क्यारियों जेसे दिखाई पड़ रहे थे। ये खेत जंगलों से मिले हुए थे और सबसे ज्यादा ऊँचे पेड़ों की ऊँचाई सात फुट से अधिक नहीं रही होगी। मेरे बाईं ओर शहर बसा हुआ था और वहाँ का दृश्य थियेटर में लगे परदों जैसा दिखाई देता था।



राजा अपने महल से घोड़े पर सवार होकर मेरी ओर आ रहा था। घोड़ा यद्यपि सधा हुआ था, लेकिन उसके कद के हिसाब से तो मैं चलता-फिरता पहाड़ था। ऐसे दृश्यों का अनभ्यस्त होने के कारण वह घबड़ा गया और पिछली टाँगों पर खड़ा होकर हिनहिनाने लगा। राजा भी अच्छा घुड़सवार था। जब तक उसके अर्दली दौड़ कर नहीं आ गये, घोड़े को काबू कर रखा था। घोड़े पर से उतर कर राजा ने मुझे घूर-घूर कर देखा पर रहा मुझसे काफी दूर ही।

उसने अपने बावर्चियों को आदेश दिया कि मुझे खाने-पीने की चीजें दें। उन लोगों ने कई गाड़ियों को ठेल कर, जिन पर खाने का सामान रखा था, मेरी पहुँच के अन्दर कर दिया। जल्दी ही मैंने सब खाना खत्म कर डाला। बीस गाड़ियों में माँस था और दस गाड़ियों में शराब। दो

गा तीन गाड़ियों का मांस मेरा एक ग्रास होता था। और दसों गाड़ियों की शराब मैंने एक में इकट्ठा कर ली और फिर घूंट बांध कर पी गया।

रानी और राजकुमारियाँ पास पड़ी कुर्सियों पर बैठी मुझे देख रही थीं। पर राजा के घोड़े के घबरा जाने वाली घटना के बाद वे सब राजा के पास ही आकर खड़ी हो गई थीं।

राजा अपने अन्य दरबारियों से थोड़ा-सा ही ऊँचा था, करीब मेरे घुटनों की आधी ऊँचाई तक। उसके मुँह पर पुरुषोचित गंभीरता थी, शरीर की गठन अच्छी थी और हाव-भाव राजाओं जैसा ही था। वह युवावस्था को पार कर रहा था। उसकी उम्र लगभग अट्ठाइस वर्ष नौ महीने की थी। राज्य करते हुए उसे करीब सात वर्ष हो चुके थे और अपने शासन-काल में वह सदा विजयी ही रहा था।

उसका पहनावा सादा था और एशियाई और यूरोपियों की वेश-भूषा का मिश्रण मालूम होता था। उसके सिर पर रत्नजटित सोने का मुकुट था। हाथ में उसके नंगी तलवार थी ताकि जरूरत पड़ने पर वह अपनी रक्षा कर सके। वह तलवार करीब तीन इंच लम्बी थी। उसकी मुठिया सोने की थी और उसमें हीरे-जवाहरात जड़े थे।

उसकी आवाज धीमी पर खूब साफ थी। स्त्रियाँ और दरबारी बढ़िया कपड़े पहने थे। राजा मुझसे बातें करता था और मैं उनका उत्तर देता था, पर एक-दूसरे की बात का हम लोग एक अक्षर भी नहीं समझ पाते थे। उसके पादरी और वकील भी उसके साथ थे और उन्हें भी मुझसे बातें करने के लिए आदेश दिया जाता था। मैं उनसे कई भाषाओं में बातें करता था, पर उसकी समझ में कुछ नहीं आता था।

करीब दो घंटे बाद दरबार समाप्त हुआ। मैं वहाँ अकेला रह गया। मेरी रक्षा करने को एक ताकतवर पहरेदार भी वहाँ पर था। वह बौने मुझे देख कर कौतूहल भी करते थे और शैतानी भी। कुछ तो हिम्मत कर मेरे नजदीक भी आते थे और कुछ परेशान करने की गरज से अपना तीर भी चला देते थे।

मैं अपने घर के दरवाजे के पास चुपचाप बैठा था। एक तीर आकर मेरी बाईं आँख के करीब लगा और मेरी आँख फूटने से बाल-बाल बच



गई। पहरेदार ने उनमें से छः को पकड़ लिया और उसे यही सजा समझ में आई कि उन्हे मेरे हाथों में पकड़ा दे। फिर उसने यही तय किया भी। अपनी लाठी के कुंदे से धक्के दे-देकर उनको मेरे पास तक ठेल दिया।

उन सबों को मैंने अपने दाहिने हाथ से पकड़ कर पाँच को तो कोट की जेब में रख लिया और छठवें को पकड़ कर मैंने ऐसी मुद्रा बनाई जैसे मैं उसे जिन्दा ही निगल जाऊँगा। वह बेचारा तो डर के मारे थर-थर काँपने लगा और पहरेदार व अफसर और उनके सिपाही भी परेशान हो गये। खास कर उस वक्त जब उन्होंने मुझे अपना कलम बनाने वाला चाकू निकालते देखा। लेकिन जल्दी ही उनका डर दूर हो गया, क्योंकि मैंने उसकी रस्सी काट दी और उसे जमीन पर खड़ा कर दिया। बस, वह फौरन ही भाग गया।

बाकी पाँचों के साथ भी मैंने यही सलूक किया। एक-एक को जेब से निकाल कर उनकी रस्सी काट कर भगा दिया। भागते समय भी वे खिलौने जैसे ही लग रहे थे। मेरे इस दयापूर्ण बरताव को देख कर सिपाही और वहाँ उपस्थित सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए। मेरी इस दया का प्रभाव दरबार में मेरे साथ होने वाले व्यवहार पर भी बहुत पड़ा।

रात निकट आने पर मैं बड़ी मुश्किल से घर में घुस पाया। वहाँ मैं जमीन पर ही सो सकता था। करीब पन्द्रह दिन तक मेरी यही दशा रही। इसी बीच राजा ने मेरे लिए बिस्तर तैयार करने की आज्ञा दी।

[illegible] के छः सौ बिस्तर लाए गये और उन्हें मेरे घर में बिछा कर मेरे लिए बिस्तर तैयार किया गया। डेढ़-सौ बिस्तरों को एक साथ सिया गया था। वह मेरी नाप का हुआ और उसी तरह के चार बिस्तर सिल कर [illegible] में जोड़ दिये गये।

उन दिनों अक्सर ही राजा का दरबार यह निर्णय करने को किया जाता था कि मेरे साथ क्या और कैसा सुलूक किया जाय। बाद में एक मित्र से मुझे पता चला कि राजदरबार में मुझे लेकर काफी परेशानियां हुई। वे लोग समझते थे कि मैं अपनी जंजीर तोड़ कर किसी दिन भी बंधन-मुक्त हो सकता हूँ। मेरे खाने का खर्च बहुत ज्यादा था और उन्हें डर था कि यदि उनके सारे देश का खाना मैं अकेले ही खा गया तो वहाँ अकाल पड़ने की सम्भावना भी बढ़ने लगेगी। कभी-कभी वे लोग मुझे भूखा रखने की भी सोचते थे और कभी मेरे मुँह और हाथ को जहरीले तीरों से घायल करने की योजना बनाते और कभी यह सोचते कि इतने विशालकाय मनुष्य के शरीर से निकलने वाली बदबू से उनके देश में प्लेग फैल सकता है।

राजदरबार में जब यह वाद-विवाद चल रहा था तभी फौज के कई सिपाही दरबार में आये और उन छः व्यक्तियों के प्रति मेरे व्यवहार का वर्णन किया। इसका राजा और दरबारियों पर इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि फौरन ही यह आदेश जारी किया गया कि हर आदमी बारी-बारी से प्रति दिन छः बैल और चालीस भेड़ें मेरे खाने के लिए पहुँचा जाया करे। छः सौ आदमियों को मेरा घरेलू काम करने के लिए तैनात किया गया। उन लोगों के रहने के लिए फाटक के दोनों ओर बहुत से तम्बू भी गाड़ दिये गये।

यह भी आदेश जारी हुआ कि तीन सौ दर्जी मिल कर मेरे लिए देश के फैशन के अनुसार कपड़े बना दें। राजा के छः विद्वान-दरबारियों को आज्ञा दी गयी कि मुझे उस देश की भाषा सिखाएँ और यह भी आदेश हुआ कि घुड़साल के घोड़ों को मेरे इर्द-गिर्द घुमाया जाय, ताकि उनके मन से मेरा डर जाता रहे।

इन सभी आदेशों का यथोचित पालन भी हुआ। करीब तीन सप्ताह में मैं उनकी भाषा कुछ-कुछ सीख गया था। बीच-बीच में राजा भी मुझे

देखने आता और मेरे शिक्षकों को मेरी शिक्षा में सहायता देता। हम लोग अब बातचीत में एक दूसरे की बातों को एक हद तक समझने भी लगे थे। पहली बात जो मैंने उनकी भाषा में उनसे कही, वह यह थी—'मुझे जल्दी ही बन्धन-मुक्त कर दिया जाय।'

राजा ने इसका उत्तर दिया कि समय आने पर यह भी हो जायगा, फिर और दरबारियों की भी राय लेनी पड़ेगी। हां, सबसे पहले मुझे राजधानी और उसके राज्य में हमेशा शान्ति रखने का वायदा करना होगा। उसकी प्रजा को मैं प्रेम से जीतूँ और उनके हृदय से भय निकाल दूँ।

एक दिन राजा ने पूछा कि अगर तुम्हारी तलाशी ली जाय तो तुम बुरा तो नहीं मानोगे? क्योंकि हम लोगों को शक है कि तुम्हारे पास हथियार हैं। मैंने जवाब दिया कि महाराज को अपने को हर तरह से सन्तुष्ट कर लेना चाहिए और मैं तलाशी देने के लिए तैयार हूँ।

उसने बतलाया कि राज्य के नियमों के अनुसार दो अफसरों द्वारा तलाशी ली जाएगी और वह यह भी जानता था कि मेरी रजामंदी के बिना यह हो भी नहीं सकता। उसे मेरे सद्व्यवहार पर इतना विश्वास था कि वह अपने अफसरों की सुरक्षा मेरे हाथों सौंप सकता था।

मैंने दोनों अफसरों को उठा कर अपनी कोट की जेबों में रख लिया और उनसे जेबों की तलाशी लेने को कहा। इस प्रकार मैंने सब जेबें उन्हें दिखला दीं, पर अपनी गुप्त जेब की तलाशी देने की मेरी तनिक भी इच्छा नहीं थी और वही मैंने उन्हें नहीं दिखलाई। एक में तो चांदी की घड़ी थी और दूसरी में कुछ सोने के सिक्के थे।

इन बौने अफसरों ने कागज, स्याही, कलम की मदद से एक पूरी सूची तैयार कर डाली। इतना करने के बाद उन्होंने मुझसे कहा कि इन चीजों को मैं ठीक से रख दूँ ताकि उन्हें राजा के सामने पेश किया जा सके। इस सूची का मैंने अनुवाद कर डाला, जिसका विवरण इस प्रकार है—

'इस विशालकाय पर्वत के दाहिने जेब की पूरी तलाशी लेने के बाद कपड़े का एक बड़ा टुकड़ा मिला, जो महाराज के मुख्य सरकारी कमरे की गाजिम बन सकता है।

'बाईं जेब में चाँदी का एक बड़ा बक्स था, जिसका ढक्कन भी चाँदी

का ही था। उसे हम लोग उठा नहीं सके। हम लोगों ने उसे खुलवाया और हममें से एक उसमें घुस गया। एक प्रकार की गर्द में हमारे पाँव धँस गये। कुछ गर्द हवा में उड़ कर हमारे मुँह पर पड़ी और नतीजा यह हुआ कि हम लोग बड़ी देर तक छींकते रहे।

'उसकी वास्कट की दाहिनी जेब में किसी सफेद पतली वस्तु का गट्ठर मिला। वह एक के ऊपर एक पर्त करके बाँधा गया था और काले धब्बे पड़े हुए एक मजबूत तार से बँधा था। मोटाई में वह तीन आदमियों की ऊँचाई के बराबर था। वे कदाचित् उसके पत्र थे। उनमें से प्रत्येक का आधा महाराज की हथेलियों के बराबर था।

'बाईं जेब में एक प्रकार का इंजन था। उसके पीछे की ओर करीब बीस खम्भे थे। यह महाराज के दरबार के सामने की चहार-दीवारी जैसा था। हमारा ख्याल है कि वह आदमी इससे बालों में कंघी करता होगा।

'अपने बीच वाले कपड़े (उसका मतलब मेरी पतलून से था) की बड़ी जेब में, एक आदमी के बराबर लम्बाई का लोहे का एक खोखला तकिया था और वह एक लकड़ी के खम्भे से बँधा था। खम्भे में बाईं ओर लोहे के कई टुकड़े लगे हुए थे। हम समझ नहीं पाए कि यह क्या वस्तु थी। बाईं जेब में भी इसी प्रकार का एक इंजन था।

'दाहिने ओर की छोटी जेब में सफेद और लाल रंग के कुछ चपटे और गोल टुकड़े थे। उगकी नाप भी अलग-अलग थी। सफेद, जो चाँदी के मालूम होते थे, इतने भारी थे कि मैं और मेरा साथी बड़ी मुश्किल से उन्हें उठा सके।

'बाईं जेब में भी दो खम्भे थे। उनका आकार ऊबड़-खाबड़ था। हम लोग खड़े होकर उसके ऊपरी सिरे तक नहीं पहुँच पाते थे। एक तो ढँका हुआ था और एक ही टुकड़े का मालूम होता था पर दूसरे के ऊपरी भाग में कोई सफेद पदार्थ हमारे सिर से दुगने आकार का लगा था। इन दोनों के बीच में लोहे की टुकड़ी लगी थी और हम लोगों ने उस व्यक्ति से इसका इस्तेमाल बतलाने के लिए कहा, क्योंकि हम लोगों को भय था कि यह कहीं कोई विचित्र इंजन न हो। उसने उसको बक्स से निकाल कर बताया कि एक की मदद से तो वह दाढ़ी बनाता था और दूसरे से माँस काट कर खाता था।

'दो और जेब थीं, जिन्हें वह 'फौब, कहता था। वे उसकी तोंद के ऊपर थीं। इनमें हम दाखिल नहीं हो सके। दाहिनी जेब में तो चाँदी की बहुत बड़ी जंजीर लटक रही थी और उसके सिर पर एक आश्चर्यजनक यन्त्र था। वह आधा तो चाँदी का था और आधा किसी पारदर्शक पदार्थ का। देखने में पृथ्वी जैसा गोल था। एक ओर तो कुछ अजीब चिह्न गोलाई में अंकित थे। हमने समझा कि हम उन्हें छूकर देख सकते हैं, पर उस पारदर्शक पदार्थ के कारण हमारा हाथ वहाँ तक नहीं पहुँच सका।

'उस व्यक्ति ने उस यन्त्र को हमारे कानों के पास रखा। उसमें से निरन्तर आवाज हो रही थी। जैसे पानी वाली चक्की चल रही हो। हमारे ख्याल में या तो यह कोई जानवर था या उसका ईश्वर, जिसकी वह पूजा करता है। हम बाद वाली बात को ही ज्यादा ठीक समझते हैं, क्योंकि उसका कहना है कि इसकी सलाह के बिना वह कोई भी काम नहीं करता। उसने इसे एक अत्यन्त आश्चर्यजनक चीज बताया और कहा कि इससे समय का ज्ञान होता है।

'उसने बाँईं जेब से एक थैला निकाला जो देखने में किसी मछुए का जाल मालूम होता था। उसमें पीले रंग के कुछ गोल चिपटे टुकड़े थे। यदि वे वास्तव में सोने के हैं तो अत्यन्त मूल्यवान होंगे।

'इस प्रकार महाराज की आज्ञा से हमने उसकी पूरी तलाशी ली। तलाशी लेते समय हमारी दृष्टि कमर पर पड़ी, जिसमें वह किसी जानवर के चमड़े की बड़ी सी पेटी बाँधे था। उसी में एक तलवार भी लटकी हुई थी, जो करीब पाँच आदमियों की ऊँचाई के बराबर थी। दाहिनी ओर एक थैला था, जो अन्दर से दो हिस्सों में बंटा हुआ था और प्रत्येक में महाराज के तीन सेवक बन्द किये जा सकते हैं।

'इनमें से एक में बहुत से गेंद थे। वे हमारे सिर के बराबर थे और मालूम नहीं किस पदार्थ के बने हुए थे। उनको उठाने में बड़ी ताकत लगानी पड़ती थी। दूसरे भाग में काले रंग के गल्ले का बड़ा सा ढेर था। वह भारी तो नहीं था, क्योंकि अपनी हथेली में हम सोग पचास से ज्यादा उठा सकते थे।

'उस विशालकाय पर्वत सरीखे व्यक्ति की जेब में जो कुछ मिला उसकी यही सूची है। महाराज, आपकी आज्ञा का पालन करने में उसने

किसी भी प्रकार की बाधा नहीं डाली, बल्कि हम लोगों से अत्यन्त सज्जनता से पेश आया। महाराज के शासन के निवासी चाँद के चौथे दिन हस्ताक्षर किये और मुहर लगाई।

क्लेफ्रिन फ्रेलाक
मार्सी फ्रेलाक'

जब यह सूची महाराज के सामने पढ़ी गई तो उन्होंने कई चीजों के बारे में बिस्तार से जानने की इच्छा जाहिर की। उसने पहले मेरी तलवार के बारे में पूछा। मुझे निकालने के पहले ही उसने अपनी सेना के तीन हजार सिपाहियों से मुझे घेर लेने का आदेश दिया। वे सभी अपने धनुष-बाण तान कर खड़े हो गये।

मैंने म्यान से तलवार निकाली। उसकी सारी फौज डर और आश्चर्य से चिल्ला उठी। सूरज चमक रहा था। मेरी तलवार से जो चमक पैदा हुई उससे वे सभी चकाचौंध हो गये। राजा उतने नहीं घबराये जितनी मैंने आशा की थी। उसने मुझे तलवार को म्यान में रख लेने का इशारा किया साथ ही यह भी कि मैं धीरे से उसे अपने से छः फुट की दूरी पर रख दूँ।

दूसरी चीज, जिसको उन्होंने देखने की इच्छा प्रकट की, वह थी, लोहे का खोखला खम्भा, यानी मेरी जेबी पिस्तौल। राजा की आज्ञा से उसे निकाल कर मैंने उसे उसका उपयोग समझाया। बारूद अभी भींगा नहीं था। उसे पिस्तौल में भर कर चलाने से पहले मैंने राजा से कहा कि डरने की जरूरत नहीं है और वे सब अपना मन पक्का कर लें। फिर मैंने पिस्तौल चला दी। उन सबों को पहले से भी ज्यादा आश्चर्य हुआ। सैकड़ों व्यक्ति तो इस प्रकार गिर पड़े जैसे मर गये हों। यहाँ तक कि राजा भी काफी देर तक अचेत रहा।

अपनी दोनों पिस्तौलों को भी मैंने दूरी पर उसी तरह रख दिया जैसे तलवार को रखा था। फिर बारूद और गोली भी रख दी। हाँ, इतना अवश्य समझा दिया था कि उसे आग से दूर रखा जाय, नहीं तो महाराज का महल भी भस्म हो जायेगा। इसके बाद मैंने अपनी घड़ी भी उनके आगे रख दी। उन्होंने अपने यहाँ के सबसे लम्बे व तगड़े दो आदमियों को उसे उठा कर नजदीक लाने को कहा। उसमें से निरन्तर होने वाली

टिक्-टिक् की आवाज को सुन कर वह सभी स्तब्ध रह गये। मिनट बताने वाली सुई की निरन्तर चाल देख कर तो उन्होंने दाँतों तले उंगली दबा ली।

इसके बाद मैंने चाँदी और ताँबे के सिक्के भी दे दिये और अपना थैला भी, जिसमें सोने के नौ सिक्के थे। मेरा चाकू, उस्तरा, चांदी की डिबिया, रूमाल और डायरी, सभी उनके हाथों में जा पड़ी। मेरी तल-वार, पिस्तौल और बारूद तो सरकारी खजाने में जमा कर दी गयी और बाकी चीजें मुझे लौटा दी गईं।

मैं पहले ही बता चुका हूँ कि मेरे एक गुप्त जेब में और कुछ भी था; जो तलाशी से बच गया था। उसमें मेरा चश्मा और कुछ और चीजें भी थीं। राजा के लिए बेमतलब होने के कारण मैंने उनका जिक्र नहीं किया था। मैंने उन चीजों को दिखलाना उचित भी नहीं समझा, फिर यह भी डर था कि यह चीजें खो न जायें।

तीन

मेरे अच्छे व्यवहार का राजा, दरबारियों, सैनिकों और वहाँ की जनता पर इतना अच्छा असर हुआ कि मुझे शीघ्र ही बन्धन-मुक्त होने की आशा हो गयी।

अब वहाँ के निवासियों का डर भी धीरे-धीरे दूर हो गया और वे मेरे समीप आने लगे। बहुधा मैं लेट जाता था और उनमें से चार-छः को अपने सिर पर खेलने-कूदने भी देता था। कभी-कभी तो लड़के-लड़कियाँ मेरे बालों में घुस कर आँख-मिचौनी का खेल खेला करते। उनकी बोल-चाल की भाषा भी मैं काफी सीख गया था। एक दिन राजा ने मुझे देशी नाच-गाना दिखाने की योजना बनाई। रस्सी वाला नाच मुझे सबसे ज्यादा पसन्द आया। वहाँ इस नाच को ऊँचे-ऊँचे पद प्राप्त करने की इच्छा

रखने वाले व्यक्ति ही करते हैं। उन्हें युवावस्था से ही इसकी शिक्षा दी जाती है और अक्सर वे ऊँची जाति के ही होते हैं।

जब कोई ऊँचा ओहदा खाली होता तो कुछ ऐसे व्यक्ति, जिन्हें उस पद को प्राप्त करने की इच्छा होती थी, अर्जियाँ भेजते और प्रार्थना करते कि महाराज अन्य दरबारियों के साथ उनका रस्सी का नाच देखें। उनमें से जो नाचते-नाचते रस्सी में सबसे ऊपर चढ़ जाता था और गिरता नहीं था, उसे ही उस पद पर नियुक्त किया जाता। कभी-कभी तो मंत्रियों तक को अपना कौशल दिखाने की आज्ञा दी जाती थी। इससे महाराज को यह विश्वास हो जाता कि उनके दरबारियों की योग्यता में किसी प्रकार की कमी नहीं आई।

उन उत्सवों में बहुधा आकस्मिक घटनाओं के फलस्वरूप लोगों की मृत्यु तक हो जाती थी।

कुछ विशेष अवसरों पर इसी प्रकार के उत्सव कभी-कभी केवल राजा, रानी और प्रधानमंत्री के लिए ही होते थे। राजा मेज पर छः इंच लम्बे रेशम के तीन धागे रख देता था। एक बादामी, एक पीला और एक सफेद। इन धागों को इनाम कहा जाता था और इन्हें राजा उनको ही देता, जिन्हें उसे कोई ऊँचा पद देना होता अथवा जिनके प्रति विशेष सम्मान प्रकट करना होता था। यह उत्सव महाराज के प्रमुख सरकारी कमरे में होता था। इसमें पदों की इच्छा रखने वालों को पहले से अधिक कड़ी परीक्षा देनी पड़ती थी। राजा अपने हाथ में छड़ियाँ ले लेता था। और इन्हीं छड़ियों को हिलाता था। उन व्यक्तियों को इन्हीं छड़ियों के इर्द-गिर्द नाच-कूद के खेल करने पड़ते थे।

जो व्यक्ति सबसे ज़्यादा फुर्ती से उन छड़ियों को लाँघता, तथा सरक कर निकलता था, उसी को बादामी धागे का पहला इनाम मिलता था। पीला धागा दूसरे और सफेद धागा तीसरा दर्जा पाने वाले को मिलता था। इन धागों को वे कमर में बाँधते थे। दरबार में बहुत कम व्यक्ति ऐसे थे, जिनके पास यह इनामी धागा न हो।

एक दिन मैंने राजा का मनोरंजन किया। मैंने दो फुट ऊँची और साधारण मोटाई की कई बेतों को इकट्ठा करके लाने को कहा। राजा ने अपने जंगल के रखवाले को इन बेतों को लाने का आदेश दिया। दूसरे

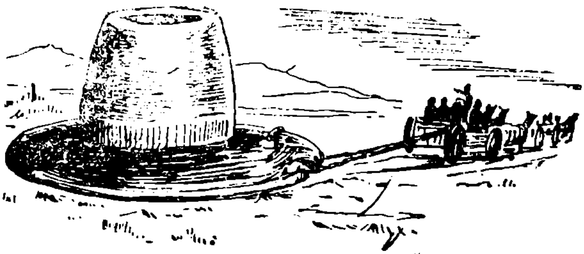
दिन सबेरे ही वह व्यक्ति आठ घोड़े जुती गाड़ी में उन बेतों को लेकर आया।

उनमें से नौ बेतों को मैंने ढाई फुट के वर्गाकार स्थान में गाड़ दिया। चार और बेतें एक दूसरे के समानान्तर जमीन से दो फुट ऊँचे चारों किनारों पर बाँध दिए। अपने रूमाल से उन सौ सीधी गड़ी छड़ियों को मैंने बाँध दिया और इतना कस दिया कि वह ढोल जैसा तन जाए। चारों समानान्तर बेतें रूमाल से लगभग पाँच इंच ऊँची थीं।

अपना काम समाप्त कर मैंने राजा से कहा कि इस मैदान पर चौबीस घुड़सवारों की एक टुकड़ी खेल करने के लिए भेज दें। राजा ने मेरी बात मान ली और घुड़सवारों को उस पर कसरत करने का आदेश दिया। उस पर चढ़ने के बाद वे दो टुकड़ियों में बँट गये और झूठी लड़ाई लड़ने लगे। तीर चलने लगे, तलवारें खिंच गईं, एक दूसरे का पीछा करने लगे और इस प्रकार फौजी कसरतों का अच्छा खासा प्रदर्शन हुआ। समानान्तर बेतों के सहारे के कारण वे जमीन पर नहीं गिर सकते थे। राजा इस खेल को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। फिर कई दिनों वह यही खेल करवाता रहा। एक दिन तो उसने यहाँ तक कहा कि मैं उसे और महारानी को गोद में उठाकर खेल के स्थान के दो फुट की दूरी पर लिए खड़ा रहूँ ताकि वह नजदीक से खेल देख सकें।

यह मेरा सौभाग्य था कि इस खेल में कोई दुर्घटना नहीं हुई। केवल एक दिन एक घोड़ा जो कुछ ज्यादा तेज था, रूमाल के एक छेद में फँस गया। उस पर सवार कप्तान भी गिर पड़ा। पर मैंने जल्दी ही उसकी सहायता की और उस छेद की जगह पर हाथ लगा कर बैठ रहा। खेल पहले की ही तरह बराबर जारी रहा।

बन्धन-मुक्त होने के दो-तीन दिन पहले जब मैं दरबार में ऐसे ही खेलों को संगठित कर रहा था, एक विशेष संदेशवाहक द्वारा राजा के पास खबर आयी कि किनारे पर एक अजीब चीज दिखायी पड़ी है। उसका आकार कुछ अजीब सा था, उसके किनारे निकले हुए थे, और वह इतना बड़ा था जितना महाराज का सोने का कमरा। बीच से वह एक आदमी की ऊँचाई के बराबर ऊँचा उठा हुआ था। वह जीवित नहीं था, क्योंकि जब एक दूसरे के ऊपर चढ़ कर उन्होंने अन्दर झांका तो उसे



खोखला पाया। यह सोच कर कि शायद वह चीज इस पर्वताकार मनुष्य की हो, वे राजा के पास आये। राजा से उस संदेशवाहक ने आज्ञा माँगी कि यदि पाँच घोड़े मिल जायें तो वह चीज घसीट कर यहाँ तक लायी जा सकती है।

मुझे तत्काल ही मालूम हो गया कि वह कौन सी वस्तु है। मुझे याद आया कि जब मैं किनारे पर उतरा था, मेरे सिर पर मेरा हैट नहीं था और मैंने समझा था कि वह समुद्र में गिर गया है। उससे मुझे प्रसन्नता भी हुई।

राजा से मैंने आग्रह किया कि उस चीज को मँगा कर मुझे शीघ्र ही दिला दें। मैंने राजा को उसका उपयोग भी समझा दिया। दूसरे ही दिन गाड़ीवान उसे लेकर आ गये। पर उसकी दशा अच्छी नहीं थी। उन्होंने हैट के किनारों में छेद कर दिये थे और उनमें हुक डाल कर बाँध रखा था। इस प्रकार मेरे हैट को करीब आध मील तक घसीट कर लाया गया था।

इस घटना के दो दिन बाद राजा ने फौजों को तैयार हो जाने का हुक्म दिया, क्योंकि एक नये प्रकार का उत्सव मनाने की योजना बन रही थी।

उन्होंने इच्छा प्रकट की कि मैं टांगें फैला कर खड़ा हो जाऊँ और फौज के अधिनायक को आज्ञा दी कि मेरे नीचे से फौज लेकर गुजरें। पैदल चौबीस की और घुड़सवार सोलह की पंक्तियों में नगाड़े बजाते और झंडे लिए हुए निकलें। इस फौज में तीन हजार पैदल और एक हजार घुड़सवार थे।

मैंने बन्धन-मुक्त होने के लिए न जाने कितने आवेदन-पत्र भेजे थे,

और अन्त में राजा ने इस प्रश्न को पहले मन्त्रि-मंडल में फिर दरबार में रखा। स्कीरिस बोलगोलम ने, जो मुझसे अकारण ही रुष्ट था, इस प्रस्ताव का विरोध किया। पर उसके विरोध के बावजूद मेरी रिहाई का प्रस्ताव पास हो गया और राजा ने भी अपनी स्वीकृति दे दी।

वह मंत्री जल-सेना का अध्यक्ष था और राजा का भी अत्यन्त विश्वासपात्र व्यक्ति था। अपने काम में भी वह पूर्ण रूप से दक्ष था। अन्त में वह भी मान गया। हाँ, उसने मेरी रिहाई की कुछ शर्तें रखीं। इन शर्तों को लिखने की जिम्मेदारी भी उसने स्वयं ली। दो सहायक मंत्रियों के साथ वह स्वयं ही उन शर्तों को लेकर मेरे पास आया। उन्हें पढ़ने के बाद मुझसे कहा गया कि मैं प्रण करूँ कि उन शर्तों को पूरा करूँगा। उन्हीं के रीति-रिवाजों के अनुसार मैंने प्रतिज्ञा की जो इस प्रकार थी कि दाहिने पैर को बाएँ हाथ में लेकर और दाहिने हाथ के बीच की उँगली को माथे पर रख कर, अँगूठे को दाहिने कान के पास रख कर प्रतिज्ञा दुहराई जाये।

शर्तों का पूरा अनुवाद यों है—

लिलीपुट के महापराक्रमी महाराज गोलबैस्टो मोमारेन एवालमे गुरडीलो शोफिन मुल्ली-उल्ली ग्यू, जो समस्त संसार के लिए भय और



प्रकाश हैं, जिनका राज्य पाँच हजार ष्लुस्ट्रग (करीब बारह मील)—पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक फैला हुआ है, जो राजाओं के राजा हैं, जिनके पैर पृथ्वी के केन्द्र तक पहुँचते हैं और जिनका सिर आसमान से टकराता है, जिनके कदमों पर पृथ्वी भर के राजे सिर झुकाते हैं, जो वसन्त जैसे हँसमुख हैं, गर्मी जैसे आनन्द-प्रद हैं, हेमन्त जैसे सुखदायी हैं और जाड़े जैसे भयानक हैं, प्रस्ताव करते हैं कि वह पर्वताकार मनुष्य, जो हमारे राज्य में आया, निम्नलिखित प्रतिज्ञाएँ करे—

१—वह पर्वताकार मनुष्य हमारे राज्य को हमारी आज्ञा बिना नहीं छोड़ेगा।

२—हमारी विशेष आज्ञा के बिना यह मनुष्य राजधानी में पैर नहीं रखेगा। उसके आने के दो घण्टे पहले नगरवासियों को घर के भीतर रहने की चेतावनी दी जायेगी।

३—यह मनुष्य हमारे राज्य की मुख्य सड़कों पर ही चलेगा, बाग में या खेतों में नहीं चलेगा, न आराम करेगा।

४—सड़कों पर चलते समय वह ध्यान रखेगा कि उसके पैरों तले कोई नगरवासी, उनकी गाड़ी या घोड़े न दब जायें। वह नगरवासियों की इच्छा के बिना उनमें से किसी को उठाएगा भी नहीं।

५—किसी विशेष संवाद को जल्दी भेजने की जरूरत पड़ने पर इस मनुष्य से काम लिया जाएगा। वह हरकारे को उठा कर अपनी जेब में रख लेगा और नियत स्थान पर पहुँचा देगा। जरूरत पड़ने पर वह वापस भी लाएगा।

६—ब्लेफुस्कू द्वीप में रहने वाले हमारे शत्रुओं के खिलाफ लड़ने में वह हमारी मदद करेगा और उनकी जल-सेना को शीघ्र-से-शीघ्र नष्ट करने का प्रयत्न करेगा।

७—यह मनुष्य अवकाश के समय हमारे कारीगरों को भारी पत्थरों को उठाने, मुख्य बागों की चहारदीवारी और राजभवन बनाने में हमारी सहायता करेगा।

८—यह मनुष्य दो दिन के भीतर हमारे राज्य का पैदल चक्कर लगा कर उसकी नाप मालूम करेगा।

इन शर्तों को पूरी ईमानदारी से पूरा करने का वादा करने पर यह पर्वताकार मनुष्य हमारे १७२८ व्यक्तियों की खुराक प्रतिदिन अपने लिए पायेगा और दूसरे सम्मान भी प्राप्त कर सकेगा। हमारे शासनकाल के इक्यानवें चाँद के बारहवें दिन बेलफेबोरक में बने राजमहल में यह शर्तें लिखी गयीं।

मैंने इन शर्तों को पढ़ कर, उन्हें पूरा करने की सहर्ष स्वीकृति दे दी। उनमें से कुछ शर्तें तो वास्तव में मानने योग्य नहीं थीं क्योंकि उनसे मेरे सम्मान को धक्का पहुँचता था, पर यह सब स्कीरिस बोलगोलम की बदमाशी थी। फिर मुझे बन्धन-मुक्त कर दिया गया। स्वयं राजा इस समारोह में उपस्थित था। राजा के सामने उसके पैरों पर गिर कर मैंने भी राजा के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित किया। उसने मुझे उठा कर खड़े होने का आदेश दिया और फिर मेरे सम्मान में कई बातें कहने के बाद आशा प्रकट की कि मैं उस राज्य के लिए अत्यन्त लाभदायक साबित होऊँगा और जो सम्मान मुझे मिला है, उसके योग्य साबित होऊँगा।

मेरे ऊपर लागू शर्तों में से एक शर्त यह भी थी कि मुझे १७२८ नगरवासियों के बराबर खाना मिलेगा। कुछ दिनों बाद जब मैंने पता लगाया कि यह मात्रा कैसे निश्चित हुई तो पता लगा कि राजा के एक विद्वान् गणितज्ञ ने मेरे शरीर को नाप कर मेरे पिंड को उसने लिलीपुट के आदमी से १२×१२×१२ गुणा बताया—अर्थात् १२×१२=१४४×१२= १७२८। इस अनुपात से मेरे भोजन की मात्रा तय की गई। इसी एक बात से लिलीपुट-निवासियों की बुद्धि का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

चार

बन्धन-मुक्त होने के बाद पहली आज्ञा जो मैंने माँगी, वह थी वहाँ की राजधानी मिलडेण्डो देखने की। राजा ने मुझे आज्ञा दे दी। लेकिन इस चेतावनी के साथ कि किसी को भी किसी प्रकार की चोट नहीं

पहुँचाऊँगा। मेरे शहर में जाने की बात का डुग्गी पिटवा-कर जनता में एलान कर दिया गया था। शहर के चारों ओर ढाई फुट ऊँची और ग्यारह इंच चौड़ी दीवार थी और इस प्रकार एक घोड़ा-गाड़ी बड़ी आसानी से उस पर चारों ओर घूम सकती थी। दस-दस फुट की दूरी पर उसमें मजबूत मीनारें बनी थीं।

शहर के पश्चिमी फाटक से दाखिल होकर मैं संभल-संभल कर चलने लगा, ताकि कोई कहीं मेरे पैरों तले न आ जाये। राजा का सख्त आदेश था कि लोग अपने-अपने घरों के भीतर ही रहें, नहीं तो चोट आदि लगने की जिम्मेदारी उनकी अपनी होगी। दोनों ओर छतों और छज्जों पर मुझे देखने वालों की भीड़ इतनी अधिक थी कि मैंने समझा कि दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश शायद यही है।

शहर वर्गाकार था। उसकी हर दीवार पाँच सौ फुट लम्बी थी। शहर में पाँच लाख आदमी रह सकते थे। मकान तीन से पाँच मंजिल तक के थे और दूकानें और बाजार भी अच्छे थे।

राजा का महल शहर के बीचोबीच में था। दूसरी इमारतों से बीस फुट की दूरी पर यह दो फुट ऊँची दीवालों से घिरा था। बाहर के हिस्से में चालीस वर्ग फुट का एक आँगन था, और दो आँगन अंदर भी थे। सबसे अन्दर राजा का अन्त:पुर था, जिसे देखने की मेरी बड़ी इच्छा थी, लेकिन अन्दर जाना बड़ा मुश्किल था, क्योंकि दरवाजे केवल अठारह इंच ऊँचे और सात इंच चौड़े थे।

राजा की भी यही इच्छा थी कि मैं उसके महल की शान-शौकत देखूँ। लेकिन मैं तीन दिन तक यह नहीं कर सका। जब मैंने राजा के बाग के सबसे बड़े पेड़ अपने चाकू से काट डाले और इन सब को काट कर तीन फुट ऊँचे दो स्टूल बनाये तब कहीं राजमहल देखने की मेरी योजना पूरी हो सकी।

जनता को जब मेरे आने को चेतावनी मिल गई; तब मैं शहर में होकर महल की ओर चला। जब मैं बाहर वाले आँगन में पहुँचा तो एक स्टूल पर खड़ा हो गया, दूसरे को हाथ से उठा कर अन्दर वाले एक आँगन में रख दिया। यह आँगन आठ फुट चौड़ा था।

तब मैं एक स्टूल से दूसरे स्टूल पर आकर आसानी से महल के अन्दर

आ गया। इसी प्रकार मैं लाँघता हुआ घर के भीतर वाले आँगन में भी पहुँच गया और फिर लेट कर बीच वाली मंजिल में, जहाँ तक मेरी दृष्टि जाती थी, अन्दर झाँका। अन्दर के कमरे मुझे सभी प्रकार की चीजों से लैस व सजे दिखाई पड़े।

महल के अन्दर मुझे रानी, राजकुमारियाँ और उनकी नौकरानियाँ दिखाई पड़ीं। रानी मुझ पर विशेष प्रसन्न दिखाई पड़ती थीं, क्योंकि खिड़की से हाथ बाहर निकाल कर उन्होंने उसे चूमने के लिए मेरी ओर बढ़ाया।

एक दिन प्रातःकाल—मेरे स्वतन्त्र होने के लगभग पन्द्रह दिन बाद—गुप्तचर विभाग का प्रथम सचिव रेलडेसर मेरे घर आया और उसने मुझसे बातें करने को एक घंटे का समय माँगा। उसके ऊँचे पद और अपने प्रति किये गये कामों का ख्याल कर उसको मैंने स्वीकृति दे दी। फिर मैं लेट गया ताकि वह मेरे कान के पास आकर आसानी से बोल सके। लेकिन उसने अपने को पकड़ कर उठाने के लिए ही आग्रह किया और मैंने भी उसकी बात मान ली।

पहले तो उसने मुझे मेरे बन्धन-मुक्त होने के लिए बधाइयाँ दीं और बताया कि राज दरबार में उसके प्रस्ताव व पक्ष में राय होने के कारण इतनी जल्दी मुझे स्वतन्त्रता मिल सकी।

फिर उसने मुझे राज्य के सम्बन्ध में बहुत सी जानकारी दी। उसने बताया कि राज्य में दो प्रकार की समस्यायें हैं, एक तो अन्दर के आपसी झगड़ों से छुटकारा पाना और दूसरा बाहरी शत्रु के आक्रमण से बचना।

उसने बताया, 'लगभग सत्तर चांद के सभय बीत गये, जब से इस राज्य में दो दल आपस में झगड़ा कर रहे हैं—एक टामेक्सन है और दूसरा स्लमेक्सन है। दोनों ऊँची और नीची एड़ी के जूते पहन कर अपने को एक दूसरे से अलग जाहिर करते हैं। इन दोनों दलों में झगड़ा इतना अधिक बढ़ गया है कि न तो ये एक साथ खाते हैं, न पीते हैं, न बातें करते हैं।

'इन आपसी झगड़ों के कारण ही हमारे राज्य पर ब्लेफुस्कू राज्य वालों का आक्रमण होने वाला है। वह राजा भी हमारे महाराज जैसा ही बलवान है। जैसा हमने सुना है और आप भी कहते हैं कि इस पृथ्वी पर आप जैसे लोगों के भी राज्य हैं, पर हमारे विद्वानों को इस बात पर

शंका है और उनका कहना है कि आप चन्द्रलोक से आये हैं, क्योंकि उनका ख्याल है कि आप जैसे सौ आदमी बहुत थोड़ी देर में ही हमारे राज्य के सभी खेतों व बगीचों को नष्ट कर सकते हैं। हमारा इतिहास भी जो छः हजार चाँद के समय का इतिहास है, उसमें किसी अन्य राज्य का जिक्र नहीं है। ये दोनों शक्तिशाली राज्य पिछले तिरसठ चाँदों से भयानक युद्ध की आग में जल रहे हैं। झगड़े का कारण बहुत छोटा है। सब जानते हैं कि खाने के पहले अंडे फोड़ने का पुराना तरीका यह है कि उसे बड़ी ओर से फोड़ा जाय, पर एक बार जब हमारे महाराजा के बाबा अपने बचपन में पुराने ढंग से ही अंडे तोड़ रहे थे, उनकी उँगली में चोट लग गयी। तब से उनके पिता ने यह आज्ञा निकाल दी कि कोई व्यक्ति अंडे को इस ओर से न तोड़े।

'जनता को यह राजाज्ञा पसन्द नहीं आयी और लोगों का कहना है कि केवल इसी प्रश्न पर छः विद्रोह हो चुके हैं। इन विद्रोहों में एक राजा को भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ा और एक को अपने राज्य से। इन आपसी झगड़ों के लिए ब्लेफुस्कू के राजा हमेशा यहाँ की जनता को भड़काते रहते हैं। जब विद्रोह का दमन किया जाता है तो विद्रोही बहुधा उसी राज्य में भाग कर शरण लेते हैं। हिसाब लगाने से पता कि इस प्रकार से अंडे तोड़ने का विरोध करने के अपराध में लगभग ग्यारह हजार आदमी मारे गये हैं।

'इसी युद्ध के सम्बन्ध में बहुत सी पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं पर बिग-एंडियन की पुस्तक जब्त कर ली गई थी और राज्य की नौकरी मिलने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। इन झगड़ों में ब्लेफुस्कू के राजदूतों ने कितनी ही हम लोगों को धर्म-भंग करने का दोषी ठहराया। उनका कहना है कि हम लोगों ने पैगम्बर लुस्टाग की आज्ञा को भंग किया है, जो ब्लंडेकरल के चौवालीसवें अध्याय में लिखी हुई है।

'यह केवल शब्दों का तोड़-मरोड़ है, क्योंकि उस पवित्र पुस्तक में लिखा है—सब सच्चे आदमी जिधर से आसमान हो, उसी तरफ से अंडे तोड़ते हैं और सुविधाजनक किनारा कौन है, मेरी राय में यह लोगों के ऊपर छोड़ देना चाहिए। जिसे जिस तरफ से सुविधा हो वह उसी तरफ से तोड़े। या फिर प्रधान न्यायाधीश के ऊपर ही इसका निर्णय छोड़ देना चाहिए।

'बिग एंडियन विद्रोहियों को ब्लेफुस्कू राज्य में इतना आदर व सम्मान प्राप्त हुआ है कि उनके साथी यहाँ इतना विद्रोह उभारते रहते हैं और पिछले तिरसठ चाँदों से दोनों राज्यों में भयंकर युद्ध छिड़ा हुआ है। इस युद्ध में हम लोगों को चालीस बड़े जहाजों, बहुत से छोटे जहाजों और तीस हजार बहादुर जल-सैनिकों से हाथ धोना पड़ा है। दुश्मन की हानि भी हम लोगों से ज्यादा हुई है।

'लेकिन अब उन लोगों ने बहुत बड़ी जल-सेना का निर्गाण कर लिया है और अब हम लोगों पर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं। महाराज ने आपकी योजना व वीरता को ध्यान में रख कर ही यह सब आपको बतलाने के लिए मुझे भेजा है।'

मैंने सचिव से कहा कि वह राजा से कह दे कि मेरी सेवाएँ प्रस्तुत हैं, लेकिन यह अच्छा नहीं है कि कोई विदेशी दो राष्ट्रों के आपसी मामलों में दखल दे, लेकिन फिर भी मैं आपके राजा के राष्ट्र और शरीर की रक्षा करने के लिए तैयार हूँ।

पाँच

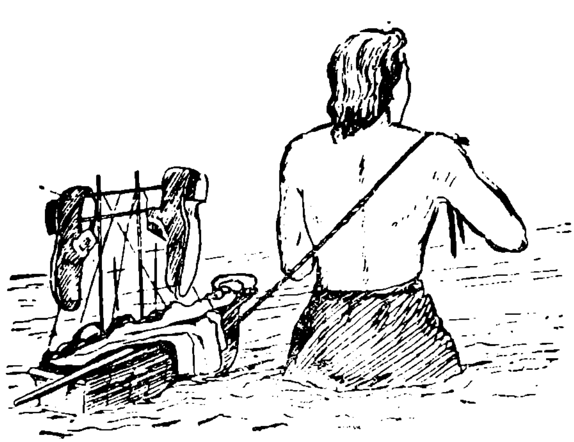
ब्लेफुस्कू का राज्य लिलीपुट के उत्तर-पूर्व में एक द्वीप में स्थित है। दोनों राज्यों को आठ सौ गज चौड़ा समुद्र अलग करता है। मैंने इसे देखा नहीं और आक्रमण की बात सुन कर मैंने उस ओर जाना भी नहीं चाहा कि दुश्मन मुझे देख लें।

मैंने राजा से दुश्मन की पूरी जल-सेना छीन लेने की एक योजना बताई। उनकी जल-सेना समुद्र में लंगर डाले हमला करने के लिए तैयार खड़ी थी। मैंने कई अनुभवी मल्लाहों से उस समुद्र की गहराई का पता लगवाया। उनसे पता लगा कि बीच में तूफानों के समय उसकी गहराई सत्तर ग्लमग्लफ यानी करीब छः फिट गहरा है। बाकी जगह यह करीब पचास ग्लमग्लफ गहरा है।

ब्लेफुस्की के सामने मैं उत्तर-पूर्व के किनारे की ओर टहलता हुआ गया। एक पहाड़ की बगल में लेटकर अपनी दूरबीन की सहायता से मैंने दुश्मन की नौ-सेना को देखा। उसमें करीब पचास जहाजी थे और बहुत से जहाज थे। घर लौट कर मैंने मजबूत तार और लोहे के खम्भे बनवाने की आज्ञा दी।

तार को पतली रस्सी जैसा मोटा बना और लोहे के खम्भे सुइयों जैसे बने तार को तीन बार लपेट कर उसे और मजबूत बनाने के बाद उसके एक सिरे पर मैंने उन खम्भों को बाँध दिया। इस प्रकार उस तार में करीब पचीस खम्भों को पिरो कर उन्हें हुक के आकार का बना कर मैं फिर उत्तर-पूर्व के किनारे की ओर गया। अपने कपड़े, जूते और मोजे उतार कर मैं पानी में उतर गया। यह समय तूफान आने के आध घण्टे पहले का था। मैं पानी में जितनी तेजी से हो सकता था, चला और बीच में करीब तीस गज तैरा भी।

आध घण्टे से कम में ही मैं उनकी जल-सेना के निकट पहुँच गया। मुझे देख कर शत्रु इतने डर गये कि जहाजों से निकल-निकल कर भागने लगे। संख्या में वे कम-से-कम तीस हजार रह गये होंगे। उनके जहाजों के अगले हिस्से में मैंने एक-एक हुक लगा कर उन्हें रस्सी में फँसा लिया और फिर सब रस्सियों को एक में बाँध लिया। जब मैं अपने इस काम में व्यस्त था, शत्रु-दल ने मेरे ऊपर बाण-वर्षा शुरू कर दी और उनके तीर



मेरी बाँह, छाती और मुँह पर आ-आकर लगने लगे। सबसे ज्यादा खतरा मेरी आँखों को था। यदि मैंने फौरन चश्मा निकाल कर न पहना होता तो उस दिन मेरी आँखें शायद ही बच पातीं। इस तरह दुश्मन के तीरों से बचते हुए मैं अपने काम में लगा रहा। फिर सभी जहाजों को बाँध कर मैं रस्सी से खींचने लगा। लेकिन एक भी जहाज टस-से-मस नहीं हुआ, क्योंकि वे सब बड़ी मजबूती से बंधे हुए थे। यह देखकर मैंने अपनी जेब से चाकू निकाल कर जहाजों के लंगर काट दिए और उन पचासों जहाजों को बँधी हुई रस्सी से खींचते हुए लिलीपुट की ओर चल दिया।

ब्लेफुस्कू-निवासियों को इस घटना का अनुमान तक न था और वे स्तब्ध रह गये। उन्होंने लंगर काटते समय यह समझा था कि मैं जहाजों को यों ही छोड़ दूँगा, पर जब उन्होंने अपने पचासों जहाजों को मेरे पीछे लिलीपुट की ओर जाते देखा तो चीखने-चिल्लाने और हाय-तोबा मचाने लगे।

जब मैं खतरे से बाहर हो गया तो रुक कर हाथ और चेहरे पर चुभे पिन जैसे तीरों को निकालने लगा। तूफान के खत्म होने यानी करीब एक घंटे तक मैं रुका रहा। और तब लिलीपुट के शाही बन्दरगाह पर आकर रुका।

राजा और उसके दरबारी किनारे पर खड़े हो मेरे इस काम को देख रहे थे। उन्होंने जहाजों को अर्ध-वृत्ताकार रूप में आते तो देखा पर जान न पाये कि उन्हें कौन सी ताकत इधर खींचे लिए आ रही है क्योंकि मैं तो गले तक पानी में डूबा हुआ था। जब मैं समुद्र के बीच तक आ गया तो उन लोगों की चिन्ता और बढ़ गई क्योंकि पानी और गहरा हो गया था। राजा ने तो यही समझा कि मैं डूब गया, और शत्रु की सेना जहाजों पर मेरा पीछा करती आ रही थी, लेकिन जल्दी ही उसका डर खत्म हो गया, क्योंकि आगे समुद्र छिछला हो गया था। थोड़ी ही देर में मैं उनके इतने पास आ गया कि उनकी बातें सुन सकता था और इन जहाजों को पकड़े हुए एक हाथ उठा कर बोला—'लिलीपुट के महाराज : जिन्दाबाद।

राजा ने मेरा शानदार स्वागत किया और वहीं पर राज्य की सबसे ऊँची पदवी से मुझे सम्मानित किया।

राजा ने मुझसे आग्रह किया कि समय पाकर मैं शत्रु के बाकी जहाज भी घसीट लाऊँ। मेरे कारण राजा की इच्छाएँ इतनी बलवती हो गईं कि वह ब्लेफुस्कू के राज्य को मिट्टी में मिला देने की सोचने लगा। वह सोचने लगा कि वह दिन अब जल्दी ही आने वाला है जब बिग एंडियन से वह अपने ही यहाँ के ढंग से अंडे फुड़वायेगा और इस प्रकार उस दुनिया का चक्रवर्ती राजा बन जायेगा। लेकिन मैंने विरोध किया और कहा कि मैं व्यर्थ ही किसी स्वतन्त्र राष्ट्र को पराधीन बनाने के काम में भाग नहीं ले सकता।

मेरे विचार राजा की योजना के इतने खिलाफ थे कि उसे मुझ पर इतना क्रोध आया जैसे वह मुझे कभी भी माफ नहीं करेगा। इस बात को उसने बड़ी चतुराई से सभी दरबारियों के सामने रखा। पर बहुत से लोग चुप्पी साधे रहे, जिससे साफ पता लगता था कि वे राजा से सहमत नहीं हैं। हाँ, जो मेरे शत्रु थे वे अपने क्रोध को नहीं छिपा सके। अब दरबार में ही दो गुटों की दलबन्दी हो गयी। राजा और उसके मंत्री मुझसे नाराज हो गये थे और कुछ अन्य लोग मेरे पक्ष में थे। मुझे लेकर काफी गरमा-गरमी रही। और दो ही महीने में ऐसी हालत हो गयी कि मेरी हत्या के षड्यन्त्र रचे जाने लगे।

इस घटना के तीन सप्ताह बाद ब्लेफुस्कू दरबार से एक राजदूत आया। वह शान्तिपूर्वक संधि करना चाहता था। अतः लिलीपुट के राजा के लिए बहुत लाभदायक शर्तों पर संधि हो गई। जब संधि-पत्र पर हस्ताक्षर हो गये तब ब्लेफुस्कू के राजा को बतलाया गया कि मैं उसका कितना बड़ा हितैषी था। यह सुनकर एक दिन राजदूत महोदय स्वयं मुझसे मिलने आये। अत्यन्त कृतज्ञता प्रकट करने के बाद मुझे अपने राज्य में आने की दावत दी।

जब मैं राजा से दूसरी बार मिला तो मैंने उससे ब्लेफुस्कू जाने की इजाजत माँगी। राजा ने आज्ञा तो दे दी पर मैं समझ गया कि वह नाराज है। उसकी नाराजगी का कारण तो मेरी समझ में नहीं आया लेकिन बाद में पता लगा कि मेरे विरोधी दरबारियों ने ही राजा के कान भर दिये थे। अब मैं भी अपने विरोधी दरबारियों को शत्रुता की दृष्टि से देखने लगा था।

लेकिन जल्दी ही मुझे राजा की विशेष सेवा करने का अवसर मिल गया। एक रात को सैकड़ों आदमियों की चीख-पुकार सुन कर मेरी नींद खुल गई। बरग्लम शब्द मुझे बार-बार सुनाई पड़ता था। कई लोगों ने मुझसे जल्दी से राजमहल चलने के लिए कहा। राजा के महल में एक रानी की बेवकूफी के कारण आग लग गई थी। एक उपन्यास पढ़ते-पढ़ते बत्ती बुझाए बिना ही वह सो गयी थी।

मैं पलक मारते ही उठ खड़ा हुआ और सबों को रास्ते से हट जाने को कहा। चाँदनी रात थी। मैं आसानी से राजमहल की ओर बढ़ चला। रास्ते में मेरे कारण कोई दुर्घटना नहीं हुई। वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि लोग सीढ़ियाँ लगा-लगा कर बाल्टियों से आग बुझाने का प्रयत्न कर रहे हैं। हाँ, पानी कुछ ज्यादा दूरी पर था और उनकी बाल्टियाँ बहुत छोटी थीं। फिर भी सभी व्यक्ति जल्दी-जल्दी पानी ला-लाकर मुझे दे रहे थे। आग इतनी तेज थी कि इन प्रयत्नों से कोई लाभ नहीं हो रहा था। सारा मामला बड़ा टेढ़ा दिखाई दे रहा था। यदि मैंने एक नई तरकीब काम में न लाई होती तो सारा गुड़ गोबर हो जाता, और पूरा राजमहल जल कर राख हो गया होता। यह मेरी तरकीब थी, अपने हैट से बाल्टी का काम लेना। बाग की एक झील से हैट में पानी भर-भर मैंने आग बुझाना शुरू किया। आग जल्दी ही बुझ गई। लेकिन मेरे पानी डालने से राज-महल में इतना पानी भर गया कि रानी और बच्चे लगभग डूबने लगे। खिड़की में हाथ डाल कर उन्हें जिन्दा ही निकालने में मुझे कितनी दिक्कत हुई, वह मैं ही जानता हूँ। यह घटना अच्छी तो नहीं थी, पर आग जल्दी ही बुझ गयी और सदियों में बना वह नगर नष्ट होने से बच गया।

जब पौ फटने लगी तो मैं घर लौट आया। राजा से धन्यवाद के शब्द सुनने को मैं रुका नहीं, क्योंकि यह तो मैं जानता था कि मैंने अमूल्य सेवा की है, लेकिन महल में पानी भर जाने से राजा का नाराज होना भी स्वाभाविक ही था। उस देश के नियमों के अनुसार रानी और राज-कुमारियों को छूना सबसे बड़ा अपराध था। लेकिन राजा का एक संदेश पाकर मुझे थोड़ी राहत मिली। उसने कहलाया था कि वह न्यायाधीश से मेरे अपराध को क्षमा करने का आग्रह करेगा। मुझे यह भी पता चल गया था कि रानी भी नाराज थी।

छः

जैसे उस देश के निवासियों की ऊँचाई छः इंच से अधिक नहीं थी, उसी प्रकार वहाँ के हर तरह के जानवर भी उसी अनुपात से छोटे-छोटे थे। पेड़ आदि भी कद में वैसे ही बौने थे। उदाहरण के लिए, सबसे ऊँचे घोड़े और बैल चार और पाँच इंच के बीच थे, भेड़ें करीब डेढ़ इंच की, मुर्गियाँ हमारे यहाँ की गौरैया जैसी। और बहुत सी छोटी चीजें तो मेरी आँखों से दिखाई पड़ जाती थीं। मैंने एक बावर्ची को बत्तख पकड़ते देखा और वह हमारे यहाँ की मक्खियों से बड़ी नहीं रही होगी। एक लड़की जो कपड़े सिल रही थी, उसकी सुई तो मुझे दिखाई नहीं देती थी। उनके सबसे ऊँचे पेड़ सात-आठ फुट के होते थे। उनके चोटी तो मैं हाथ उठा कर पकड़ सकता था। अन्य पेड़ और भी छोटे थे।

ये अपने मुर्दों का सिर नीचे करके सीधे गाड़ते थे, क्योंकि उनका ख्याल था कि ग्यारह हजार चाँदों के बाद प्रलय होगी, दुनिया उलट जायेगी और उस समय वे सभी गड़े मुर्दे सीधे होकर उठ खड़े होंगे। इस प्रकार इस राज्य की रीति-रिवाजें खूब अजीब थीं।

राजा के विरुद्ध किये गये हर प्रकार के अपराध के लिए कठोर दंड मिलता था, लेकिन यदि न्यायालय में आते ही अपराधी अपनी सफाई देकर अपने को निर्दोष साबित कर देता, तो दोष लगाने वाले को फाँसी दे दी जाती थी और उसकी समस्त सम्पत्ति जब्त करके उस व्यक्ति को मुआवजा भी दिया जाता था। यदि वह धन पर्याप्त नहीं होता था तो उसकी पूर्ति राज-दरबार से होती थी। राजा उस व्यक्ति को सम्मानित भी करता था और उसके निर्दोष होने का प्रचार भी कर दिया जाता था।

ये लोग धोखा देने को चोरी से भी अधिक बड़ा अपराध मानते थे और इसकी सजा भी साधारणतया मौत की होती थी। उन लोगों का कहना था कि चोरी से तो रक्षा हो सकती है पर धोखेबाजी से रक्षा पाने का कोई तरीका नहीं है।

हम लोगों के यहाँ पुरस्कार और सजाएँ देना सरकार के दो मुख्य

काम होते हैं, लेकिन इस कहावत को व्यवहार में लाते हुए लिलीपुट के अलावा मैंने और कहीं नहीं देखा। कोई भी व्यक्ति, जो यह प्रमाणित कर दे कि तिहत्तर महीने तक उसने राज्य के सभी नियमों को ठीक से माना है, तो उसे राज्य की ओर से सम्मान दिया जाता था। यह सम्मान धन के रूप में दिया जाता, जो उसी काम के लिए इकट्ठा भी किया जाता था। उसे 'स्निलपाल' की उपाधि भी मिलती थी, जो खानदानी होती थी। यही कारण था कि न्यायालय में रखी न्याय की मूर्ति के छः आँखें थीं। दो आगे, दो पीछे और एक-एक बाकी दोनों ओर। मूर्ति के दाहिने हाथ में सोने का खुला थैला था और बाएँ हाथ में एक खुली तलवार, जिससे प्रगट होता था कि वह पुरस्कार देने के लिए दंड से कहीं अधिक आतुर है।

नौकरियों के लिए लोगों को चुनते समय वे योग्यता की अपेक्षा नैतिकता को ज्यादा महत्व देते थे। उनके विचार में अयोग्यता के कारण यदि कोई काम खराब भी हो जाए तो उससे इतना ज्यादा नुकसान नहीं होगा, जितना उस पद के किसी बेईमान व्यक्ति के हाथों में पड़ जाने के कारण होगा। बेईमान और अनैतिक व्यक्ति तो उस पद पर पहुँच कर बराबर बेईमानी ही करता रहेगा, जबकि अयोग्य व्यक्ति एक या दो बार गलती करने के बाद काम को ठीक से करने लग जाएगा।

इसी प्रकार ईश्वर में विश्वास न करने वाले व्यक्ति को भी सरकारी नौकरी नहीं मिल सकती, क्योंकि राजा स्वयं अपने को ईश्वर का प्रतिनिधि समझता है। अतः राजा के लिए इससे बड़ी भद्दी बात और क्या होगी कि वह नास्तिकों को शरण दे।

माता-पिता की अपने बच्चों के प्रति क्या जिम्मेदारी है, इसका भी उनका विचार हम लोगों से भिन्न था। उनके ख्याल से माता-पिता पर बच्चों की शिक्षा के लिए तनिक भी विश्वास नहीं करना चाहिए। अतः उनके राज्य के हर शहर में शिशु-पालन-गृह थे, जहाँ माता-पिता को अपने बच्चों को अनिवार्य रूप से भेजना पड़ता।

धनी-मानी व्यक्तियों, दरबारियों और अफसरों के बच्चों के लिए बने शिशु-पालन-गृहों में योग्य और गम्भीर अध्यापक रखे जाते। बच्चों का कपड़ा और खाना साधारण और सादा होता। उनको प्रतिष्ठा, न्याय,

हिम्मत, सहनशीलता, दया, धर्म और देश-प्रेम के सिद्धान्तों से परिचित कराया जाता। सोने और खाने के समय को छोड़ कर बाकी समय में बच्चों को सदा व्यस्त रखा जाता। दो घंटे उन्हें मनोरंजन के लिए मिलते, जिसमें वे कसरत और खेल-कूद वगैरह करते। माता-पिता को साल में दो बार अपने बच्चों से मिलने की आज्ञा मिलती। उस समय न तो वे कोई उपहार दे सकते थे, न कोई प्यार भरी बातें कर सकते थे। आते और जाते समय वे उन्हें चूम सकते थे। बच्चों की शिक्षा और मनोरंजन का खर्च उनके परिवार वालों को देना पड़ता था और न देने पर राजा के अफसर जबरदस्ती वसूल करते थे।

साधारण नागरिक, जैसे व्यापारी, कारीगर आदि के बच्चों के लिए बने शिशु-पालन-गृहों का संचालन भी इसी प्रकार होता। व्यापार में दिलचस्पी रखने वाले बच्चे ग्यारह वर्ष की अवस्था में शिशु-पालन-गृह छोड़ देते और बाकी पन्द्रह वर्ष की उम्र में।

लड़कियों के शिशु-पालन-गृहों में योग्य लड़कियों को लड़कों की ही जैसी शिक्षा दी जाती थी। सभी लड़कियाँ लड़कों के ही समान कायरता और मूर्खता से घृणा करती थीं, गहने नहीं पहनती थीं और सादी वेश-भूषा धारण करती थीं। लड़के-लड़कियों के पाठ्य-क्रम में कोई विशेष अन्तर नहीं था, सिवा इसके कि लड़कियों का व्यायाम लड़कों से भिन्न होता। फिर उन्हें घर-गृहस्थी के कामों में भी दक्ष किया जाता। जब लड़कियाँ शरीर की उम्र की यानी ग्यारह-बारह की हो जातीं तो उनके माता-पिता उन्हें घर ले जाते। उस समय वे अध्यापकों के प्रति कृतज्ञता दिखलाते और लड़कियाँ भी स्कूल छोड़ते समय रोतीं।

साधारण लड़कियों के शिशु-पालन-गृहों में उनके योग्य ही शिक्षा दी जाती थी। जो नौकरियों की खोज में होतीं, वे सात वर्ष की आयु में ही शिशु-पालन-गृह छोड़ देतीं और बाकी लड़कियाँ ग्यारह वर्ष की आयु तक वहाँ रहतीं।

किसान और मजदूर अपने बच्चों को घर पर ही रखते, क्योंकि उनका काम केवल खेती और मजदूरी करना होता। उनकी शिक्षा का कोई विशेष महत्व ही नहीं होता। बुड्ढे और बीमारों को अस्पतालों में रहना पड़ता, क्योंकि इस राज्य में भीख माँगने का कोई रिवाज नहीं था।

हाँ, अब मैं उस राज्य में अपने रहने के नौ महीनों और तेरह दिनों के सम्बन्ध में कुछ और वर्णन करूँगा ।

शाही बाग के सबसे ऊँचे पेड़ों को काट कर मेरे लिए मेज और कुर्सी बनाई गई थीं, जो मेरी जरूरतों को पूरी कर सकती थीं। दो सौ दर्जियों और कपड़ा बुनने वालों ने मिल कर मेरी कमीज, मेरे बिस्तर और मेज के लिए कपड़े तैयार किये थे। कपड़ों को मजबूत बनाने के लिए उन्हें कई पर्त करके सिलना पड़ा था, क्योंकि उनके कपड़ों के थान तीन फुट लम्बे और तीन इंच चौड़े होते थे।

मेरी नाप लेने के लिए एक दर्जी मेरी गर्दन पर चढ़ कर खड़ा हुआ था और दूसरा मेरी तोंद पर। दोनों ने एक मजबूत रस्सी लेकर नापा और फिर उस रस्सी को गज से नापा, जो करीब एक इंच का था। फिर उन्होंने मेरे दाहिने हाथ के अँगूठे की नाप ली। उन्होंने और किसी अंग का नाप नहीं लिया, क्योंकि गणित से हिसाब लगा कर—जैसे कलाई की नाप अँगूठे की दुगनी होगी—उन्होंने बाकी सारे नाप का निश्चय कर लिया। फिर मेरी कमीज को देख-देख कर उन्होंने उस कपड़े को सिल डाला और वह मुझे बिल्कुल फिट बैठी।

मेरी ऊँचाई नापने का उन्होंने एक दूसरा ही तरीका अपनाया। मैं झुक गया और उनमें से एक सीढ़ी लगा कर मेरी गर्दन पर चढ़ गया। वहाँ से उसने एक डोरी जमीन तक लटका दी और इस प्रकार मेरे कोट की लम्बाई को नाप लिया। कमर और बाँह की नाप मैंने स्वयं दिया। तैयार होने पर मेरे कपड़े बिल्कुल औरतों जैसे लगते थे, क्योंकि टुकड़े-टुकड़े जोड़ कर बनाये गये थे, अन्तर बस इतना था कि वे टुकड़े एक ही रंग के थे।

मेरा खाना तैयार करने के लिए तीन सौ बावर्ची आते थे। बीस बावर्चियों को उठा कर मैं मेज पर रख देता था। सौ के करीब नीचे खड़े रहते थे। कुछ मांस लिये रहते थे और कुछ शराब। मेज पर खड़े बावर्ची रस्सियों की मदद से सामान को ऊपर खींच कर मेज पर लगाते थे।

मेरे इस प्रकार खाना खाने की बात सुन कर एक दिन राजा ने सपरिवार मेरे साथ खाना खाने की इच्छा प्रकट की। जब वे लोग आ

गये तो मैंने उन्हें शाही कुर्सी पर मेज के पास बैठा लिया। उनके पास उनके चौकीदार भी थे। फ्लिमनैप, जो उनका खजांची था, अपने नौकरों के साथ उनकी सेवा में वहीं उपस्थित था और मैंने देखा कि वह मेरी ओर क्रुद्ध दृष्टि से ही देखता रहा। पर मैंने उसकी परवाह न करते हुए खूब डट कर खाना खाया, और दिनों से भी ज्यादा, ताकि दरबारियों पर मेरा रंग जम जाये।

फ्लिमनैप शुरू से ही मेरा शत्रु था। फिर भी यह दिखाने के लिए कि वह मुझे दूसरों के मुकाबले ज्यादा चाहता है, वह ऊपर से ऐसा व्यवहार करता रहा। उसने राजा के आगे खजाने की गिरती हुई स्थिति, रुपये कर्ज लेने की बात, आदि बातें रखीं और बताया कि राज-दरबार को केवल मेरे ऊपर पन्द्रह लाख स्प्रग (उनका सोने का सबसे बड़ा सिक्का) खर्च करना पड़ता था। उसने राजा को राय दी कि अवसर मिलते ही वह मुझे राज्य से विदा कर दे।

सात

इस द्वीप को छोड़ कर जाने की कहानी बताने के पहले यह आवश्यक होगा कि मैं अपने खिलाफ होने वाले षड्यंत्रों की भी चर्चा कर दूँ। यह षड्यन्त्र दो महीनों से रचा जा रहा था।

अपने जीवन में पहले कभी भी मैं राज-दरबारों में नहीं रहा था, और वहाँ के रीति-रिवाजों से परिचित भी नहीं था। हाँ, मैंने राजाओं और मंत्रियों के बारे में पढ़ा अवश्य ही बहुत था, पर यह नहीं जानता था कि एक दिन उनके बीच आकर फँसना पड़ेगा और वह भी इतने दूर और अनजान देश में।

जब मैं ब्लेफुस्कू के राजा से मिलने की तैयारी कर रहा था, एक

सम्मानित व्यक्ति एक रात पर्देदार गाड़ी में मेरे घर आया और उसने भीतर आने की आज्ञा चाही। जब गाड़ीवान चला गया तो उस आदमी को उठा कर मैंने अपनी जेब में रखा और अन्दर आकर नौकरों से कहा कि वे सभी बाहर जाएँ, मैं एकान्त चाहता हूँ और तबियत ठीक न होने के कारण मैं किसी से न मिलूँगा।

जब सब बाहर चले गये तो मेज के पास बैठ कर मैंने उस आदमी को जेब से निकाल कर हाथ पर रख लिया और उससे बातें करना शुरू किया। साधारण अभिवादन के बाद उसने बोलना शुरू किया।

उसने बतलाया कि मेरे कारण मंत्रिमंडल की कई गुप्त बैठकें हो चुकी हैं और एक-दो दिनों में निर्णय होकर पूरा प्रस्ताव तैयार हो जाएगा।

उसने कहा कि मैं जानता हूँ कि बोलगोलम मेरा जानी दुश्मन है। फ्लिमनैप से मिल कर यह व्यक्ति जनरल लिमटोक, लालकन और न्यायाधीश बालमफ की मदद से मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहा है और मुझे दण्ड दिलवाने के लिए मेरे विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने वाला है।



मेरे पहले के कामों के एहसानों के कारण यह व्यक्ति उक्त षड्यन्त्र की एक नकल मेरे लिए ले आया था, जिसका पता लग जाने पर उसे फाँसी की सजा पाने का खतरा था। वह इस प्रकार था—

पर्वताकार मनुष्य क्विनबस फ्लेस्टिन के विरुद्ध अभियोग-पत्र

'क्विनबस फ्लेस्टिन ने, जिसको राजाज्ञा मिली थी कि वह ब्लेफुस्कू राज्य के बाकी जहाजों को भी खींच कर ले आये और राज्य की जल-सेना में मिला दे, ब्लेफुस्कू राज्य को पराजित कर उसे हमारे राज्य का एक सूबा बना दे जहाँ हमारे राज्य के गवर्नर द्वारा शासन हो, बिग एंडियन और उसकी सहायता करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मौत के घाट उतार दे, हमारे परम पराक्रमो महाराजा को धोखा देकर एक आवेदन-पत्र द्वारा इस काम से मुक्त होने की प्रार्थना की और कहा कि उसकी आत्मा निरपराध और निर्दोष व्यक्तियों की हत्या करने के लिए तैयार नहीं है।

'जब ब्लेफुस्कू के राजदूत संधि-प्रस्ताव लेकर आये तो फ्लेस्टिन ने यह जानते हुए कि वह राजदूत हमारे महाराज के शत्रु का है, उसने उससे बातें कीं, मंत्रणाएँ कीं, और मदद पहुँचायी।

'एक विद्रोही की भाँति वही, फ्लेस्टिन अब ब्लेफुस्कू जाने की तैयारी कर रहा है, जिसके लिए उसने महाराजा से जबानी आज्ञा ले ली है और इस बहाने से ब्लेफुस्कू जाकर वह वहाँ के राजा की हमारे महाराज के विरुद्ध सहायता करना चाहता है।'

उसने बतलाया कि वाद-विवाद के बीच में स्वयं महाराज ने कितनी ही बार मेरी सेवाओं की चर्चा की और दंड को घटाने की भी इच्छा प्रकट की।

कोषाध्यक्ष और नौ सेना नायक ने तो माँग की थी कि निर्दयी ढंग से मुझको फाँसी दे दी जाये, या रात में सोये रहने पर मेरे घर में आग लगा दी जाये, और बीस हजार सैनिकों के साथ खड़ा रह कर जनरल जहर लगे तीरों को मुझ पर चलवाये। पहले तो वे सब एक-मत हो गये पर राजा के दबाव डालने पर मुझको जीवित रखने पर तैयार हो गये।

इस अवसर पर राजा ने अपने गुप्तचर विभाग के प्रथम सचिव रेल-डेसल को ,जो मेरा मित्र होने का दम भरता था, अपनी राय जाहिर करने का आदेश दिया। उसने कहा कि यद्यपि मेरे अपराध भयानक थे, फिर भी दया दर्शाने के लिए काफी स्थान था। उसने राजा से कहा कि मेरी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए यदि मौत की जगह मेरी दोनों आँखें फोड़ दी जायें तो न्याय भी हो जायेगा और राजा अपनी दया के लिए भी विख्यात हो जायेगा। आँखें फोड़ने से सजा भी काफी हो जायेगी, क्योंकि मैं आँखों को ही सबसे मूल्यवान समझता था और कष्ट भी अधिक न होगा, क्योंकि मंत्रियों की मदद से देख सकता था और अधिकांश बड़े आदमी मंत्रियों की आँखों से ही देखते हैं।

इस प्रस्ताव का मंत्रिमंडल में घोर विरोध हुआ। बोलगोलम अपने क्रोध को नहीं दबा सका और बोला कि समझ में नहीं आता कि किस प्रकार सचिव महोदय एक विद्रोही के लिए प्राणदान की सिफारिश कर रहे हैं ? मेरी सेवाएँ निश्चय ही बहुत थीं पर मेरे अपराध उससे भी अधिक बड़े थे और मैं मन से खुद भी बिग एंडियन था। चूँकि देशद्रोह व विद्रोह का अभियोग ही मेरे ऊपर था अतः मेरे लिए मृत्यु-दण्ड ही उपयुक्त था।

कोषाध्यक्ष की भी यही राय थी। उसने मेरे ऊपर होने वाले खर्च का जिक्र किया और कहा कि यदि इसी प्रकार चलता रहा तो खजाना खाली हो जायेगा। आँख फोड़ने से खर्च घटने की जगह और बढ़ जायेगा। चूँकि सभी दरबारी और न्यायाधीश मुझे सजा दिए जाने के प्रश्न पर एकमत थे, अतः साधारण अदालती कार्यवाही किए बिना ही मुझे मृत्यु-दंड दिया जा सकता था।

महाराजा इस राय से सहमत नहीं थे कि मुझे फाँसी दी जाए और चूँकि आँख फोड़ने की सजा नाकाफी थी, अतः कोई दूसरी सजा तजबीज की जाये। मेरी मित्रता का दम भरने वाले वह महोदय फिर बोले कि कोष को बनाये रखने की साधारण तरकीब तो यही है कि मेरा खाना दिन-प्रति-दिन कम किया जाये ताकि मैं नित्य-प्रति दुबला होता जाऊँ और फिर थोड़े दिनों बाद मृत्यु की गोद में समा जाऊँ। मरने के बाद चार-पाँच हजार आदमी लग कर दो दिन के अन्दर ही मेरे टुकड़े-टुकड़े करके जगह-जगह गाड़ देंगे। इससे बीमारी फैलने का डर भी जाता

रहेगा और मेरी हड्डियों का ढाँचा एक यादगार के रूप में सुरक्षित रखा जा सकेगा।

इस प्रकार पूरी योजना पर सभी लोग एकमत हो गये। यह भी तय हो गया था कि मुझे भूखा मारने की योजना एकदम गुप्त रखी जायेगी। हाँ, आँखें फोड़ी जाने की सजा दस्तावेजों में लिख दी जायेगी।

तीन दिन के अन्दर ही मेरे वह 'दोस्त' घर आकर अभियोग-पत्र पढ़ कर सुनाने वाले थे और मुझे बतलाने वाले थे कि मेरे साथ कितनी मेहरबानी बरती गयी है। महाराजा का ख्याल था कि मैं राजाज्ञा को हँसी-खुशी मान लूँगा! राज-दरबार के बीस डाक्टर मेरी आँखों का आपरेशन करने वाले थे।

मेरे मेहमान ने यह मेरी इच्छा पर छोड़ दिया कि मैं कौन सा रास्ता अपनाऊँ और यह भी कहा कि भेद को गुप्त रखने की गरज से मैं जैसा व्यवहार करता था, वैसा ही करूँगा।

फिर मेरे मेहमान महोदय चले गये और अकेला ही मैं परेशान-सा बैठा रहा।

राजाज्ञा मेरे पास थी अतः मैंने अपने मित्र को ब्लेफुस्कू यात्रा के बारे में कहला भेजा और फौरन ही वहाँ के लिए चल दिया।

किनारे पर पहुँच कर मैंने अपने कपड़े उतार कर एक बड़े जहाज में रख दिये और फिर स्वयं समुद्र में उतर कर, कुछ चल कर, कुछ तैर कर, उस जहाज को खींचते हुए ब्लेफुस्कू के शाही बन्दरगाह में पहुँच गया। वहाँ मुझे दो पथ-प्रदर्शक मिले, जिनके साथ मैं राजधानी में पहुँच गया। मैं उनको अपने हाथ में उठाये हुए राजधानी के फाटक तक पहुँचा और वहाँ उनसे कहा कि वे मंत्री को इत्तिला कर दें कि मैं राजा से मिलना चाहता हूँ।

एक घंटे के बाद मुझे उत्तर मिला कि राजा साहब सपरिवार मेरे स्वागत में बाहर आ रहे हैं। मैं और सौ गज आगे बढ़ गया। राजा और उनके रक्षक अपनी गाड़ियों से उतरे और रानी और राजकुमारी अपनी गाड़ियों से। मुझे देख कर वे लोग तनिक भी नहीं डरे। जमीन पर लेट कर मैंने राजा और रानी का हाथ चूमा। मैंने राजा से कहा कि अपने

वायदे के अनुसार मैं आ गया और यहाँ आने की आज्ञा मुझे अपने राजा से मिल चुकी थी। मैंने पूछा कि अपने राजा की प्रतिष्ठा ख्याल करते हुए मैंउनकी क्या सेवा कर सकता हूँ। उनसे मैंने इस बात का जिक्र नहीं किया कि मेरे राजा मुझसे नाराज हैं।

आठ

इस द्वीप में आने के तीन दिन बाद समुद्र-तट पर टहलते हुये मैंने देखा कि समुद्र में थोड़ी दूर पर कोई नाव उल्टी पड़ी है, जो शायद किसी तूफान में बह कर इधर आ लगी थी। मैं फौरन राजा के पास आया और उनसे बीस बड़े जहाज और तीन सौ नाविक माँगे। यह टुकड़ी पानी में बढ़ी और मैं समुद्र के किनारे-किनारे चला।

मैंने देखा कि ज्वार के कारण यह और भी ज्यादा किनारे पर आ गई है। नाविकों के पास डोरियाँ थीं, जिन्हें बँट कर मैंने बहुत मजबूत बना डाला था। जहाजों के नजदीक आने पर मैं भी पानी में चलता हुआ उस उल्टी नाव के पास पहुँच गया। फिर मैं तैर कर नाव के बहुत निकट गया। नाविकों ने रस्सी मेरे पास फेंक दी और मैंने उसे नाव के अगले हिस्से में फँसा कर बाँध दिया। फिर मैंने रस्सी को खींचना शुरू किया पर बेकार, क्योंकि मेरे पैर जमीन पर थे ही नहीं। अतः मैंने दूसरी ओर जाकर एक हाथ से नाव को धक्के दे-दे कर किनारे की ओर ठेलना शुरू किया। फिर थोड़ा सुस्ता कर इसी प्रकार ढकेलते हुए नाव किनारे पर ले आया। अब मैं ऐसे स्थान पर आ गया था, जहाँ पानी मेरे सीने तक था।

अब मैंने उस नाव में बँधे रस्से को बाकी नौ जहाजों के साथ बाँध दिया। हवा का रुख भी हमारा साथ दे रहा था। हम लोग किनारे से चालीस गज दूरी पर आकर खड़े हो गये और ज्वार के घटने का इन्तजार

करने लगे। जब पानी उतर गया तो दो हजार आदमियों की मदद से मैंने नाव को सीधी कर दिया। मैंने देखा कि नाव ज्यादा टूटी नहीं थी।

मैंने राजा से बताया कि यह मेरा सौभाग्य था कि नाव किनारे पर आ गई थी। उसकी मदद से मैं अब अपने देश वापस जा सकता हूँ। मैंने राजा से नाव की मरम्मत करने के लिए औजार और जरूरत की दूसरी चीजें माँगीं।

मुझे यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि ब्लेफुस्कू के दरबार में लिलीपुट के राजा की ओर से कोई परवाना नहीं आया था। बाद में मुझे पता लगा कि लिलीपुट के राजा का ख्याल था कि मैं जल्दी ही लिलीपुट वापस आ जाऊँगा। मेरी ज्यादा दिनों की गैर-हाजिरी से उसकी परेशानी बढ़ गई। कोषाध्यक्ष और दूसरे दरबारियों से राय लेकर मेरे पास नया अभियोग-पत्र पहुँचाने के लिए एक योग्य व्यक्ति भेजा गया।

राजा ने उस व्यक्ति से ब्लेफुस्कू के राजा के पास कहला भेजा था कि वहाँ पर उनकी दया का बखान करे और बताये कि कैसे मृत्यु-दंड के स्थान पर मेरी आँखें फोड़ने की सजा मिली थी, कैसे मैं दंड से बचने के लिए भाग निकला था; और यदि मैं दो घंटों में वापस नहीं लौट आया तो मैं विद्रोही करार कर दिया जाऊँगा और मेरी उपाधि जब्त कर ली जायेगी। उस राजदूत ने यह भी कहा कि ब्लेफुस्कू के राजा लिलीपुट के राजा से अपनी मित्रता का ख्याल करके मुझे मेरे हाथ-पैर बँधवाकर फौरन रवाना कर देंगे।

ब्लेफुस्कू के राजा ने अपने उत्तर में लिखा कि मेरे हाथ-पैर बँधवा कर वापस भेजने की बात उसके बस से बाहर है; यद्यपि मैंने उनके जहाजी बेड़े को नष्ट किया था, लेकिन मैंने उनकी संधि कराने में जो मदद की थी उसे वह नहीं भूल सकते थे। इसके अलावा अब मुझे एक बड़ी नाव मिल गई थी, जिसकी मरम्मत हो जाने पर मैं अपने देश चला जाऊँगा और इस प्रकार दोनों राज्यों का इतना बड़ा बोझ अपने आप कम हो जायेगा।

उसका यह उत्तर पाकर लिलीपुट का वह राजदूत वापस लौट गया। ब्लेफुस्कू के राजा ने मुझे सारी बातें बतायीं और मेरी सुरक्षा का वादा भी किया। मैंने उत्तर दिया कि भाग्यवश एक नाव मुझे मिल गई है और

दोनों राष्ट्रों के बीच झगड़े का कारण बनने के स्थान पर समुद्र विचरण करना मैं कहीं ज्यादा पसन्द करूँगा। राजा मेरी बातें सुनकर नाराज नहीं हुए, बल्कि मेरी दृढ़ता देखकर उनके और उनके दरबारियों की प्रसन्नता बढ़ गई।

इन सब कारणों से मेरी तत्काल जाने की व्यग्रता और भी बढ़ गई और राजा ने भी इस काम में मेरी सहायता की। मेरी नाव के लिए पाल बनाने के काम में पाँच सौ व्यक्ति लगा दिये गये। अपने सबसे मजबूत कपड़ों की तेरह परतें करके उन लोगों ने मेरी इच्छानुसार पाल तैयार किये। उनकी रस्सियों की तीस परत बँट कर मैंने मोटे रस्से तैयार किये। समुद्र के किनारे पड़े हुए एक भारी पत्थर ने लंगर का काम दिया। पतवार बनाने में और मस्तूल खड़ी करने में मुझे सबसे ज़्यादा दिक्कत हुई, लेकिन राजा के बढ़इयों ने इस काम में भी मेरी पूरी मदद की।

एक महीने में जब सब चीजें तैयार हो गईं तब मैंने राजा के पास खबर भिजवायी और जाने की आज्ञा माँगी। राजा सपरिवार महल से बाहर आये। मैंने लेट कर उनके हाथों को चूमा। रानी और राजकुमारियों ने भी मुझको अपने हाथ चूमने देकर मुझे सम्मानित किया। राजा ने मुझे अपनी एक बड़ी तस्वीर दी और दो सौ स्प्रग (वहाँ के सिक्के) भेंट किये, जिसे मैंने अपने दस्तानों में रख लिए।

अपनी नाव पर मैंने सौ बैल, तीन सौ भेड़ें, काफी मात्रा में रोटियाँ और पीने का पानी रख लिया। साथ ही इतना पका हुआ मांस रखा, जितना चार सौ बाबर्ची पका सकते थे। छः जिन्दा गायें, चार भैंसें और कई मटके शराब भी मैंने साथ ले ली। जानवरों को खिलाने के लिए पर्याप्त में भूसा भी रख लिया। मैंने दस-बीस उस द्वीप के रहने वालों को भी साथ ले लिया होता, पर राजा इसके लिए तैयार नहीं हुआ।

इस प्रकार सभी आवश्यक वस्तुओं का प्रबन्ध कर मैं १७०१ के सितम्बर की चौबीसवीं तारीख को अपनी यात्रा पर चला। उत्तर की ओर चार मील नाव खेने के बाद आधे मील की दूरी पर उत्तर-पश्चिम में एक द्वीप दिखायी पड़ा।

मैं उसी ओर बढ़ा और नजदीक पहुँच कर किनारे पर लंगर डाल दिया। द्वीप का यह भाग आबाद नहीं मालूम होता था। कुछ नाश्ता कर मैं आराम करने के लिए सो गया। करीब छः घंटा मैं अवश्य सोया होऊँगा क्योंकि मेरे जागने के घंटों बाद पौ फटी थी। सुबह होने से पहले ही मैंने नाश्ता किया और तब अपने जेब में पड़े कम्पास की मदद से मैं आगे चल दिया।

मेरा इरादा उन द्वीपों में से एक में पहुँचने का था, जो मैं समझता था कि वान डीमेन के देश के उत्तर में है। दिन भर मुझे कुछ भी दिखाई न पड़ा, पर दूसरे दिन करीब तीन बजे दक्षिण-पूर्व में मुझे किसी जहाज का मस्तूल दिखाई पड़ा। अब मेरी नाव पूरब की ओर जा रही थी। मैंने आवाज लगाई पर कोई उत्तर नहीं मिला। जल्दी-जल्दी नाव चला कर करीब आधे घंटे में मैं उसके नजदीक आ गया। उन्होंने मुझे देखा और अपने जहाज से आवाज करने को एक छोटी तोप छोड़ी।

एक बार फिर अपने देश पहुँचने की आशा को सच्ची होते देख कर मुझे कितनी खुशी हुई, इसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। मुझे देख कर उस जहाज ने चाल धीमी कर दी और छब्बीस सितम्बर की शाम पाँच-छः के बीच मैं उस जहाज के निकट पहुँचा। गाय और भेड़ों को अपनी जेब में रख कर और बाकी सामान हाथ में लेकर मैं उस जहाज में चला गया।

यह एक अंग्रेजी जहाज था, जो जापान से वापस आ रहा था। इसके कप्तान डेप्टफोर्ग के जॉन बिडेल थे, जो बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे। जहाज में करीब पचास आदमी थे। यहाँ मेरी भेंट अपने एक पुराने साथी पीटर विलियम से हुई, जिससे कप्तान के बारे में बहुत सी बातें मालुम हुईं।

इस व्यक्ति ने मेरे साथ बड़ा अच्छा बरताव किया और पूछा कि मैं कहाँ से आ रहा हूँ, और कहाँ जाऊँगा। लेकिन मैंने उससे जब संक्षेप में अपनी आप बीती बताई तो उसने यही समझा कि रास्ते की परेशानियों और अकेले छूट जाने के कारण मेरा दिमाग ठीक नहीं था। पर जब मैंने अपनी जेब से गाय और भेंड़ें निकाल कर उसे दिखायी तो उसे मेरी कहानी पर विश्वास हुआ। उसके बाद मैंने राजा से मिले उपहार उसे

दिखाये और उस देश की दूसरी चीजें भी दिखाईं। मैंने उसे सौ स्प्रग का एक थैला भेंट किया और वायदा किया कि लंदन पहुँचने पर एक गाय और एक भेंड़ भी दूँगा।

६ अप्रैल, १७०२ को हम लोग डाउन्स पहुँचे। रास्ते में एक ही दुखद घटना हुई कि मेरी एक भेंड़ को एक चूहा उठा ले गया था जिसकी हड्डी बाद में एक बिल में पड़ी मिली। बाकी सभी जानवर सही-सलामत किनारे तक पहुंच गये।

कुछ दिनों मैं इंग्लैंड में रहा और उन जानवरों को दूसरों को दिखा-दिखा कर काफी धन कमाया। फिर जब मैं अपनी दूसरी यात्रा पर चला तो मैंने उन सभी जानवरों को छः सौ पौंड में बेच दिया। और लौटने पर मैंने देखा कि उन नस्ल की भेंड़ों और गायों में काफी वृद्धि हो गयी है।

मैं अपने परिवार के साथ सिर्फ दो महीने रहा, क्योंकि मेरी दूसरे देशों को देखने की इच्छा कभी समाप्त नहीं होती थी। अपनी बीबी के पास डेढ़ हजार पौंड छोड़ कर और रेडरिफ के एक अच्छे मकान में ठहरा कर, मैं फिर यात्रा पर चल दिया। बाकी बची हुई चीजों को साथ ले लिया क्योंकि रास्ते में उन्हें बेच कर धन इकट्ठा करने की इच्छा थी। मेरे एक चाचा भी एक जायदाद छोड़ गये थे, जिसका वारिस मैं ही था, पर फैटर लेन में ब्लेकबुल नामक स्थान को भी मैंने पट्टे पर लिखवा लिया था। इस प्रकार मैं अपने परिवार को निराधार नहीं छोड़ रहा था। मेरा बेटा जानीग्रामर स्कूल में पढ़ रहा था। मेरी लड़की बेट्टी (जो अब विवाहिता है) उस समय सिलाई-बुनाई की शिक्षा पा रही थी। आँखों में आँसू भर कर मैंने पत्नी-बच्चों से विदा ली और 'एडवेंचर' जहाज पर चढ़ कर चल दिया। यह जहाज तीन सौ टन का था और सूरत जा रहा था। इसका कप्तान लिवरपूल का जॉन निकोलस था।

अपनी इस यात्रा का वर्णन मैं फिर कभी करूँगा।

●

महामानवों के देश में

[दूसरी यात्रा : ब्राब्डिनग्नेग की]



एक

ईश्वर ने ही मेरे पैरों में चक्की बाँध दी थी और शायद इसीलिए मुझे सम्पन्न बनाया था।

लौटने के दो महीने बाद ही मैं फिर यात्रा के लिए निकल पड़ा और २० जून १७०२ को डाउन्स में 'एडवेन्चर' नाम के जहाज पर चढ़ा। यह जहाज सूरत जा रहा था और इसका कप्तान जॉन निकोलस था। उत्त-माशा अन्तरीप तक पहुँचने के पहले हम लोग एक भयंकर तूफान के बीच से गुजरे। वहाँ हम लोग ताजा पानी पीने के लिए रुक गये। पर जहाज में एक छेद से पानी अन्दर आते देख कर हम लोगों को वहाँ उतरना पड़ गया। कप्तान को जूड़ी बुखार आ जाने के कारण हम लोगों को मार्च के आखीर तक वहीं रुकना पड़ा।

हम लोगों ने फिर जब यात्रा शुरू की तो मैडागास्कर की खाड़ी तक की यात्रा बड़ी ही सुखद रही। लेकिन उस द्वीप के उत्तर की ओर जाते ही लगभग पाँच देशान्तर के करीब १७०३ की १६ अप्रैल से बड़ी तेज हवा बहने लगी और लगभग बीस दिन तक बहती रही। फलस्वरूप, हम लोग मोलक्का द्वीप की ओर बहक गये, और दूसरी मई को हवा शान्त हुई और आकाश साफ हुआ। इससे मुझे ज्यादा खुशी नहीं हुई। अनुभवी कप्तान होने के कारण उसने हम लोगों को चेतावनी दे दी कि एक भयानक तूफान आने वाला है। दूसरे ही दिन दक्षिणी मानसून के तेज हो जाने से हवा तेज हो गयी और बढ़ते-बढ़ते उसने तूफान का रूप ले लिया।

इसी तूफान में जब पश्चिमी दक्षिणी हवा बहुत तेज चलने लगी तो हम लोग करीब तीन सौ मील पूरब की ओर बह गये और अनुभवी

कप्तान भी न बता सका कि हम लोग दुनिया के किस हिस्से में पहुँच गये हैं। हम लोगों के पास खाने के सामान की कोई कमी नहीं थी, जहाज की हालत भी अच्छी थी और मल्लाहों का स्वास्थ्य भी ठीक था, लेकिन पानी चुक गया था। अतः हम लोगों ने उसी दिशा में आगे बढ़ना अच्छा समझा, क्योंकि अगर ज्यादा उत्तर की ओर मुड़ते तो ग्रेट-टारटरी के उत्तर-पश्चिम में पहुँच जाते, जहाँ हम लोगों को हिम-सागर मिलता।

१६ जून १७०३ को मस्तूल के रखवारे के निकट ही जमीन दिखलाई पड़ी। सत्रह जून को हम सब को धरती नजर आयी। वह बड़ा द्वीप था या महाद्वीप, इसका हम लोगों को कोई अन्दाज न था। जमीन आगे बढ़ कर पानी में धँसी हुई थी और समुद्र इतना छिछला था कि सौ टन का जहाज भी उसमें लंगर नहीं डाल सकता था। करीब एक मील की दूरी पर हमारे कप्तान ने जहाज रोका और एक दर्जन हथियारबन्द आदमियों को नाव पर पता लगाने के लिए भेजा। मैंने भी उन लोगों के साथ जाने की इच्छा प्रकट की, ताकि मैं भी जाकर उस द्वीप के बारे कुछ खोज कर सकूँ।

द्वीप में पहुँचने पर हम लोगों को न तो कोई नदी या झरना दिखाई पड़ा, न कोई जीव-जन्तु। हमारे साथी किनारे के पास ही पानी की खोज में व्यस्त हो गये, लेकिन मैं करीब एक मील अन्दर चला गया, लेकिन सभी जगह मुझे उजाड़ और सूखा ही दिखलाई पड़ा। मैं काफी थक गया था। अपनी इच्छाओं को तृप्त न होते देख कर मैं वापस लौट आया और देखा कि हमारे साथी नाव पर बैठ कर समुद्र में जहाज की ओर जा रहे हैं। मैं उन लोगों को पुकारने ही जा रहा था कि मुझे उन लोगों के पीछे एक विशालकाय मनुष्य जाता दिखाई दिया, जो लम्बे-लम्बे डग भर रहा था, पर पानी उसके घुटने तक भी नहीं पहुँच पा रहा था। चूँकि हमारे साथी काफी पहले ही रवाना हो चुके थे और दोनों के बीच का फासला एक मील से अधिक था, अतः वह व्यक्ति हमारे साथियों को पकड़ नहीं सका। यह मुझे बाद में मालूम हुआ, क्योंकि उस समय तो डर के मारे मैं कुछ भी देख नहीं पाया था। अब मैं जिस ओर से आया था, उसी ओर बड़ी तेजी से भागा और थोड़ी दूर जाकर एक पहाड़ी पर चढ़ गया। वहाँ से मुझे सारा दृश्य खूब साफ दिखाई पड़ता था। मुझे चारों ओर की सारी जमीन जुती दिखाई पड़ी। लेकिन पहली चीज, जिसे देख कर मुझे

दाँतों तले उँगली दबानी पड़ी वह थी वहाँ की घास की लम्बाई, जो कहीं भी बीस फिट से कम नहीं थी।

मैं एक चौड़ी पगडंडी पर चलने लगा जो खूब चौड़ी व बड़ी सड़क जैसी थी, पर बाद में मुझे पता लगा कि वहाँ के रहने वालों के लिए वह जौ के खेतों के बीच से गुजरने वाली पतली पगडंडी ही थी। करीब एक घंटे तक चलने के बाद मैं खेत के दूसरे किनारे पर पहुँचा, जिसकी मेड़ करीब एक सौ फुट ऊँची थी और पेड़ों की ऊँचाई का तो मैं अन्दाज ही नहीं कर सका।

इस खेत से दूसरे खेत में जाने के लिए एक छोटा-सा रास्ता था। इसमें चार सीढ़ियाँ थीं और सबसे ऊपर एक पत्थर रखा था। मेरे लिए इस रास्ते से होकर जाना असम्भव था, क्योंकि प्रत्येक सीढ़ी करीब छः फुट ऊँची थी। जब मैं इस रास्ते से दूसरे खेत में जाने की कोशिश कर ही रहा था, मैंने एक दूसरे व्यक्ति को ऐसी ही सीढ़ी को पार करते देखा। इस व्यक्ति की ऊँचाई भी लगभग उतनी ही थी जितनी उस व्यक्ति की थी, जो नाव का पीछा कर रहा था। इस व्यक्ति का हर कदम करीब दस फुट का होता था। डर और आश्चर्य से मैं थर-थर काँपने लगा और जौ के खेत में जाकर छिप गया। वहाँ से मैंने उस व्यक्ति को मेड़ पार करते देखा। मेड़ पर खड़े होकर जब उस व्यक्ति ने अपने किसी साथी को पुकारा तो वह आवाज किसी तेज भोंपू की आवाज से कम न थी। उसकी आवाज सुन कर पहले तो मैं समझा कि कहीं बिजली कड़क रही है। उसकी आवाज सुन कर करीब छः शैतान जैसे लोग उसके पास आये, जिनके हाथों में हँसिया थीं, जिनकी लम्बाई छः तल-वारों की लम्बाई के करीब होगी। ये लोग उतने अच्छे कपड़े नहीं पहने थे। वे उसी खेत में फसल काटने लग गये, जहाँ मैं छिपा था। मैं उन लोगों से काफी दूर पर खड़ा था, लेकिन मुझे कुछ नजदीक आना पड़ा क्योंकि डंठल एक-एक फुट की दूरी पर थे और मैं उनके बीच में बड़ी मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था।

मैं थोड़ा आगे बढ़ आया और खेत के उस हिस्से में पहुँच गया, जहाँ पानी और हवा के कारण कुछ पेड़ गिर गये थे यहाँ आकर मुझे रुक जाना पड़ा, क्योंकि गिरे हुए पेड़ इतने उलझे हुए थे कि उनमें से होकर

जाना मेरे लिए असम्भव ही था और उनकी बालें इतनी सख्त थीं कि मेरे कपड़े छेद कर शरीर में चुभती थीं। और फसल काटने वाले भी मुझसे सौ गज से ज्यादा की दूरी पर नहीं थे।

मेहनत से थक जाने और डर कर तथा आश्चर्य से घबरा जाने के कारण मेरी यही इच्छा होती थी कि वहीं पर लेट जाऊँ, चाहे वहीं मेरे जीवन के दिन पूरे हो जायें। अपनी पत्नी और बच्चों का भी मुझे ख्याल आया कि वे बिना पति व पिता के हो गये हैं। मुझे खुद भी अपने ऊपर गुस्सा आ रहा था कि मैं खुद मित्रों की राय न मान कर क्यों फिर से यात्रा पर निकल पड़ा।

अपना परेशानी की इस दशा में मैं लिलीपुट-निवासियों को नहीं भूल सकता था। जिन्होंने मुझे ही ईश्वर की सबसे महान् सन्तान समझ रखा था। उनके देश में तो सम्राट का पूरा जहाजी बेड़ा एक हाथ से ही घसीट सका था और ऐसे-ऐसे काम कर चुका था जो उनके देश के इतिहास में चिरकाल तक लिखे रहेंगे। यद्यापि उन पर आने वाली पीढ़ियाँ मुश्किल से ही विश्वास करेंगी। तथपि मेरे वहाँ के कारनामे सत्य थे और उन्हें सैकड़ों-हजारों लिलीपुट-वासियों ने देखा था। मैं सोचने लगा कि हमारे बीच में जो हालत एक लिलीपुट-निवासी की हुई होती, वही हालत इन लोगों के बीच अब मेरी हो रही थी।

जब मैं बैठा यही सब सोच रहा था, तभी एक मजदूर मेरे इतने नजदीक आ गया कि अगले ही क्षण या तो मैं उसके पैर के नीचे दब कर समाप्त हो जाता, या फिर उसके हँसिये से कट कर मेरा शरीर टुकड़े-टुकड़े हो जाता। अतः जब उसने दूसरा कदम उठाया तो, जितनी भी मुझमें शक्ति थी, लगा कर मैं जोरों से चिल्ला उठा। इससे वह भी थोड़ा सहम गया और उसने अपने कदम छोटे कर दिये और जमीन पर मुझे पड़ा हुआ, वह गौर से देखने लगा।

पहले तो वह थोड़ा-सा सकपकाया फिर उसकी मुद्रा वैसी ही बन गई जैसी किसी व्यक्ति की एक भयानक छोटे जीव को पकड़ते समय बन जाती है। अन्त में उसने मुझे अपनी छोटी उँगली और अँगूठे के बीच दबा कर उठा लिया। मुझे उठा कर वह अपनी आँखों के पास ले गया और मुझे खूब गौर से देखा। मैं थोड़ा सम्भल गया और उसका मतलब भी समझ गया। इसलिए मैंने उससे छुटकारा पाने का भी कोई प्रयत्न नहीं



किया, यद्यपि वह मुझे जमीन से साठ फुट ऊँचा उठाये हुए था और मुझे इतना कस कर पकड़े हुए था कि मेरा सारा बदन टूटा जा रहा था। मैंने अपने बदन को ढीला कर दिया, आँखें ऊपर उठा लीं और बहुत धीमे स्वर में प्रार्थना करने के ढँग से बातें करने लगा। मुझे हर क्षण यही डर लगा था कि कहीं वह मुझे जमीन पर उसी तरह पटक न दे जैसे हम लोग किसी घिनौने छोटे कीड़े को पटक देते हैं।

लेकिन मेरे राम शायद सीधे थे। मेरी आवाज और हरकतों से वह प्रसन्न हो गया। वह भी मेरी ओर आश्चर्य भरी दृष्टि से देखने लगा क्योंकि मैं जो कुछ बोल रहा था, उसकी भी समझ में नहीं आ रहा था।

इसी बीच मैंने रोने और घबराने की मुद्रा बनाई ताकि वह समझ सके कि उसके इस भाँति पकड़े रहने से मेरे ऊपर क्या बीत रही है।

शायद वह मेरा मतलब समझ गया और मुझे अपने कोट के दामन में डालकर वह अपने मालिक की ओर दौड़ा, जो एक अच्छा और खाता-पीता किसान था। यह वही व्यक्ति था, जिसे मैंने पहले खेत में देखा था।

नौकर ने मालिक को मेरे बारे में यथासम्भव सारी बातें बतला दीं। मालिक ने एक छड़ी के बराबर लम्बा सींक का टुकड़ा लेकर मुझे उलटा-पलटा। मेरी सूरत ठीक से देखने के लिये उसने मेरे मुँह पर से बालों को एक ओर हटा दिया।

उसने अपने अन्य नौकरों को बुला कर उनसे पूछा कि क्या उन लोगों ने मेरे जैसा कोई कीड़ा पहले भी देखा है? उसने मुझे जमीन पर लिटा दिया, पर मैं फौरन उठ खड़ा हुआ और आगे-पीछे टहलने लगा। मेरी मंशा इन्हें यह दिखाने की थी कि मेरी भागने की कोई इच्छा नहीं है। वे सब एक घेरे में मेरे चारों ओर बैठ गये ताकि वे मेरी हरकतों को ठीक से देख सकें।

मैं अपना हैट उतार कर उस किसान के आगे झुका। मैं घुटनों के बल बैठ, हाथ और आँखें उठा कर, जितनी जोर से हो सकता था, बोला। अपनी जेब से सोने के सिक्कों का एक थैला निकाल कर किसान को भेंट किया। उसने उसे ले लिया और देखने के लिये आँखों तक ले गया। उसने कई बार उसे उलट-पलट कर देखा, पर उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया। तब मैंने उससे अपना हाथ जमीन पर रखने के लिये कहा।

फिर मैंने बैग लेकर उसे खोल डाला और सिक्कों को उसकी हथेलियों पर रख दिया। उसमें छः स्पेनिश सिक्के थे, जिनमें प्रत्येक का मूल्य बीस रुपये था और कुल मिला कर बीस या तीस छोटे सिक्के थे। उसने अपनी जीभ को उँगली से छूकर एक के बाद दूसरा सिक्का छूकर एक के बाद दूसरा सिक्का उठा कर देखा। लेकिन वह उनकी उपयोगिता से पूर्णतया अनजान जान पड़ता था। उसने इशारे से मुझसे कहा कि मैं उन्हें फिर से बैग में रख दूँ। मैंने वैसा ही किया।

वह किसान अब तक समझ चुका था कि मैं बुद्धिमान जीव हूँ। उसने मुझसे बातें करनी चाहीं पर उसके स्वर में मुझे पानी की चक्की से निकलने वाले स्वर जैसे मालूम होते थे। मैंने उसकी बातों का जवाब अपनी ताकत भर जोर से, और जितनी भाषायें मुझे मालूम थीं, उनमें देने का

प्रयत्न किया। कभी-कभी तो वह अपना कान इतने नजदीक ले आता कि दूरी केवल दो गज भर रह जाती थी। लेकिन ये सभी कोशिशें बेकार रहीं क्योंकि हम लोग एक दूसरे को बिल्कुल नहीं समझ पा रहे थे।

फिर उसने अपने नौकरों को काम पर भेज दिया। तब अपना रूमाल निकाल कर उसे दोहरा कर उसने अपने हाथों पर बिछा लिया और हथेली ऊपर कर उसने अपने हाथ जमीन पर रख दिये और इशारे से मुझे उस पर चढ़ जाने को कहा। मैं यह बड़ी आसानी से कर सकता था, क्योंकि उसके हाथों की मोटाई एक फुट से ज्यादा नहीं थी। उसकी आज्ञा को पूरी तौर से मान कर और यह ख्याल कर कि मैं गिर न जाऊँ, मैं उसके रूमाल पर लेट गया। ज्यादा सुरक्षा के ख्याल से उसने मुझे उसी रूमाल में सिर तक लपेट दिया और इस प्रकार वह मुझे अपने घर ले गया।

वहाँ जाकर उसने अपनी पत्नी को बुला कर मुझे दिखलाया, लेकिन वह डर कर भाग गयी। कुछ देर बाद जब उसने मुझे देखा कि मैं उसके पति की आज्ञाओं का पूरी तरह पालन कर रहा हूँ, तो वह सन्तुष्ट हो गयी और मेरे प्रति दया-भाव दर्शाने लगी।

करीब बारह बजे दिन में एक नौकर खाना ले आया। करीब चौबीस फुट व्यास की एक तश्तरी में मांस रखा था। खाने वालों में थे किसान, उसकी पत्नी, तीन बच्चे और बूढ़ी माँ।

जब वे सब बैठ गये तो उस किसान ने मुझे उठा कर उन लोगों से थोड़ी दूर मेज पर बैठा दिया, जो जमीन से लगभग ३० फुट ऊँची थी। मैं बहुत डर गया था और गिरने से बचने के लिए मेज के किनारों के पास जाता ही नहीं था। पत्नी ने एक रकाबी में मांस का एक टुकड़ा और एक टुकड़ा रोटी तोड़ कर मेरे आगे रख दी। मैंने झुक कर उसका अभिवादन किया और अपना काँटा, चाकू निकाल कर खाने लगा जिसे देख कर वह लोग बहुत खुश हुए।

मालकिन ने अपनी नौकरानी को भेज कर एक छोटे प्याले में कुछ शराब मँगवाई, जो करीब दो गैलन रही होगी। मैंने उनकी स्वास्थ्य कामना करते हुये बड़ी मुश्किल से दोनों हाथों में प्याला थाम कर उसे पिया। अंग्रेजी में मैंने धन्यवाद दिया, जिसे सुन कर वे सब इतनी जोर

से हँसे कि मेरे कान के पर्दे फटने लगे। उस मदिरा का स्वाद सेब की शराब जैसा था और बुरा नहीं था।

तब फिर मालिक ने मुझे इशारे से अपनी तश्तरी के पास बुलाया। मैं उठ कर मेज पर चला। वे सब आश्चर्य से देखने लगे। पर किसी चीज की ठोकर खाकर मैं बड़े जोर से गिर पड़ा, यद्यपि चोट तनिक भी नहीं आयी। लेकिन जल्दी से उठ कर, अपनी हैट लगा कर मैं तेजी से पुन: चलने लगा ताकि उन लोगों को यह न मालूम हो कि गिरने से मुझे कहीं चोट आ गयी है।

जब मैं मालिक की ओर जा रहा था, उसके सबसे छोटे लड़के ने मेरी टाँग पकड़कर मुझे उठा लिया और इतना ऊँचा उठाया कि मैं थर-थर काँपने लगा, यद्यपि उसकी आयु दस वर्ष से अधिक न रही होगी, लेकिन उसके बाप ने मुझे उससे छीन लिया और उसको इतनी जोर से मारा कि यदि हम जैसों को मारता तो कोई भी यूरोपियन फौजी जवान चक्कर खा कर गिर पड़ता। उसने लड़के को खाने की मेज पर से फौरन चले जाने की आज्ञा दी। यह सोच कर कि कहीं इस घटना से वह लड़का मुझसे दुश्मनी न ठान बैठे और फिर यह याद करके कि हम लोग स्वयं गिलहरियों, कुत्तों और बिल्लियों के बच्चों से कैसा व्यवहार करते हैं, मैंने झुक कर नम्रता के साथ मालिक के आगे यह इच्छा प्रकट की कि बच्चे को माफ कर दिया जाये। पिता ने मेरी बात मान ली और लड़का फिर मेज के एक किनारे पर बैठ गया। मैं भी झुक कर आगे बढ़ा और मैंने उसका हाथ चूम लिया।

खाने के बीच में ही मालकिन की पालतू बिल्ली कूद कर उनकी गोद में जा बैठी। मुझे ऐसा लगा जैसे बारह करघे एक साथ चल रहे हों, पर जब सामने देखा तो समझ में आया कि यह बिल्ली के घुर-घुराने की आवाज है। बिल्ली कद में तीन बछड़ों के बराबर तो जरूर रही होगी। यह मैंने उसके मुंह और एक पंजे को देख कर अन्दाज किया था। मालकिन उसे सहला रही थीं और खाना खिला रही थीं। इस जन्तु की भयानक आकृति देख कर मेरे प्राण निकले जा रहे थे, यद्यपि मैं उनसे पचीस फुट दूर बैठा था। और मालकिन उसे कस कर पकड़े हुये थीं, ताकि वह उछल कर मुझे अपने पंजों में न दबोच ले।

लेकिन कोई दुर्घटना नहीं हुयी, क्योंकि उस बिल्ली ने मेरी ओर तब भी कोई ध्यान नहीं दिया जब मालिक ने मुझे उसके बिल्कुल पास यानी उससे तीन फुट की दूरी पर ही बैठा दिया था। मैंने भी उससे भयभीत न होने का फैसला कर लिया था, क्योंकि मुझे बतलाया गया था और तजुरबे से भी सही उतरा था कि यदि कोई डरावने जन्तु से डरता है, तो वह उस जन्तु को हमला करने के लिये प्रोत्साहन देता है।

मैं उस बिल्ली के सामने बेफिक्र होकर टहलता रहा और कई बार तो उसके इतने नजदीक चला गया कि हम लोगों में केवल आधे फुट का अन्तर रह जाता। उस समय तो वह इस प्रकार पीछे हटी मानो वह स्वयं ही डर गयी हो। कुत्तों से तो मैं और भी कम भयभीत हुआ। तीन या चार कुत्ते आकर कमरे में टहलने लगे थे। उनमें से एक तो बड़ा कुत्ता था, जो आकार में दो हाथियों के बराबर रहा होगा और एक शिकारी कुत्ता था जो लम्बा तो ज्यादा था पर उतना बड़ा नहीं था।

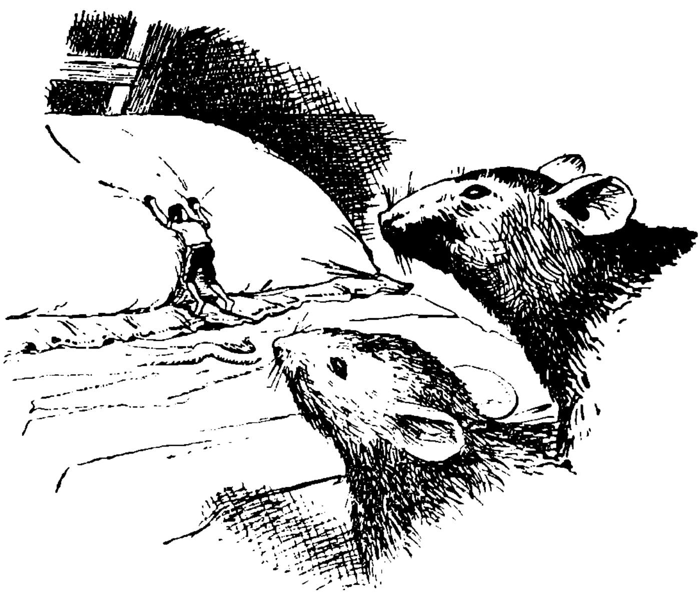
जब खाना करीब-करीब खतम हो चला तो आया एक बच्चे को लेकर आयी। उसकी अवस्था एक साल के लगभग थी। मुझे देख कर वह रोने लगा। उसका रोना बिलकुल उस तरह था जैसा लन्दन के पुल से चेल्सी के रास्ते में बहुधा सुनाई देता है, जब बच्चे खिलौनों के लिये रोने लगते हैं। माँ ने प्यारवश मुझे उठा कर बच्चे की गोद में रख दिया और बच्चे ने मुझे बीच में पकड़ कर उठा लिया और शायद चूसने के इरादे से मेरा सिर अपने मुँह में डाल दिया। ऐसी हालत में मैं इतने जोर से चिल्लाया कि बच्चा डर गया और उसने मुझे छोड़ दिया। मेरा तो सिर चकनाचूर हो गया होता यदि मालकिन मुझे बीच में ही न थाम लेतीं। आया ने बच्चे को चुप कराने के लिये उसे एक झुनझुना दिया जो देखने में मुझे एक खाली हंडा-सा दिखायी पड़ता था। उसमें कुछ पत्थर डाल दिये गये थे ताकि आवाज हो सके। यह झुनझुना बच्चे की कमर में बँधा हुआ था।

जब खाना समाप्त हो गया तो मालिक खेत पर, मजदूरों से काम लेने चले गये, पर मेरा ख्याल है कि पत्नी को मुझे हिफाजत से रखने का आदेश दे गये। मैं बहुत थका हुआ था और नींद से मेरी आँखें झपी जा रही थीं। यह देख कर मालकिन ने मुझे अपने ही बिस्तर पर लिटा दिया और अपनी चादर से ढँक दिया जो बहुत बड़ी और खुरदुरी थी।

मैं करीब दो घंटे सोया और सपने में अपनी पत्नी और बच्चों को देखता रहा। अतः जागने पर मुझे घर की याद सताने लगी। जब मैं जागा तो अपने को दो-तीन सौ फुट चौड़े और दो सौ फुट ऊँचे कमरे में बीस गज चौड़े बिस्तर पर अकेला पड़ा पाया। उस समय मालकिन घरेलू कामों में व्यस्त थीं और मुझे उन्होंने उसी कमरे में बन्द कर रखा था। बिस्तर आठ गज ऊँचा था।

जब मैं नीचे उतरने की सोच रहा था, मैंने नजदीक ही हो-हल्ले की आवाज सुनी और देखा कि दो चूहे इधर-उधर बिस्तर पर दौड़ रहे हैं। उनमें से एक तो मेरे चेहरे पर ही पर चढ़ गया। मैं बहुत डर गया और बचाव के लिये मैंने मुँह पर कपड़ा डाल लिया।

इस भयानक जन्तुओं की इतनी हिम्मत बढ़ गयी कि मुझ पर हमला कर बैठे और एक तो अपने चारों पैर मेरे कालर पर रख कर बैठ गया। लेकिन उसके कुछ भी कर सकने के पहले ही अपनी तलवार निकाल कर मैंने उस पर वार करके भगा दिया। एक मेरे पैरों के पास गिर पड़ा और उसका साथी अपने मित्र की हालत देख कर भाग निकला। इस घटना के बाद मैं परेशानी की हालत में बिस्तर पर ही टहलने लगा।



ये चूहे भी बहुत बड़े थे। मैंने घायल चूहे की पूंछ को नापा तो देखा कि वह दो गज से एक इंच कम थी। लेकिन उसे लाश समझ कर बिस्तर से हटाने में तो मेरा दिवाला ही निकल गया। मैंने देखा कि उसमें अभी जान बाकी थी, अतः उसके गले पर एक वार और करके मैंने उसका अंत कर दिया।

थोड़ी ही देर बाद मालकिन कमरे में आईं और मुझे खून से लथ-पथ देख कर घबरा गईं और मुझे गोद में उठा लिया। मैंने मरे हुये चूहे को दिखा कर इशारे से बतलाया कि मुझे चोट नहीं लगी है। यह देख कर वह अत्यन्त प्रसन्न हुई और नौकरानी को बुला कर आदेश दिया कि चिमटे से पकड़ कर उस चूहे को खिड़की से बाहर फेंक दे। फिर उसने मुझे मेज पर बैठा दिया। मैंने उसे खून से लथ-पथ अपनी तलवार दिख-लाई और फिर पोंछ कर म्यान में रख दी। मैंने मालकिन को इशारों से बतलाया कि मैं जमीन पर उतरना चाहता हूँ। जब उसने मुझे उतार दिया तो मैंने बतलाया कि मैं अब टहलना चाहता हूँ। उस भली औरत ने मेरी बात समझ ली और मुझे अपने बगीचे में घुमाने ले गयी।

दो

मालकिन की एक लड़की थी, जिसकी आयु नौ वर्ष थी और लगभग उसी उम्र का एक लड़का भी था। वह सुई के कामों में अत्यन्त निपुण थी और अपने बच्चे को बड़ी चतुराई से कपड़े पहनाती थी।

वह और उसकी माँ ने मिल कर तय किया कि रात में मेरे सोने के लिए बच्चों वाला खटोला ठीक कर दिया जाय। उस खटोले को आल-मारी की एक दराज मैं रख दिया गया ताकि चूहों से हिफाजत हो सके। जितने दिनों में इन लोगों के साथ रहा, मेरा बिस्तर यही था।

इस लड़की ने, जितना बढ़िया कपड़ा मिल सकता था उससे मेरे लिए सात कमीजें तैयार कर दीं। इतने पर भी वह कपड़ा टाट से ज्यादा ही खुरदुरा था। इन कपड़ों को वह मेरे लिये खुद अपने हाथों से साफ किया करती थी।

वही मेरी शिक्षिका भी थी, क्योंकि मैं उसी से पढ़ना सीखता था। जब मैं किसी चीज की ओर इशारा करता तो वह उसका नाम अपनी भाषा में बतला दिया करती थी। इस प्रकार थोड़े ही दिनों में मैं अपने को उसी भाषा में व्यक्त करने योग्य हो गया। वह बड़े अच्छे स्वभाव की लड़की थी। और कद में चालीस फुट से ज्यादा ऊँची नहीं थी। उसने मेरा नाम गिलडिग रखा, जिसे पहले तो परिवार वालों ने अपनाया और बाद में सारे राज्य भर के लोगों ने अपना लिया।

मेरे उस राज्य में जिन्दा रह पाने का श्रेय उसी को है। जितने दिन मैं वहाँ रहा, हम लोग कभी अलग नहीं हुये। मैं उसे अपनी ग्लुमडाल-क्लिच यानी छोटी आया कहता था। मैं घोर कृतघ्न कहलाऊँगा यदि मैं अपने प्रति उसकी दया व चिन्ता का जिक्र न करूँ।

थोड़े ही दिनों में पास-पड़ोस के सभी लोगों को मालूम हो गया कि मेरे मालिक किसान ने अपने खेत में एक अजीब जन्तु पाया है, यानी मुझको पाया है, जो कद में तो स्प्लैकनक के बराबर है, पर हर प्रकार से आदमी जैसा है; आदमियों जैसा ही व्यवहार करता है और अपनी भाषा में बोलता भी है, उनके इस देश की भाषा के भी शब्द सीख लिये हैं; दो पैरों पर खड़ा होकर चलता है और सीधा-सादा है, बुलाने पर फौरन आता है, जो कुछ कहा जाता है वही करता है। उसका रंग भी किसी अच्छे खानदान की तीन वर्ष की कन्या से भी ज्यादा साफ है।

मेरे मालिक का पड़ोसी, एक अन्य किसान, जो उसका दोस्त था, इस कहानी की सच्चाई का पता लगाने आया। फौरन मुझे टेबिल पर लाकर रखा गया। जो कुछ मेरे मालिक ने कहा वही मैंने किया, अपनी तलवार निकाली, उसे फिर म्यान में रखा और झुक कर अपने मालिक के मित्र का अभिवादन किया।

वह व्यक्ति कुछ बुढ्डा था और शायद उसको आँख से कुछ कम दिखलाई पड़ता था। यही कारण था कि उसने मुझे देखने के लिये चश्मा

लगाया। पर यह देख कर मुझे बड़ी हँसी आयी कि उसकी दोनों आँखें चमकदार चन्द्रमा की तरह चमक रही थीं। मेरी हँसी का कारण समझ कर अन्य लोग भी प्रसन्न हो गये और हँसने लगे पर वह बुड्ढा नाराज हो गया।

वह व्यक्ति बहुत कंजूस था। उसने मेरे मालिक को राय दी कि बाजार के दिन वह मुझे ले जाकर मेरी नुमाइश करे। यह नुमाइश इस शहर से बाइस मील दूर एक दूसरे शहर में लगती थी और घोड़े पर जाने में आधा घंटा लगता था।

मुझे मालूम हो गया कि आगे कुछ गड़बड़ होने वाली है। मैंने अपने मालिक को पड़ोसी के साथ मेरी ओर इशारा कर गुप-चुप बातें करते देखा। उनकी बातचीत के कुछ शब्द मेरी समझ में भी आ तो गये और इससे मेरा भय और बढ़ गया। दूसरे ही दिन मेरी छोटी आया ने सारी बातें मुझे बतला दीं। ये बातें उसने बड़ी चालाकी से अपनी माँ से मालूम कर ली थीं।

उस लड़की ने मुझे अपने सीने पर ले लिया और शर्म तथा भय के कारण रोने लगी। उसे डर था कि आवारा लड़के कहीं मुझे मार न डालें या उठाई-धराई में मेरे हाथ-पैर न तोड़ डालें। उसने यह भी कहा कि मैं बहुत ही नम्र स्वभाव का मृदुभाषी हूँ और यह कितनी बुरी बात है कि धन कमाने के लिये मेरी नुमाइस की जाये।

अपने पड़ोसी की राय से मेरे मालिक दूसरे दिन एक बक्से में रख कर मुझे बाजार ले गये और उन्होंने मेरी छोटी आया को भी साथ ले लिया। बक्सा हर तरफ से बन्द था। मेरे अन्दर जाने व बाहर निकलने के लिये एक छोटा छेद था और हवा के आने-जाने के लिये भी कई छिद्र थे। लड़की इतनी भली थी कि मेरे आराम का ख्याल कर उसने एक छोटा सा बिस्तर मेरे लिये उस बक्से में लगा दिया था।

लेकिन फिर भी उस आधे घंटे की यात्रा में मुझे बड़ी परेशानी हुई। घोड़ा एक डग में चालीस फुट का कदम भरता था और उसके इस प्रकार चलने का मेरे ऊपर वही असर होता था जो समुद्र में चलने वाले जहाज के हिलने-डुलने का होता है।

मेरा मालिक एक सराय में रुका। सराय के मालिक से कुछ सलाह

करने के बाद उसने ढिंढोरची को बुला कर एलान करने के लिये कहा कि 'ग्रीन ईगल' के पास एक विचित्र जीव दिखाया जायेगा।

सराय के सबसे बड़े कमरे में मुझे एक मेज पर बैठा दिया गया। यह करीब तीन सौ फुट चौड़ा था। मेरी छोटी आया को भी पास ही एक स्टूल पर बैठा दिया गया ताकि वह मेरी देख-भाल कर सके और मुझे आदेश दे सके। भीड़ से बचाने के लिये मेरा मालिक एक साथ कुल तीस आदमियों को ही भीतर आने देता था।

वह लड़की, जो कुछ कहती, वही मैं करता था। मैं मेज पर टहलता था। वह मुझसे सवाल करती थी और मैं उनका उत्तर देता था। कई बार दर्शकों की ओर मुड़कर मैंने उसका अभिवादन किया, उनका स्वागत किया और उनसे तरह-तरह की बातें कीं।

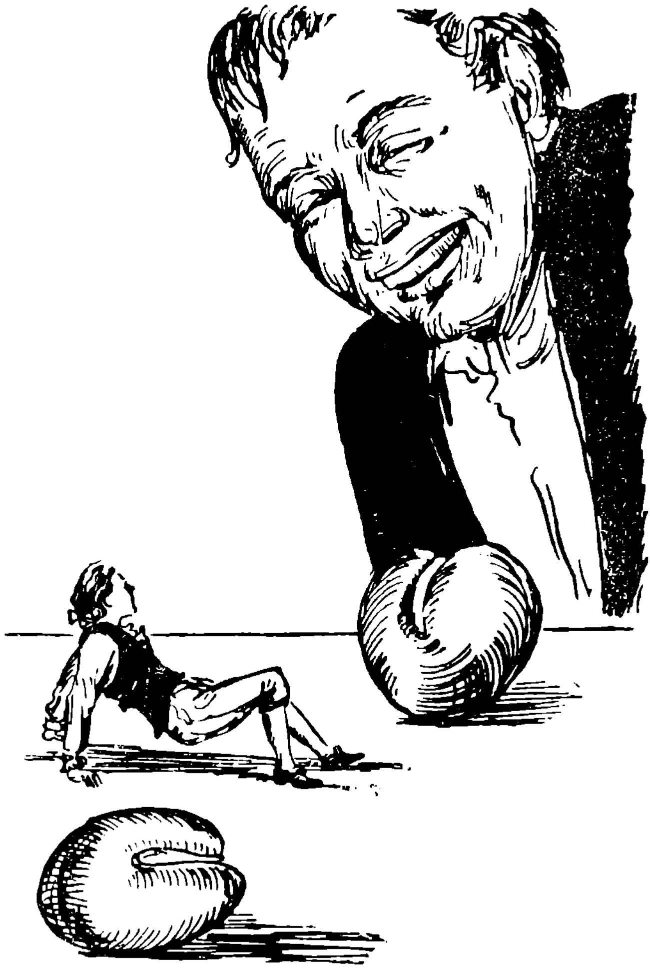
मेरी छोटी आया ने मुझे एक प्याले में शराब पीने को दी और मैंने उन सब की स्वास्थ्य कामना करते हुये उसे पी डाला। मैंने अपनी तलवार निकाल कर उसके करतब दिखाये और भूसे का एक तिनका दिये जाने पर उसे मुद्‌गर की तरह भाँज कर दिखाया।

उस दिन बारह टोलियों ने मुझे देखा और हर टोली के सामने मुझे वही कसरतें दिखानी पड़ती थीं। फलस्वरूप, थक कर मैं बेदम हो गया। जिन लोगों ने मुझे देखा, बाहर जाकर उन्होंने ऐसी-ऐसी बातें बतायीं कि लोग दरवाजा तोड़ कर अन्दर घुस आने के लिये तैयार हो गये।

मेरा मालिक अपने स्वार्थ के कारण मेरी छोटी आया को छोड़ कर किसी अन्य को मुझे छूने नहीं देता था। खतरे से मुझे बचाने के लिये मेज के चारों ओर बेंचें रख दी गयी थीं ताकि मैं लोगों की पहुँच से बाहर रहूँ।

पर एक स्कूली लड़के ने एक बीज फेंक कर मुझे मारा जिससे मैं बाल-बाल बच गया। यदि वह मुझे लग जाता, तो यह निश्चित था कि मेरा सिर फट जाता, क्योंकि वह बीज कद्‌दू से ज्यादा बड़ा था। इसके लिए उस लड़के को काफी मार पड़ी और फिर उसे कमरे से बाहर निकाल दिया गया।

मेरे मालिक ने आम ऐलान करा दिया कि वह मेरी नुमाइश दूसरे दिन भी करेगा। इस बीच उसने मेरे लिये ज्यादा आरामदेह गाड़ी तैयार करा दी। यह ठीक भी था, क्योंकि मैं इतना ज्यादा थक जाया करता था



कि फिर आठ घंटे लोगों का मनोरंजन करना असम्भव हो जाता था। उस हालत में न तो मुझसे खड़ा हुआ जाता था और न बोला जाता था।

अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने में तीन दिन लग गये। घर पर भी मुझे ज्यादा आराम नहीं मिला, क्योंकि मेरी चर्चा सुन कर इर्द-गिर्द के सौ मील तक से लोग मुझे देखने आये। यद्यपि इस बीच मुझे बाजार नहीं

ले जाया गया, पर मेरी मेहनत में कमी नहीं पड़ी क्योंकि प्रतिदिन कुछ न कुछ लोग मुझे देखने आ ही जाते थे।

मुझे इस प्रकार लाभदायक देख कर मेरे मालिक ने मुझे उस राज्य के सभी प्रमुख शहरों में घुमाने का फैसला कर लिया। यात्रा का बन्दोबस्त कर और घर के सब काम यथाविधि पूरे कर उसने १७ अगस्त १७०३ को अपनी पत्नी से विदा ली। उसके घर आये मुझे दो महीने हो चुके थे। हम लोग राजधानी गये जो राज्य के बीचोबीच बसी थी। यह जगह हमारे घर से करीब ३ हजार मील दूर थी।

मेरी छोटी आया—मालकिन की लड़की—मेरे पीछे-पीछे चल रही थी। वह मुझे अपनी गोद में रखे एक बक्से में लिये हुये थी। वह बक्स उसकी कमर में बँधा हुआ था। इस बक्से के चारों ओर उसने मुलायम कपड़े लगा रखे थे और मेरे लिए एक बिस्तर डाल दिया था और मेरे लिए प्रत्येक आवश्यक वस्तु की व्यवस्था कर दी थी। हमारे साथ घर का एक नौकर और था जो सबों का बिस्तर लेकर चलता था।

हम लोगों ने पाँच या छः नदियाँ पार की जो नील और गंगा से कहीं ज्यादा बड़ी थीं और शायद ही कोई नदी या नाला टेम्स के बराबर रहा हो। हमारी यात्रा में दस सप्ताह लगे और छोटे गाँवों और परिवारों को छोड़ कर अठारह बड़े नगरों में मेरी नुमाइश की गई।

२६ अक्टूबर को हम लोग राजधानी में पहुँचे जिसे उनकी भाषा में लोरबुलग्रुड कहते थे। मेरे मालिक ने शहर की मुख्य सड़क पर जगह ली। वह जगह शाही महल से ज्यादा दूर नहीं थी। उसने नगर में इश्तिहार बँटवा दिये।

उसने तीन-चार सौ फुट चौड़ा कमरा किराये पर लिया। साठ फुट व्यास की एक मेज उसने उसमें डलवाई। इसी पर मैं अपने खेल दिखाने को था। किनारे पर उसने तीन फुट ऊँची मुडेर बनवा दी, ताकि मैं गिर न पड़ूँ। दिन में दस बार मुझे प्रदर्शित किया जाता और सभी दर्शकों को संतुष्ट भी कर देता था। अब मैं उनकी भाषा बोल व समझ लेता था।

तीन

हफ्तों तक प्रतिदिन ऐसी ही मेहनत करने से मेरी सेहत बहुत गिर गयी। मेरा मालिक मेरे कारण जितना ही ज्यादा रुपया कमाता उसकी भूख उतनी ही अधिक बढ़ती जाती थी। मेरा पेट चिपक कर, पीठ से जा लगा था और मैं हड्डियों का ढाँचा-मात्र रह गया था। मेरे मालिक किसान ने सोचा कि जितना ज्यादा हो सके कमा लिया जाये।

जब मेरा मालिक इसी उधेड़बुन में लगा हुआ था, राजा का एक सरदार आया और उसने मुझे फौरन दरबार में हाजिर करने को कहा। क्योंकि रानी और उनकी सखियाँ मुझे देखना चाहती थीं। उनमें से कुछ तो मुझे देख चुकी थीं और मेरी सुन्दरता, व्यवहार और आचरण के बारे में रानी से बहुत कुछ कह भी चुकी थीं। मुझे देख कर रानी और उनकी सखियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

घुटनों के बल बैठ कर मैंने रानी से उनके पैरों को चूमने की आज्ञा माँगी, परन्तु रानी इतनी दयालु थीं कि उन्होंने अपने हाथों की उँगलियाँ मेरी ओर बढ़ा दीं और मैं दोनों हाथों से उनकी उँगलियों को पकड़ कर अपने मुँह तक ले गया। उन्होंने मेरे देश और मेरी यात्रा के बारे में जानने की इच्छा प्रकट की।

रानी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं दरबार में रहना पसन्द करूँगा? मैंने मेज तक झुक कर कहा कि मैं अपने मालिक का गुलाम हूँ, पर यदि मैं स्वतन्त्र होता तो रानी साहिबा की सेवा कर अपने को अवश्य धन्य मानता। तब उसने मेरे मालिक से पूछा कि क्या वह अच्छे दामों में मुझे बेचने को तैयार है?

मालिक तो यह समझे बैठा था कि मैं एक माह से अधिक जीवित नहीं रहूँगा। अतः वह मुझे बेचने को तैयार हो गया। उसने मेरा दाम एक हजार सोने की मुद्रा माँगा और रानी ने तत्काल दाम चुकाने का आदेश दिया।

मैंने रानी साहिबा से प्रार्थना की कि चूकि अब मैं उनका नौकर हूँ, अतः एक दया की भीख चाहता हूँ। रानी की मंजूरी पर मैंने प्रार्थना की कि ग्लुमडालक्लिच को मेरी देख-भाल और परिचर्या के लिये रख लिया

जाय, क्योंकि अब तब वही मेरी देख-भाल करती रही है और वही मेरी शिक्षिका भी है।

रानी ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली और किसान को भी इसके लिये तैयार कर लिया। वह इसलिये प्रसन्न था कि उसकी लड़की को दरबार में प्रवेश मिल गया और वह लड़की भी अपनी खुशी को नहीं छुपा सकी।

मेरे पुराने मालिक मुझे अभिवादन कर चले गये और जाते-जाते यह भी कहा कि मुझे अच्छी नौकरी दिलवा दी है। मैंने उसकी बातों का कोई उत्तर नहीं दिया, पर झुक कर अभिवादन अवश्य किया। रानी ने मेरी रुखाई को देखा और जब वह किसान चला गया तो उसका कारण पूछा।

मैंने रानी साहिबा को बतलाया कि उस किसान का इसके सिवा मुझ पर कोई एहसान नहीं है कि उसने मुझे अपने खेत में अचानक पाकर मेरा सिर नहीं फोड़ डाला। इस अहसान का उसने काफी मूल्य पा लिया है, क्योंकि राज्य भर में मुझे घुमा कर और आखिर में बेच कर उसने काफी रुपया कमा लिया है। उसके यहाँ रहते हुए मैंने इतनी ज्यादा मेहनत की है कि मेरे शरीर की ताकत चौथाई रह गयी है। दिन में हर समय जनता के मनोरंजन के लिये काम करते-करते मेरी सेहत बिगड़ चुकी है और यदि मेरे उस मालिक ने मुझे मृतप्राय न समझ लिया होता तो मुझे इतने सस्ते दामों में कभी न बेचता। लेकिन अब तो मैं संसार में सबसे दयालु, नेक और प्रजा की प्यारी तथा प्राणि मात्र से सहानुभूति रखने वाली रानी के पास पहुँच गया हूँ। अतः मुझे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रही। मुझे यह भी आशा हो गई है कि मेरे पुराने मालिक की इस उम्मींद पर पानी फिर जायेगा कि मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा। मेरी आत्मा तो इतनी उदार-हृदय रानी के सामने आते ही फिर जी उठी।

रानी ने मेरी टूटी-फूटी भाषा पर ख्याल न करके जब मेरे भाव सुने तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतना छोटा जीव इतनी अकलमन्दी की बातें कैसे करता है। उन्होंने स्वयं अपने हाथों से मुझे उठाया और मुझे राजा को दिखाने ले गयीं। राजा तब तक सोने की तैयारी कर चुका था।

राजा गंभीर स्वभाव का व्यक्ति था। मेरे रूप-रंग को वह पहले ठीक से देख नहीं पाया था, अतः उसने रूखे स्वर में रानी से पूछा वह स्प्लैकनक को कब से चाहने लग गई है। उसने मुझे स्प्लैकनक ही समझा था क्योंकि मैं रानी के दाहिने हाथ में इसी प्रकार खड़ा हुआ था।

लेकिन रानी साहिबा चतुर और हाजिर जवाब थीं। उन्होंने फौरन मुझे जमीन पर खड़ा कर दिया और राजा से अपने बारे में बतलाने को कहा। मैंने राजा को अपने बारे में संक्षेप में बता दिया। इधर ग्लुमडालक्लिच मुझे अकेले छोड़ना नहीं चाहती थी और वह दरवाजे के पास ही खड़ी थी। वह फौरन भीतर आयी और उसने मेरी बातों की सचाई के बारे में राजा को आश्वासन दिया। मेरे बारे में अपने बाप के घर में जाने से लेकर उस दिन तक की सारी बातें ब्योरेवार सुनायीं। इसके बाद राजा के दरबार के तीन विद्वानों ने आकर मेरी परीक्षा भी की।

उन्होंने मेरे दाँतों को देखा और मुझे माँसाहारी जीव बताया। लेकिन चौपाइयों के मुकाबले में मैं बहुत ही छोटा था और खेतों के चूहों से काफी बड़ा था। अतः वे यह न तय कर पाये कि मैं क्या खाता हूँ। उन्होंने अन्दाज लगाया कि मैं कीड़े मकोड़े खाकर जीवित रहता हूँ। इसके लिये उन्होंने बड़ी-बड़ी दलीलें पेश की और यह साबित करने का यत्न किया कि इसके अलावा और कुछ मैं खा ही नहीं सकता।

दरबारियों ने राजा को जो-जो कुछ देखा समझा, वह सब बताया। पर राजा को अभी पूरा यकीन नहीं हुआ था। उसने उसी किसान को बुलाने की आज्ञा दी। भाग्यवश वह अभी अपने नगर के लिए रवाना नहीं हुआ था। किसान से राजा ने सब बातें सुनीं। तब जाकर उसे मेरी बातों का यकीन हुआ और उसने रानी के पास कहला भेजा कि मेरी सुरक्षा का खास ध्यान रखा जाये और ग्लुमडालक्लिच को मेरे ही साथ रहने दिया जाय क्योंकि वह समझ गया कि हम दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं।

उसके रहने के लिये महलों में एक आरामदेह कमरा दे दिया गया। उसकी शिक्षा दीक्षा के लिये भी एक्र गवर्नेस जैसी औरत, कपड़ा पहनाने के लिये एक नौकरानी और अन्य छोटे कामों के लिये दो दूसरी नौक-

रानियाँ दी गयीं। लेकिन मेरी देख भाल की पूरी जिम्मेदारी तो उसी पर थी।

रानी ने स्वयं अपने बढ़ई को बुलवा कर मेरे लिये एक बक्सा बनवाया जो मेरे सोने के कमरे का काम दे सके। उसका ढाँचा मेरी और ग्लुमडालक्लिच की राय से ही तय हुआ था।

बह बढ़ई बड़ा अच्छा कारीगर था। तीन हफ्ते की मेहनत से उसने मेरे लिये सोलह फुट लम्बा और सोलह फुट चौड़ा तथा बारह फुट ऊँचा एक बढ़िया-सा बक्सा तैयार कर दिया जिसमें दो खिड़कियाँ, एक दरवाजा और दो आलमारियाँ भी थीं। उस बक्से में चारों ओर रुई की गद्दियाँ भी लगा दी गईं ताकि उसे लापरवाही से उठाये जाने पर भी मुझे चोट न लगे। मैंने दरवाजे के लिये ताला भी माँगा ताकि मैं दरवाजा बन्द कर सकूँ, जिससे चूहे अन्दर न आ सकें, लोहार ने कई कई बार कोशिश करने के बाद एक छोटा-सा ताला बनाया जैसा उनके यहाँ पहले किसी ने नहीं देखा था। यह सोचकर कि ग्लुमडालक्लिच कहीं ताली न खो दे, मैंने उसे अपनी जेब में रख लिया।

रानी ने मेरे कपड़ों के लिये महीन से महीन रेशम का आर्डर दिया। इस महीन रेशम की मोटाई अंग्रेजी कंबल की मोटाई से कम न रही होगी और जब तक मैं उसे पहनने का आदी नहीं हो गया, मुझे उलझन होती रही।

रानी को मुझे साथ रखने का इतना मोह हो गया कि वह मेरे बिना खाना तक नहीं खाती थीं। जिस मेज पर रानी खाना खाती थी, उसी पर मेरे लिये भी एक मेज और एक कुर्सी रख दी गयी। ग्लुमडालक्लिच एक स्टूल पर मेरे पास खड़ी रहती ताकि सब कामों में वह मेरी मदद कर सके। मेरी तश्तरियाँ और जरूरत की सभी चीजें चाँदी की थीं। इनको मेरी छोटी आया चाँदी के एक बक्से में रख कर अपनी जेब में डाले रहती थी और जब मैं खाने बैठता तो निकाल कर आगे रख देती। बरतनों को साफ भी वही करती थी।

रानी के साथ उनकी दो राजकुमारियों के अलावा और कोई खाना नहीं खाता था। बड़ी राजकुमारी की उम्र सोलह वर्ष थी खाना और छोटी की तेरह वर्ष एक महीना। रानी मेरी तश्तरी में माँस का एक छोटा

टुकड़ा रख देती और मैं उसमें से अपनी आवश्यकता भर निकाल लेता था। उसको खाते देख कर उन्हें बड़ी खुशी होती थी।

रानी का हाजमा बड़ा कमजोर था। फिर भी वह एक ग्रास में इतना खाना मुँह में रख लेती थीं, जितना एक दर्जन अंग्रेज किसान एक बार में पूरा खाना खाते हैं। यह देख कर शुरू-शुरू में मुझे बड़ी घबराहट होती थी। वह लावा पक्षी को पूरा का पूरा एक ही बार में मुँह में रख कर चबा डालती थी यद्यपि वह करीब-करीब नौ मुर्गों के बराबर होता। उसकी रोटी का एक कौर बारह पेनी वाली दो रोटियों के बराबर होता था। वह जिस प्याले से पानी पीती थी वह सूअर के सिर से ज्यादा बड़ा होता था। उसके चाकू की लम्बाई दो तलवारों की लम्बाई के बराबर थी। चम्मच, छूरी, काँटे आदि सभी इसी तरह के लम्बे-जम्बे होते थे।

उनके यहाँ का रिवाज था कि हर बुधवार को राजा और रानी अपने लड़के-लड़कियों के साथ भोजन करते। इन सबको मुझसे बहुत प्यार हो गया था। ऐसे अवसरों पर एक कुर्सी उन्हीं लोगों के बीच मेरे लिये भी रख दी जाती थी।

रानी के पास एक बौना था, जो देश में शायद सबसे छोटा आदमी था। जब मुझे देख कर वह अकड़ कर चलने लगता और बड़े होने का दम भरता तो मुझे बहुत बुरा लगता। मैं बहुधा मेज पर खड़ा रहता या स्त्रियाँ और अफसरों से बातें करता रहता था, तब भी वह दो-चार तानाकशी किये बिना नहीं रहता था। ऐसे मौके पर दरबारी तरीके के अनुसार मैं उसे भाई कह कर या कुश्ती लड़ने की चुनौती देकर बदला ले लेता था।

एक दिन हम लोग खाना खा रहे थे। मेरे किसी बात पर वह बौना इतना गरम हो गया कि अपनी कुर्सी से थोड़ा-सा ऊँचा उठा और उसने मुझे कमर से पकड़ कर मलाई के एक प्याले में डुबो दिया। और स्वयं बड़ी तेजी से भाग गया।

मैं उसमें डूबने उतराने लगा और यदि मैं अच्छा तैराक न होता तो उस दिन मालूम नहीं मेरी क्या हालत होती। ग्लुमडालक्लिच उस समय कमरे में दूसरी ओर थी। रानी इतनी ज्यादा परेशान हो गयीं कि उन्होंने मेरी सहायता के लिये उसे बुलाया। मेरी छोटी आया दौड़ी-दौड़ी

आयी और मुझे मलाई में डूबने से बचा लिया। फिर भी काफी मात्रा में मलाई मेरे पेट में जा चुकी थी। मुझे बिस्तर पर लिटा दिया गया। सूट खराब हो जाने के अलावा मुझे और कोई विशेष हानि नहीं हुई थी।

उस बौने को कोड़ों की सजा दी गयी और रानी ने उसे अपने दरबार से निकल कर किसी और स्त्री को दे दिया ताकि भविष्य में मैं उसे न देख सकूँ। इससे मुझे बड़ा संतोष हुआ, क्योंकि यदि वह बदमाश वहीं रह गया होता तो मालूम नहीं मेरे साथ कितनी बुराइयाँ करता!

उस बौने की एक आदत यह भी थी कि मुट्ठी में थोड़ी-सी मक्खियों को पकड़ कर मेरी नाक के पास छोड़ देता। स्कूल के बच्चे अक्सर आपस में ऐसा ही किया करते हैं। इस तरह से वह मुझे परेशान करता था। अपने चाकू से मैं उनके टुकड़े-टुकड़े कर देता। इसके अलावा और कोई चारा भी तो नहीं था।

मुझे याद है, कि एक दिन खाना खाने के बाद, जब मौसम साफ था, ग्लुमडालक्लिच ने मुझे खिड़की पर शुद्ध हवा लेने के लिये बैठा दिया। उसी समय करीब एक दर्जन मक्खियाँ भनभनाती हुई कमरे में घुस आयीं और उनकी भनभनाटह करीब एक दर्जन बिगुलों की आवाज से कम न रही होगी। कुछ ने तो मेरे केक उठा लिये और पूरा का पूरा लेकर भाग गईं, कई मेरे इर्द-गिर्द घूमती रहीं और अपनी भनभनाहट से मुझे परेशान कर डाला।

तंग आकर मैंने अपनी तलवार निकाली और उन पर हमला करने की हिम्मत की। मैंने चार को तो मार डाला और बाकी भाग गयीं। मैं भी खिड़की बन्द करके बैठ गया।

यहाँ के कीड़े भी बहुत बड़े थे। जब मैंने उनके डंक निकाल कर नापे तो देखा कि वे डेढ़ इंच के थे और सुई जैसे नुकीले भी थे। मैंने उनको अपने पास रख लिया और बाद में योरप की कितनी ही प्रदर्शनियों में आश्चर्यजनक वस्तुओं की तरह दिखाया। इंग्लैंड आने पर उनमें तीन तो मैंने ग्रेगम कालेज को दे दिये और एक अपने पास रख छोड़ा है।

चार

एक दिन गवर्नेस ने गाड़ी को कई दूकानों पर खड़ी करवाया। वहाँ खड़े हुये भिखारियों ने मेरी गाड़ी को रोक लिया। उनमें से एक के कूबड़ था, जो ऊन की पाँच गाँठों के बराबर था और कइयों के पैर लकड़ी के थे, जिनकी ऊँचाई बीस फुट से कम न रही होगी।

लेकिन सबसे ज्यादा घृणा होती थी उनके कपड़ों पर रेंगने वाली जुओं को देख कर! मैं अपनी आँखों से उनके हर अंग को बहुत आसानी से देख सकता था। उनकी सूँड तो सुअर के खुर जैसी थी। जीवन में पहली बार ऐसी चीज मैंने देखी थी और यदि मेरे पास औजार होते तो उन्हें चीर फाड़ कर उनकी परीक्षा भी अवश्य करता। सच तो यह है कि उनको देख कर इतनी घृणा उत्पन्न हुई कि मुझे कै-सी होने लगी।

उस बड़े बक्से के अलावा जिसमें मैं प्रायः ले जाया जाता था, रानी ने मेरे लिये एक और बक्सा तैयार कराया। यह करीब बारह फुट लम्बा बारह फुट चौड़ा और दस फुट ऊँचा था। यह यात्रा के लिये अधिक सुविधा-जनक था, क्योंकि इसे ग्लुमडालक्लिच आसानी से लेकर चल सकती थी। इसको भी उसी कारीगर ने तैयार किया था जिसने पहला वाला बनाया था। इसके तीन वर्गों में खिड़कियाँ बनी थीं, जिनमें लोहे की छड़ें लगा दी गयी थीं जिससे लम्बी यात्रा में मुझे ज़्यादा नुकसान न पहुँचे। चौथी और, जिसमें कोई खिड़की नहीं थी, दो कुंडे लगा दिये गये थे, जिनकी सहायता से वह बक्सा घोड़े की पीठ से तब बाँध दिया जाता था, जब मैं यात्रा करने की सोचता था।

जब कभी मैं घूमने जाता, मुझे यात्रा वाले बक्से में ले जाया जाता था। एक खुली पालकी में ग्लुमडालक्लिच मेरे बक्से को गोद में रख कर बैठ जाती थी। उस देश में इसका बहुत रिवाज था और उसे चार आदमी लेकर चलते थे। रानी की दो नौकरानियाँ भी साथ रहा करती थीं। वे सब लोग, जिन्होंने मेरी ख्याति सुन रखी थी मेरे चारों ओर भीड़ लगा लेते और मेरी छोटी आया भी गाड़ी रुकवा दिया करती थी। वह मुझे अपने हाथों में ले लिया करती, जिससे देखने वाले मुझे ज्यादा आसानी से देख लें।

मुझको यहाँ का मुख्य मंदिर देखने की बड़ी इच्छा थी, विशेष कर इसकी मीनार को, क्योंकि इसे राज्य की सबसे ऊँची इमारत समझा जाता था। अतः मेरी आया एक दिन मुझे उसी ओर ले गयी, लेकिन मैं निराश ही लौट आया क्योंकि उसकी ऊँचाई जमीन से तीन हजार फुट से कम नहीं थी। उन लोगों की ऊँचाई के अनुपात में मीनार की यह ऊँचाई मुझे कुछ ज्यादा नहीं जँची।

दीवारें करीब सौ फुट मोटी थीं और ईंट की पक्की बनीं थी जो शायद चालीस वर्ग फुट की होंगी। इनको चारों ओर से संगमरमर में कटी बड़ी-बड़ी मूर्तियों से सजाया गया था। वे मूर्तियाँ ईश्वर और राजाओं की थीं। मैंने इन मूर्तियों में से टूट कर गिरी हुयी एक उँगली को नापा तो वह चार फुट १ इच लम्बी निकली। ग्लुमडालक्लिच ने उसे अपने रूमाल में लपेट कर जेब में डाल लिया। इन चीजों को इकट्ठा करने में उसकी उम्र के बच्चों को बहुत ही आनन्द आता।

राजा का रसोईघर सच ही बड़ा सुन्दर था। ऊपर की ओर से ढँका हुआ यह छः सौ फुट ऊँचा था। पर यदि मैं रसोईघर के बर्तन और सामान वगैरह का वर्णन करने लगूँ तो मुझ पर शायद ही कोई विश्वास करेगा।

राजा के घुड़साल में छः सौ से ज्यादा घोड़े ही नहीं रहते थे। प्रायः ये चौवन फुट से साठ फुट ऊँचे थे। लेकिन जब ईश्वर की पूजा करने बाहर जाता था तो पाँच सौ घुड़सवार उसकी सलामी के लिये हाजिर होते और मेरे विचार में यह सबसे अधिक शानदार उत्सव होता था। इससे भी ज्यादा शानदार मौका मुझे देखने को तब मिला जब इनकी फौज का एक हिस्सा लड़ने के लिये गया हुआ था जिसका वर्णन मैं फिर कभी करूँगा।

पाँच

मैं उस देश में आराम से और ज्यादा दिन रह जाता यदि मेरी कद की छोटाई के कारण मेरा मजाक न उड़ाया जाता और मेरे जीवन के

लिये खतरा न पैदा हो गया होता। इनमें से कुछ घटनाओं का मैं विस्तृत वर्णन करूँगा।

ग्लुमडालक्लिच बहुधा मुझे मेरे यात्रा वाले बक्से में रख कर राजा के बाग में घुमाने ले जाया करती थी और कभी-कभी बक्से से बाहर निकाल कर मुझे हाथ में ले लेती और कभी-कभी घूमने के लिये जमीन पर भी उतार देती थी। मुझे वह दिन याद है, जब रानी ने अभी उस बौने को निकाल बाहर नहीं किया था। एक दिन मैं अपनी छोटी आया के साथ बाजार में घूमने के लिये गया, वह बौना भी साथ ही था। जब हम लोग सेब के छोटे-छोटे पेड़ों के करीब पहुँचे तो मुझे मजाक करने की सूझी। उस बदमाश ने शैतानी वश एक पेड़ को हिला दिया और करीब एक दर्जन सेब, जिनका वजन कद्दू से कम न रहा होगा, मेरे ऊपर गिर पड़ा। एक मेरी पीठ पर इतने जोर से गिरा कि मैं पेट के बल जमीन पर गिरा पड़ा। मुझे बहुत ज्यादा चोट तो नहीं लगी लेकिन मैंने कहा कि बौने को माफ अवश्य कर दिया जाय, क्योंकि उसे उकसाया मैंने ही था।

एक और दिन ग्लुमडालक्लिच ने मुझे घास के मैदान पर टहलने के लिये अकेले छोड़ दिया और वह स्वयं थोड़ी दूर पर घूमती रही। उस समय इतनी जोर का पानी बरसा और ओले पड़े कि मैं जमीन पर लेट गया और ओलों से मुझे इतनी ज्यादा चोटें लगीं कि जैसे टेनिस के गेंद से मेरी खूब पिटाई की गयी हो। मैं अपने को बचाने के लिये मुँह नीचा करके लेट गया, पर सिर से पैर तक मुझे इतनी ज्यादा चोटें आयीं कि मैं दस दिन तक कहीं बाहर जाने लायक नहीं रहा।

इसमें आश्चर्य कि कोई बात नहीं है क्योंकि प्रकृति ने वहाँ के निवासियों की लम्बाई के अनुपात में ही सब चीजें बड़ी कर दी थीं। वहाँ पर ओले के पत्थर योरप में गिरने वाले ओलों से कम से कम अठारह सौ गुना बड़े थे। मुझे तो उसका अनुमान लगाने और वजन करने में भी आश्चर्य होता था।

एक दिन जब मेरी छोटी आया ने मुझे बाग के एक सुरक्षित स्थान में अकेले छोड़ दिया तो एक विशेष दुर्घटना हो गई। प्रायः मैं उससे ऐसा करने को कहा करता था और वह स्वयं कहीं और घूमने चली जाती।

जब वह काफी दूर चली गयी और उस तक मेरी आवाज भी नहीं



पहुँच सकती थी, बाग के मालियों में से एक का स्पेनियल कुत्ता जो उस दिन खुला रहा गया था मौका पाकर अन्दर घुस आया और उसी स्थान पर पहुँच गया जहाँ मैं लेटा हुआ था। कुत्ता महक पाकर मेरे करीब आया और मुझे अपने मुँह में दबा कर सीधा अपने मालिक के पास दौड़ा गया। अपनी दुम हिलाते हुये उसने मुझे वहीं खड़ा कर दिया। वह इतना चतुर कुत्ता था और उसे इतनी अच्छी तरह सिखाया गया था कि मुझे कहीं पर भी जरा भी चोट नहीं पहुँची। यहाँ तक कि मेरे कपड़ों में एक भी खरोंच नहीं लगीं। लेकिन बेचारा माली, जो मुझे पहले से जानता था, मुझे इस भाँति लाये जाने से थर-थर काँपने लगा। उसने मुझे दोनों

हाथों से उठा लिया और मेरा हालचाल पूछा। लेकिन मैं इतने अचम्भे में डूबा हुआ था कि मेरे मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला।

कुछ ही देर बाद जब मेरे होश लौटे तो वह मुझे मेरी छोटी आया के पास ले गया। इस समय तक वह उसी स्थान पर लौट आयी थी, जहाँ वह मुझे छोड़ कर गयी थी और गुस्से में भी थी। क्योंकि उसके बार-बार पुकारने पर भी मैं कोई उत्तर नहीं दे रहा था। उसने कुत्ते वाली दुर्घटना के लिये माली को बहुत डाँटा, लेकिन मामला दबा दिया गया और दरबार में उसका जिक्र कभी नहीं हुआ, क्योंकि वह लड़की रानी के क्रोधी स्वभाव से पूर्णतया परिचित थी और मैंने भी यही सोचा कि वह कहानी मेरी ख्याति के लिये लाभदायक सिद्ध नहीं होगी।

इस घटना के बाद से ग्लुमडालक्लिच ने यह तय कर लिया कि आगे से वह मुझे कभी अकेले नहीं छोड़ेगी क्योंकि अपनी रक्षा स्वयं करने में मैं पूर्णतया असमर्थ था। मैं उसके इस फैसले से बहुत डरता था। अतः मैंने ऐसी कितनी ही दुर्घटनाओं का उससे कभी जिक्र तक नहीं किया।

एक बार बाग में उड़ती हुई चील ने मुझ पर झपट्टा मारा और यदि मैंने फौरन अपनी तलवार न निकाल ली होती और बड़े पेड़ की आड़ में न चला गया होता तो वह मुझे अपने पंजों में लेकर अवश्य उड़ गयी होती।

इसी तरह, एक बार जब मैं कभी घूम रहा था, तो बेध्यानी से चींटियों के एक बिल में गिर पड़ा और गर्दन तक धँस गया। अपने कपड़े खराब होने का मैंने क्या बहाना बनाया, यह तो मुझे याद नहीं रहा। ऐसे ही एक दिन घूमते-घूमते एक घोंघे की सीप से टकरा कर मैंने अपनी एक हड्डी तोड़ ली थी। उस समय मैं अपने देश इंग्लैंड की बात सोच रहा था।

मुझे याद नहीं कि मैं कितना खुश होता था जब उस देश की छोटी-छोटी चिड़ियाँ निडर होकर मेरे पास ही जमीन पर उतर जातीं और कीड़े पकड़-पकड़ कर खाया करती थीं। मुझे याद है कि एक दिन एक चिड़िया ने मेरे हाथ के केक तक छीनने की हिम्मत कर डाली जो ग्लुमडालक्लिच ने मुझे खाने को दिया था। जब मैं इन चिड़ियों को पकड़ने की कोशिश

करता, तो वे मुझसे दूर भाग जातीं या फिर अपनी चोंच से मेरी उँग-लियों पर हमला करती थीं, जिन्हें मैं हमेशा उनसे छिपा कर रखता था।

एक दिन हिम्मत कर मैंने एक बड़े पत्थर की मदद से एक चिड़िया को मार गिराया और दोनों हाथों से उसे गरदन से पकड़ कर विजयोल्लास के साथ दौड़ा-दौड़ा घर आया। लेकिन उस चिड़िया के हल्की चोट लगी थी। अतः अपने को सम्हालते ही उसने जोरों से फड़फड़ाना शुरू किया कि मैंने कम से कम बीस बार उसे उड़ा देने की सोची। पर एक नौकर ने फौरन मेरी मदद की और उस चिड़िया को लेकर उसकी गर्दन मरोड़ डाली और दूसरे दिन उसे पका कर मेरे खाने की मेज पर ला रखा।

बड़े घरों की स्त्रियाँ ग्लुमडालक्लिच को बहुधा दावत दिया करती थीं, जिससे वह मुझे लेकर उन लोगों के घर जाये और उन्हें मुझे देखने, छूने और मुझसे बातें करने का मौका मिले, इन बड़े घरानों की औरतों के बीच मुझे सबसे ज्यादा बुरी बात यही लगती थी कि ये मुझे बिल्कुल खिलौना समझती थीं और मेरी तनिक भी इज्जत नहीं करती थीं।

एक दिन महाशय, जो मेरी छोटी आया के गवर्नेस के भाँजे थे, मेरे यहाँ आये और हम दोनों से एक फाँसी देखने के लिए कहा। इस मामले में उस व्यक्ति को फाँसी दी जाने वाली थी जिसने इन महाशय के एक मित्र की हत्या कर डाली थी। ग्लुमडालक्लिच वहाँ जाने के लिए तैयार नहीं थी लेकिन बाद में लोगों ने उसे तैयार कर ही लिया। मैं भी ऐसे दृश्यों को देखने से अलग ही रहता था, लेकिन उस दिन उत्सुकतावश जाने की तय कर बैठा।

हत्यारे को एक कुर्सी पर बैठाया गया और एक ही बार में तलवार के एक वार में उसकी गर्दन साफ हो गयी। यह तलवार कम से कम चालीस फुट लम्बी रही होगी। नाड़ियों और नसों के कटने से खून इतनी तेजी से निकला कि उसके आगे पेरिस के फव्वारे भी मात थे और जब उसका सिर जमीन पर गिरा तो इतनी तेज़ आवाज़ हुई कि मैं तो अपनी जगह पर से उछल पड़ा, यद्यपि उस व्यक्ति से मैं कम से कम आध मील की दूरी पर रहा होऊँगा।

रानी को मैं अक्सर समुद्री यात्राओं की कहानियाँ सुनाया करता

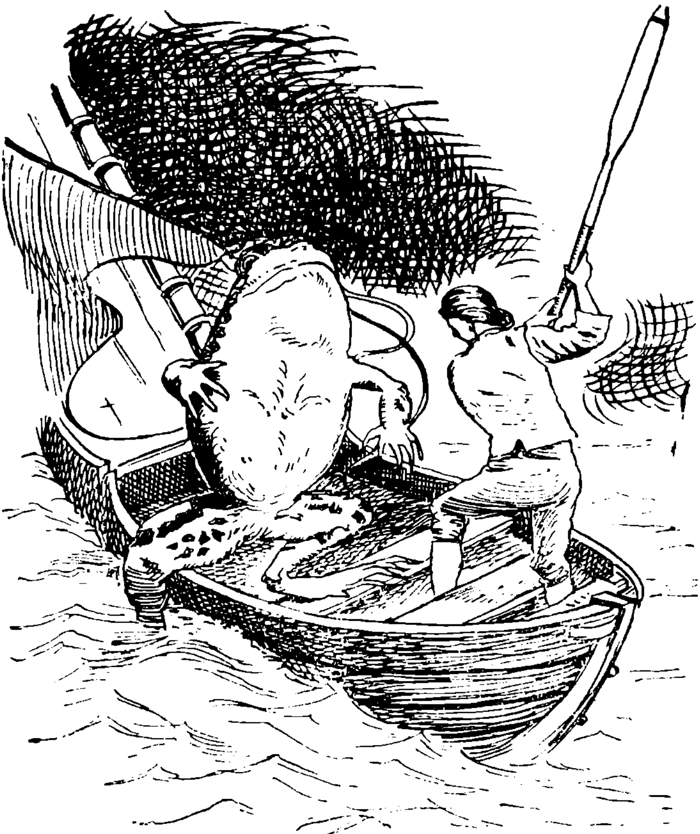
था। मेरे कहने पर रानी ने यह मंजूर कर लिया कि वह अपने बढ़ई से मेरी आवश्यकता के मुताबिक नाव बनवा देगी। वह कारीगर बहुत चतुर था और उसने दस दिन में मेरी इच्छानुनार एक नाव तैयार कर दी। उसमें मुझ जैसे आठ आदमी बैठ सकते थे। रानी देख कर इतनी प्रसन्न हुई कि उसे हाथ में लेकर वह दौड़ी-दौड़ी राजा को दिखाने के लिये ले गयी। राजा ने आदेश दिया कि एक बाल्टी में पानी भर कर उसमें डाल दी जाय और मुझे भी उसी में बैठा कर मेरी परीक्षा ले ली जाये। पर बाल्टी उस में दोनों पतवारों को चलाने की जगह नहीं थी।

इधर रानी ने इस सम्बन्ध में पहले से ही एक योजना बना रखी थी। उसने बढ़ई को आज्ञा दी कि तीन सौ फुट लम्बा, पचास फुट चौड़ा और आठ फुट गहरा एक कठौता तैयार करे। तैयार होने पर उसे महल के बाहरी हिस्से के एक बड़े कमरे में दीवार के सहारे रख दिया जाये। पानी निकलने के लिये उसमें नीचे की ओर एक काक भी लगा था। दो नौकर इसे आसानी से एक घण्टे में भर सकते थे। इसी में मैं बहुधा रानी और उनकी सहेलियों के मनोरंजन के लिये नाव खेया करता था। वे सब समझने लगी थीं कि मैं इस काम में बहुत ही चतुर हूँ।

कभी-कभी मैं पाल लगा लिया करता था। उस समय हवा चलाने के लिये रानी और उनकी सहेलियाँ पंखा करने लगती थीं और थक जाने पर केवल मुँह से फूंका करती थीं। उस हवा से मेरी नाव चलने लगती और मैं भी अपनी कला दिखाने लगता।

इसी खेलकूद में एक दिन दुर्घटना हो गयी। एक बार जब नाव उस कठौते में डाल दी गयी और नौकरानी मुझे उठा कर उसमें बैठाने लगी तो दुर्भाग्यवश में उसकी उँगलियों में से फिसल गया। मैं चालीस फुट नीचे जमीन की ओर लुढ़का तो, लेकिन उसी के फ्राक में लगी एक आलपीन में फ़ँस गया। वह आलपीन मेरे कोट से आरपार हो गयी और मैं बीच में ही लटका रह गया। तभी एकाएक ग्लुमडालक्लिच दौड़ी-दौड़ी आयी और उसने मेरी रक्षा की।

एक बार एक नौकर ने, जिसका काम उस कठौते में पानी भरना था, भूल से एक मेंढक भी उसी में छोड़ दिया। जब मेरी नाव ढौते में डाली गयी तो मेंढक उछल कर उसी में आ बैठा और उसके बोझ से मेरी नाव



एक ओर इतनी अधिक झुक गयी कि मुझे संतुलन कायम रखने के लिये दूसरे किनारे पर जाकर बैठना पड़ा। मेंढक नाव पर बैठने के बाद कूदने लगा और एक ही छलांग में आधी नाव पार कर मेरे सिर पर आ बैठा और मेरे सारे कपड़े गंदे हो गये ग्लुमडालक्लिच मेरी मदद को दौड़ी पर मैंने उससे कहा कि मुझे अकेले ही उससे निपट लेने दे। बड़ी देर तक मैं उसे अपनी पतवार से दबाये रहा और अन्त में वह उछल कर पानी में चला गया।

सबसे ज्यादा खतरनाक घटना तो एक बन्दर के कारण मेरे साथ उस राज्य में घटी। उसका मालिक दरबार का एक क्लर्क था।

ग्लुमडालक्लिच ने मुझे एक कमरे में बन्द कर दिया और खुद किसी काम से कहीं चली गयी। गरमी अधिक होने के कारण कमरे की खिड़कियाँ खुली छोड़ दी गयी थीं और मेरा बड़ा बक्सा भी खुला हुआ था।

जब मैं अपनी मेज के पास बैठा कुछ सोच रहा था तो मैंने खिड़की के पास किसी के आने और इधर-उधर उछलने की आहट सुनी। यद्यपि मैं घबरा गया था फिर भी डरा नहीं और पहले की तरह ही कुर्सी पर बैठा रहा। एकाएक मैंने इस डरावने जानवर को इधर-उधर छलाँगे मार कर उछलते देखा। वह मेरे बड़े बक्से के समीप आया। उसने उसे दरवाजे और खिड़कियों से झाँक-झाँक कर बड़ी उत्सुकता के साथ देखा था।

मैं अपने कमरे या बक्से के एक कोने में जा दुबका। मुझे बिस्तर में जाकर छिप जाना चाहिये था पर मैं तो घबड़ा गया था। कुछ देर तक इधर-उधर झाँकने के बाद उसने मुझे देख ही लिया और एक हाथ से दरवाजे को पकड़ कर और दूसरे को भीतर डाल कर उसने मुझे उसी प्रकार धर दबोचा जैसे बिल्ली चूहे को। उसने मुझे दाहिने पैर से उसी तरह पकड़ रखा था जैसे कोई आया बच्चे को दूध पिलाने लगी हो। जब



मैंने छूटने की कोशिश की तो उसने इतना कस कर दबा लिया कि मैंने छूटने का भी इरादा छोड़ दिया।

इसी बीच दरवाजे पर होने वाली आवाज से उसका ध्यान उचटा। किसी को दरवाजा खोलते देख कर वह मुझे लेकर खिड़की से भाग निकला और पहले तो थोड़ा सा चला और फिर उछल कर एक दीवार की मुँडेरे पर जा बैठा।

जब वह मुझे लेकर भाग रहा था तो मैंने ग्लुमडालक्लिच को भय से चीखते सुना था। वह बेचारी घबरा गयी। सारे महल में होहल्ला मच गया और नौकर-चाकर सीढ़ियाँ ले लेकर दौड़े। हजारों व्यक्ति बन्दर को और मुझे देखने के लिये इकट्ठे हो गये। बन्दर मुझे लिये मुँडेरे पर बैठा था और कुछ खिलाने की कोशिश कर रहा था। जब मैं नहीं खाता तो वह पुचकार कर मुँह में डालने का यत्न करता। कुछ लोगों ने ढेले मार कर इस उम्मीद में बन्दर को भगाना चाहा कि वह मुझे छोड़ कर चला जाये। लेकिन उन्हें मना कर दिया गया, क्योंकि डर था कि वे पत्थर मुझी को लगेंगे।

चारों ओर से सीढ़ियाँ लगा दी गयीं और लोग चढ़ने लगे। इस पर बन्दर ने अपने भागने का कोई रास्ता न देख कर वहीं खपरैल पर मुझे छोड़ दिया और खुद निकल भागा।

यहाँ, जमीन से करीब डेढ़ सौ फुट की ऊँचाई पर मैं बड़ी देर तक बैठा रहा और बराबर डरता रहा कि कहीं हवा के झोंके से नीचे न गिर पड़ूँ। तभी मेरी आया का एक समझदार नौकर ऊपर चढ़ा और अपने ब्रीचेज की जेब में मुझे रख नीचे उतर गया।

बन्दर की खिलाई गन्दी चीजों के कारण मेरे तो प्राण निकले जा रहे थे। मेरी छोटी आया ने एक सींक से उन चीजों को मेरे मुँह से निकाल दिया। उसके बाद मुझे कै हुई, जिससे मेरा जी हल्का हो गया। पर मैं इतना कमजोर और पस्त हो गया था कि करीब पन्द्रह दिन तक चारपाई पकड़े रहा।

राजा, रानी और अन्य दरबारी मेरे स्वास्थ्य के बारे में बार-बार पुछवाया करते थे और रानी तो कई बार स्वयं मुझे देखने के लिये भी आयीं। उस बन्दर को मार डाला गया। राजाज्ञा निकाल दी गयी कि किसी बन्दर को महल के पास न आने दिया जाये।

छः

मैं हफ्ते में दो बार नियम से राजा के पास अभिवादन करने जाया करता था। उस देश का नियम था कि राजा हफ्ते में दो बार दाढ़ी बनवाता था। उसके दाढ़ी बनवाने के दृश्य को देख कर बड़ा डर लगता था। जिस उस्तरे से उसकी दाढ़ी बनाई जाती थी वह साधारण तलवार से तिगुना बड़ा होता था।

एक बार उसके नाई से मैंने साबुन का थोड़ा-सा फेन माँगा। उसमें से मैंने बाल के चालीस या पचास टुकड़े निकाल लिये। फिर लकड़ी का एक चौकोर टुकड़ा लेकर ग्लुमडालक्लिच की सब से छोटी सुई की मदद से उसमें कुछ सूराख कर लिये। उसमें मैंने उन बालों के टुकड़ों को लगा दिया और इस प्रकार मैंने एक कंघा बना डाला। मेरा अपना कंघा टूट कर बिल्कुल बेकार हो गया था और उस देश में मैं किसी ऐसे कारीगर को जानता भी नहीं था, जो मेरे लिए कंघा बना देता।

मुझे एक ऐसे खुशनुमा जगह की भी याद है, जहाँ मैं घंटों बेकार बैठा करता था। रानी ने अपनी नौकरानी से कहा कि उसके बाल झाड़ने के बाद टूटे हुए बालों को इकट्ठा कर वह मुझे दे दिया करे। थोड़े ही दिनों में मेरे पास काफी मात्रा में बाल इकट्ठे हो गये। बढ़ई को मैंने दो कुर्सियों का ढाँचा तैयार करने का आदेश दिया। जब उसने कुर्सियों का ढाँचा तैयार कर लिया तो रानी के टूटे हुए मजबूत बालों से मैंने उन कुर्सियों को बुन डाला।

जब मैंने कुर्सियाँ तैयार कर लीं तो उन्हें रानी को उपहार स्वरूप भेंट कर दिया। रानी ने उन्हें अपने कमरे में रख लिया और सबको दिखाया करती थी, जैसे वह कुर्सियाँ कोई अजीब चीज हों। रानी ने कितनी ही बार मुझे उन कुर्सियों पर बैठने के लिए कहा लेकिन मैंने साफ इन्कार कर दिया, और यही कहा कि इतने बहुमूल्य और पवित्र बालों की बनी कुर्सी पर बैठने की मेरी हस्ती हो सकती है।

उन्हीं बालों से बुन कर मैंने एक सुन्दर-सा पर्स भी तैयार किया, जो पाँच फिट नाप का था। सोने के तारों से मैंने उस पर रानी का नाम भी लिख दिया और उन्हीं की आज्ञा से उसे ग्लुमडालक्लिच को दे दिया।

वह इतना मजबूत तो नहीं था कि उसमें बड़े-बड़े सिक्के रखे जा सकें। अतः वह उसमें सिर्फ छोटे-छोटे सिक्के ही रखा करती थी और केवल शोभा के लिए पर्स को लिए रहती थी।

राजा को संगीत का बड़ा शौक था और अक्सर उसके दरबार में संगीतज्ञों का सम्मेलन हुआ करता था। ऐसे अवसर पर मुझे भी दरबार में ले जाया जाता और वहाँ बैठकर मैं संगीत सुना करता था। उनकी आवाज इतनी अधिक हुआ करती थी कि मैं बड़ी मुश्किल से सुर-भेद कर पाता था। मेरा तरीका था कि अपने बक्से को उनकी मंडली से काफी दूर पर रखवा लेता, बक्से के सब दरवाजे बन्द कर लेता और खिड़कियों पर परदा डाल देता, तब उनका संगीत मेरे कानों को कुछ-कुछ अच्छा लगता था।

सात

अपने को राजा का प्रिय-पात्र बनाने के इरादे से मैंने राजा को बताया कि मेरे देश में एक ऐसे मसाले का आविष्कार हुआ है, जिसके ढेर से यदि जरा-सी भी चिनगारी छू जाये तो वह बहुत धमाके के साथ फट जाता है। मैंने बारूद और तोपों के बारे में भी राजा को सारा विवरण सुनाया। मैंने कहा कि यदि राजा चाहेंगे तो इन चीजों को यहाँ बना कर दिखा सकता हूँ।

राजा से मैंने प्रार्थना की मेरे कि प्रति किये गये उपकारों के बदले में मेरी इतनी सेवा मंजूर की जाये और मुझे इसे पूरा करने के लिए राज्य की ओर से मदद की जाये।

ऐसी मशीनों का वर्णन सुन कर राजा थोड़ा-सा भयभीत हो गया कि मैं इतनी खतरनाक चीजों के बारे में भी जानता हूँ। उसे आश्चर्य हुआ कि मुझ जैसे निकृष्ट आदमी के दिमाग में ये बातें आ ही कैसे सकती हैं और फिर स्वयं मेरे ऊपर इतनी खून-खराबी का तनिक भी असर क्यों

नहीं पड़ता। उसने अपना मत प्रकट किया कि ऐसी भयंकर मशीनों का आविष्कार मानव-जाति का कोई शत्रु ही कर रहा होगा।

उसने कहा कि नये-नये आविष्कारों की बातें सुनने और देखने से अधिक आनन्द और किसी बात में नहीं होता, परन्तु यदि उसका आधा राज्य भी चला जाये तब भी ऐसे भयंकर आविष्कारों के बारे में जानने की उसकी तनिक भी इच्छा नहीं होगी और यदि मुझे अपनी जान प्यारी है तो आगे से मैं ऐसे आविष्कारों का कभी कोई जिक्र उससे न करूँ।

संकीर्ण दिमाग का एक राजा पर क्या प्रभाव होता है, यह मैंने उसी दिन जाना। ऐसे गुण, जिनसे प्रेम बढ़े, ख्याति बढ़े योग्यता, बुद्धि और राज्य के कामों में दक्षता आये, आदि का यहाँ कोई मूल्य ही नहीं था। योरप में तो ऐसे गुणी व्यक्तियों की हर राज्य में कद्र होती उन्हें बुलाया जाता और सम्मानित किया जाता। ऐसे व्यक्तियों की सहायता से योरप के राजे तो अपने देश में सुख और समृद्धि की वृद्धि ही करते।

मेरा आशय यह कदापि नहीं है कि मैं किसी की नजरों में उस राजा की इज्जत कम करूँ। वैसे तो वह बड़ा ही योग्य था, परन्तु इस मामले में वह बुद्धिमान नहीं था। उसकी इस कमजोरी का कारण मेरी समझ में उसकी अज्ञानता और वैज्ञानिक खोजों का उचित ढंग से इस्तेमाल न कर पाने की अयोग्यता ही है। मुझे याद है कि एक दिन जब मैंने राजा को यह बतलाया कि राज्य करने की कला पर हमारे यहाँ हजारों पुस्तकें हैं तो उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ और उसने मेरी ओर तीव्र घृणा से देख कर कहा कि जो राजा नहीं होते वे राज्य करने की कला पर पुस्तकें कैसे लिख सकते हैं।

उसका विचार था कि राज्य या मंत्री में किसी प्रकार की छिपावट, षड्यंत्र करने की भावना या ऊँचा बनने की भावना का होना ही गलत है। वह समझ ही नहीं पाता था कि राज्य के गुप्त भेद से क्या मतलब है। विशेष कर उस जगह जहाँ किसी शत्रु-राष्ट्र का कोई प्रश्न ही नहीं था। राज्य करने में कार्य-कुशलता की समझ का उसका दायरा बड़ा संकीर्ण था और साधारण बुद्धि, विवेक, न्याय, निष्पक्षता, दीवानी और फौजदारी के मामलों का फौजी निपटारा, आदि ही गुण इसके लिए आवश्यक थे।

उसकी राय में ऐसे लोग, जो उस स्थान में, जहाँ पहले घास उगती

थी या कम अनाज होता था, वहाँ यदि कुछ अधिक उपजा सकते, तो राजनीतिज्ञों की एक पूरी फौज से कहीं ज्यादा अच्छे और लाभदायक होते।

इन लोगों की पढ़ाई का तरीका भी बड़ा दोषपूर्ण है, क्योंकि लोग सिर्फ नैतिकता, इतिहास, काव्य और गणित में शिक्षा को ही प्रधानता देते हैं। गणित का अध्ययन भी ये सिर्फ उसी हद तक करते हैं, जहाँ तक इन्हें उससे जीवन में—विशेष कर खेती और उद्योग में मदद मिले। अतः हम लोगों की नजरों में यह बिल्कुल काफी नहीं था और जहाँ तक विचार, विवेक, बुद्धि आदि का सम्बन्ध है, इन लोगों की समझ नहीं के बराबर थी।

उनके राज्य के कानून में आवश्यक शब्दों की संख्या उनकी भाषा के अक्षरों की संख्या से कभी अधिक नहीं हो सकती थी और यह संख्या थी केवल बाईस। ये लोग बहुत साधारण भाषा व शब्दों का प्रयोग करते थे। ताकि एक से अधिक व्याख्या किसी भी शब्द की न हो सके। किसी कानून पर टिका-टिप्पणी करना बहुत बड़ा जुर्म समझा जाता था। जहाँ तक दीवानी और फौजदारी के झगड़ों का प्रश्न है, उसमें पहले की नजीरें इतनी कम होतीं कि किसी प्रकार की चतुराई की आवश्यकता ही नहीं पड़ सकती।

उन्हें छपाई कला का भी ज्ञान था। लेकिन उनके पुस्तकालय बहुत बड़े नहीं होते थे, क्योंकि राजा के पुस्तकालय में, जिसे उस देश का सबसे बड़ा पुस्तकालय कहते हैं, कुछ सौ से अधिक पुस्तकें नहीं थीं और ये सभी मात्र बारह सौ फुट लम्बे-चौड़े बरामदे में रखी थीं।

रानी के बढ़ई ने एक प्रकार की मशीन-सी बनाकर ग्लुमडालक्लिच के कमरे में रख दी थी, जो लकड़ी की ऊँची सीढ़ी जैसी थी। हर सीढ़ी पचास फुट लम्बी थी। यह वास्तव में एक सीढ़ी ही थी, जो दीवाल के निचले भाग से दस फुट दूर रखी जाती थी। एक किताब जिसे मैं पढ़ना चाहता था, दीवाल के सहारे रखी थी। पहले मैं सीढ़ी पर चढ़ गया और किताब की ओर मुँह करके सीढ़ी पर आठ-दस कदम टहल-टहल कर, जहाँ तक किताब की पंक्तियाँ जाती थीं, पढ़ने लगा। जब पंक्ति

मेरी आँखों के सामने तक आ गई तो मैं नीचे उतर कर पढ़ने लगा और फिर नये पृष्ठ को शुरू करने के लिए सीढ़ी पर चढ़ गया। इसके पृष्ठों को दोनों हाथों से पकड़कर आसानी से पलट सकता था, क्योंकि इसका कागज दफ्ती जैसा मोटा था और सबसे बड़े पृष्ठ भी अठारह-बीस फुट से अधिक बड़े नहीं थे।

इनकी लिखावट साफ, चिकनी, बहावदार और पुरुषों की सी थी। इन लोगों का यही प्रयत्न होता था कि एक के बाद दूसरा शब्द बार-बार दुहराया न जाये, अतः लेख अत्यन्त संक्षिप्त होते थे। मैंने उनकी कई किताबों को पढ़ा, विशेष कर उन पुस्तकों को, जो नैतिकता और इतिहास के बारे में लिखी गयी थी।

जहाँ तक इनकी फौज का सम्बन्ध है, लोगों का कहना था कि राजा की फौज में एक लाख छिहत्तर हजार पैदल और बत्तीस हजार घुड़सवार थे। यदि इसे व्यापारियों, गाँव के किसानों की फौज कहा जाये, जिसके अफसर ऊँचे घराने के लोग होते थे, तो तनिक भी गलत न होगा।

मैंने लोरबुलग्रुड की फौज के आदमियों को बहुधा मैदान में कसरत करते देखा है। ये सब कुल मिला कर पचीस हजार पैदल और छः हजार घुड़सवारों से अधिक नहीं रहे होंगे और ये बीस मील के घेरे में खड़े होते थे। लेकिन जितनी जगह ये घेरते थे, उसके हिसाब से इनकी संख्या का अन्दाज लगाना आसान काम नहीं था। अगला घुड़सवार घोड़े पर चढ़ा हुआ करीब नब्बे फुट ऊँचा होता था। मैंने इन घुड़सवारों को एक इशारे पर तलवार निकाल कर कसरत करते हुए भी देखा है। इससे अधिक आश्चर्यजनक और डरावना दृश्य जीवन में शायद ही फिर कभी देखने को मिले। ऐसा मालूम होता था जैसे आकाश के हर कोने से दस हजार बिजलियाँ एक साथ चमक रही हों।

मैं यह जानने को बेचैन हो गया कि राजा, जिसका किसी अन्य देश से कोई सम्पर्क नहीं है अपने देश में सैन्य-संचालन की इतनी उत्तम व्यवस्था कैसे कर सका। लेकिन लोगों से बातचीत करने और इतिहास का अध्ययन करने से मुझे शीघ्र ही मालूम हो गया कि यह सब कैसे हुआ। इसका कारण था, बड़े घराने के लोगों का राज्य करना, साधारण

जनता की स्वतन्त्रता की चाह और राजा की एक-छत्र राज्य करने की इच्छा। इन्हीं कारणों से कभी-कभी राज्य में गृह-युद्ध हो जाया करता था। इसीलिए सेना की व्यवस्था बड़ी सख्ती के साथ होती थी।

आठ

मुझे इस देश में रहते दो वर्ष हो गये थे। तीसरे वर्ष की शुरुआत में मैं, राजा और रानी तथा ग्लुमडालक्लिच के साथ राज्य के दक्षिणी किनारे की यात्रा करने लगा। हमेशा की तरह मुझे अपने यात्रा वाले बक्से में ले जाया गया था। मैंने अपने बक्से में एक झूला भी डलवा लिया था ताकि रास्ते में मैं सो भी सकूँ। ऊपर की छत में मैंने एक फुट चौड़ा एक छेद भी करवा लिया था ताकि हवा बराबर आती रहे।

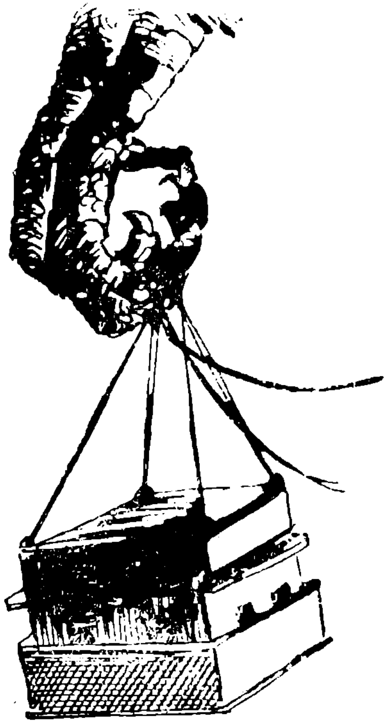
जब हमलोग यात्रा के अन्त के निकट पहुँचे तो राजा ने इच्छा प्रकट की कि कुछ समय एक महल में रुका जाय जो समुद्र तट पर अठारह मील में बसे एक शहर फ्लैफैसनिक नगर में बना था। ग्लुमडालक्लिच और मैं, दोनों ही बहुत थक गये थे। मुझे तो मामूली जुकाम भी हो गया था, लेकिन ग्लुमडालक्लिच इतनी ज्यादा बीमार पड़ गयी कि अपने कमरे से भी बाहर नहीं निकल सकती थी। मैं समुद्र देखना चाहता था, क्योंकि मेरे बच कर निकल भागने का वही एक मार्ग था। मैंने तबियत खराब है का बहाना किया और समुद्र के किनारे जा कर ताजीहवा प्राप्त करने की आज्ञा मांगी। मेरे साथ मेरा प्यारा और विश्वासी नौकर भी गया। मैं ग्लुडाल-क्लिचकी अनिच्छापूर्वक रजामंदी देने और नौकर को बराबर होशियार रहने की चेतावनी तथा उस फूट-फूट कर रोने के दृश्य क भी नहींभूल सकता।

वह नौकर मेरे बक्से समेत ही मुझे करीब आधे घण्टे तक समुद्र की ओर जाने वाले रास्ते पर टहलाता रहा। मैंने किनारे पर आ कर उसे रुक जाने का हुक्म दिया और खिड़की खोल कर कई बार निराशापूर्ण दृष्टि से समुद्र की ओर देखा। मुझे अच्छा नहीं लगा और मैंने नौकर से कहा कि कुछ देर मेरी सोने की इच्छा है। मैं अन्दर चला गया और नौकर ने खिड़की बन्द कर ली ताकि ठण्डी हवा अन्दर न पहुँच सके। मैं जल्दी ही सो गया और नौकर यह समझ कर कि अब किसी प्रकार का खतरा नहीं है, पहाड़ियों की ओर चिड़ियों का अंडा खोजने चला गया।

अचानक मेरी नींद खुल गयी, क्योंकि मैंने अपने बक्से के ऊपर वाले कुंडे को जोर-जोर से हिलते देखा। मुझे लगा कि मेरा बक्सा कोई बहुत ऊँचे पर उठाए लिए जा रहा है और फिर तेजी से आगे की ओर बढ़ा चला जा रहा है। पहले धक्के से तो अपने बिस्तर पर से गिरने तक की नौबत आ गयी थी, लेकिन बाद में साधारण गति से मुझे ले जाया जा रहा था।

मैं कई बार चिल्लाया और बार-बार नौकर को पुकारा, लेकिन सब बेकार हुआ। मैंने खिड़कियों से झाँका, लेकिन आसमान और बादलों के अलावा और कुछ भी नहीं दिखाई पड़ा। अपने ऊपर मैंने किसी चिड़िया के पर फड़फड़ाने की आवाज सुनी, जिससे मैंने अन्दाज लगाया कि मुझे बक्से समेत कोई चील लेकर उड़ी जा रही है। फिर तो यह सोच कर कि मालूम नहीं किस जगह वह चील मेरे बक्से को अपनी चोंच से छोड़ दे, मेरे प्राण निकलने लगे।

थोड़ी ही देर बाद परों की फड़फड़ाहट काफी तेज हो गई और मुझे मालूम हुआ कि चील बड़ी तेजी से उड़ती जा रही है। मेरा बक्सा भी बहुत तेजी से हिलने लगा। मैंने अनुभव किया कि चील की चोंच को काफी धक्के लगे और दूसरे ही क्षण मुझे ऐसा लगा कि मेरा बक्सा सीधी दिशा में नीचे की ओर बड़ी तेजी से गिरा जा रहा है। मेरा नीचे गिरना जब रुका तो पानी के बड़े जोर से उछलने की आवाज हुई, जैसे नियाग्रा प्रपात से जल गिर रहा हो। एक क्षण तो अन्धेरा-सा छा गया। पर फिर मुझे खिड़कियों से रोशनी आती दिखाई पड़ी और ऐसा लगा जैसे मैं पानी पर बहता जा रहा हूँ।



अब मैंने जाना कि मैं समुद्र में गिर पड़ा हूँ। मेरे बक्से में भारी सामान रखा होने के कारण वह समुद्र में पाँच फिट डूब कर बह रहा था। अब मुझे मालूम हुआ कि जब चील मुझे लेकर उड़ी थी तब दो-तीन दूसरी चीलों ने उसका पीछा किया था और अपनी हिफाजत करने के चक्कर में ही उसने मुझे छोड़ दिया था।

मेरे बक्से के नीचे के हिस्से में लोहे की छड़ लगी रहने के कारण समुद्र की लहर के थपेड़ों से बक्सा टूटने से बच गया। इसका कोई हिस्सा कम-जोर नहीं था। और दरवाजा भी ऊपर-नीचे खुलता था, जिससे पानी बहुत ही कम आ पाता था।

मैं बड़ी मुश्किल से झूले पर से उतरा और ऊपर वाली छत का दर-

वाजा भी खोल दिया ताकि हवा आ सके, क्योंकि गन्दी हवा से गला घुट रहा था।

यद्यपि सूराख बड़े नहीं थे फिर भी कई जगहों से मैंने पानी अंदर आते देखा। मैंने उन सूराखों को बन्द करने का प्रयास किया, परन्तु मैं ऊपर की छत पर जाकर बैठ न पाया, जिससे समुद्र की हवा का पूरा-पूरा आनन्द ले सकूँ। एक दिन या दो दिन इसी हालत में और रहता तो प्यास और भूख तथा ठंड के कारण जरूर मर जाता। इस स्थिति में मैं करीब चार घंटे रहा और हर मिनट मैं यही सोचता रहा कि अब मरा, अब मरा।

इस परेशानी की हालत में मुझे ऐसा लगा कि मेरे बक्से को कोई कुछ फँसा कर खींचने का प्रयत्न कर रहा है। इससे मुझे कुछ संतोष तो हुआ और मैं यह नहीं समझ पाया कि ऐसा होना कैसे सम्भव था। मैंने अपने रूमाल को एक छड़ी में बाँध दिया और उसी सूराख में ऊपर डाल-कर इधर-उधर हिलाने लगा ताकि यदि कोई जहाज नजदीक से जा रहा हो तो मेरे बक्से को केवल बक्सा ही समझ कर ही न छोड़ दे और यह समझ ले कि कोई अभागा इसमें बन्द है।

मेरा ऐसा करने का कोई असर होता न दिखा। इसलिए मैं कोशिश करके बक्से को थोड़ा-थोड़ा बहाता रहा। करीब एक घंटे बाद बक्से का वह हिस्सा, जिसमें कोई खिड़की नहीं थी, किसी सख्त चीज से जा टक-राया। मैंने इसे कोई चट्टान समझा और खुद भी धक्के के कारण कई बार हिल-डुल गया। मैंने अनुभव किया कि जैसे मेरे बक्से के ऊपर वाले हिस्से में लगे कुंडे में कुछ फँसाया जा रहा है। और जल्दी ही मैंने अपने बक्से को पहले से तीन फुट ऊँचा उठा पाया। मैंने तुरन्त अपने रूमाल के बने झंडे को पहले की भाँति छेद से निकाल कर हिलाना शुरू किया और जोर से चिल्लाया। उत्तर में मुझे भी कुछ शब्द सुनाई पड़े जिनसे मुझे इतनी राहत मिली कि कोई मेरी खुशी का अन्दाज नहीं लगा सकता। फिर मैंने किसी को छत पर चढ़ कर उसी सूराख से यह कहते सुना कि यदि कोई अन्दर हो तो फौरन बोले।

मैंने तत्काल ही उत्तर दिया कि मैं किस्मत का मारा एक अंग्रेज हूँ और अभाग्यवश ऐसी जगह आ फँसा था, जहाँ से निकल पाना नामुमकिन

ही था, और प्रार्थना की कि शीघ्र ही मुझे इस नरक से निकालने की कृपा करें।

तब उस आवाज ने उत्तर दिया कि तुम अब पूरी तरह सुरक्षित हो, क्योंकि तुम्हारे बक्से को जहाज में बांध दिया गया है और जल्दी ही बढ़ई से एक दूसरा बड़ा सूराख करवा कर तुम्हें निकाल लिया जाएगा।

मैंने अपनी परेशानी में ही जवाब दिया कि यह बेकार है और इसमें बहुत समय लगेगा। किसी को चाहिए कि बक्से के ऊपर छेद में उँगली डाल कर बक्से को उठा कर जहाज में रख देना चाहिए और फिर मुझे कप्तान के कमरे में पहुँचा देना चाहिए।

मुझे इस प्रकार कहते सुन कर लोगों ने मुझे पागल समझा और वे लोग हँसने लगे। बात यह थी कि मेरे दिमाग में अभी तक यह नहीं आया था कि अब मैं अपने ही कद के आदमियों के बीच आ गया हूँ। खैर, बढ़ई आया और करीब चार वर्ग फुट का एक नया सूराख करके उसमें एक छोटी सीढ़ी डाल दी। उसी सीढ़ी पर चढ़ कर मैं जहाज में आया और बड़ी कमजोर हालत में एक जगह ले जाया गया।

सभी मल्लाह मुझे देखकर हैरान हो रहे थे और उन्होंने मुझसे बहुत से प्रश्न पूछ डाले। लेकिन उनका उत्तर देने की मेरी जरा भी इच्छा नहीं हो रही थी। इतने सारे लोगों के बीच जो मेरे अपने ही कद के थे, पर इतने दिनों महामानवों के देश में रहने के कारण वे सभी मुझे अब बौने लग रहे थे, उनके बीच आकर मुझे भी कुछ अजीब-सा ही लग रहा था, क्योंकि उस समय मैं उन्हें बौने ही समझ रहा था। कैप्टन मिस्टर थामस विलकाक्स ने मेरी बुरी हालत देखी और मुझे वे अपने कमरे में लिवा ले गये। फिर मुझे थोड़ी-सी शराब दी और अपने ही कमरे में आराम करने को कहा। वास्तव में, इस समय मुझे आराम की ही जरूरत थी।

सोने से पहले मैंने उन्हें बताया कि बक्स में बहुत-सी बढ़िया और कीमती चीजें हैं। उन्हें सम्हाल कर रख लिया जाय। उनमें एक बिस्तर, दो कुर्सियाँ, एक मेज और एक आलमारी है। यदि कोई नाविक मेरे बक्से को यहाँ तक उठा ले आये तो मैं उसमें की चीजें दिखा दूं। मेरी इन बेवकूफी की बातों को सुन कर कप्तान ने समझा कि परेशानी के कारण मेरा दिमाग ठीक नहीं है और मैं बहक रहा हूँ। फिर भी उसने वायदा किया

कि वह मेरी इच्छा पूरी करेगा और डेक पर जाकर उसने कुछ आदमियों को आदेश दिया कि वे एक-एक कर बक्से से सारा सामान निकाल लायें और जब उन्होंने सब सामान निकाल लिया `तो फिर बक्से को समुद्र में डूब जाने दिया।

मैं कुछ ही घंटे सोया, पर पूरे समय सपने में उसी जगह की बातें देखता रहा, जिसे मैं छोड़ आया था। कुछ देर टहलने के बाद मैं अपने को तन्दुरुस्त अनुभव करने लगा। रात के आठ बज चुके थे और कप्तान ने यह सोच कर कि मैं काफी देर से भूखा हूँ, मेरे लिए खाना मँगवाया। उसने मेरे साथ अति विनम्र व्यवहार किया और यत्न किया कि मैं अब उल्टी-सीधी बातें न करूँ और जब हम दोनों अकेले रह गये तो उसने इच्छा प्रकट की कि मैं उसे अपनी यात्रा का वर्णन सुनाऊँ और यह भी बताऊँ कि मैं किस प्रकार इस लकड़ी के कमरानुमे बक्से में पहुँचा।

उसी ने मुझे बताया कि करीब बारह बजे, जब उसने दूरबीन लगाई तो मेरे रूमाल के झंडे को उड़ते देख और उसे उसने पाल समझा। उसने सोचा था कि नजदीक आ जाने पर इसकी नाव से कुछ बिस्तर खरीद लिये जायें, क्योंकि जहाज में बिस्तरों की कमी हो गई थी। नजदीक आने पर उसे सही बात मालूम हुई और उसने अपने नाविकों को पता लगाने को भेजा। पहले तो उसके नाविक डर कर भाग आये। बतलाया कि उन्होंने तैरते हुए एक कमरे को देखा है जिसे अभी तक नाव समझे थे। उनकी बेवकूफी की बातें सुनकर कप्तान खुद एक नाव में बैठ कर गया। मौसम खुला होने के कारण पहले तो उसने मेरे बक्से के चारों ओर कई चक्कर लगाये और उसके दरवाजों और खिड़कियों को देखा-भाला। रोशनी जाने का कोई मार्ग उसे दिखाई न पड़ा। तब उसने आदेश दिया कि रस्सियों से बाँध कर उसे जहाज के पास लाया जाये। जब बक्सा जहाज के निकट आ गया तो उसने बक्से को कुछ ऊँचा करने को कहा। उसके नाविकों ने मिल कर प्रयत्न किया और बड़ी मुश्किल से दो-तीन फिट ही ऊँचा उठा पाये। उन्होंने मेरे रूमाली झण्डे को छेद से निकलते देखा और तब वे इस नतीजे पर पहुँचे कि इस बक्से के अन्दर अवश्य ही कोई आदमी बन्द है।

मैंने कप्तान से आग्रह किया कि पहले वे शान्त होकर मेरी बातें सुन लें। और तब मैंने दूसरी बार इंगलैंड छोड़ने से लेकर उनसे भेंट होने

तक की सारी बातें ठीक से सुना दीं। सच्ची बातें खुद अपनी जगह बना लेती हैं। कप्तान को भी मेरी कहानी पर पूरी तरह विश्वास हो गया, लेकिन उसे और विश्वास दिलाने की गरज से मैंने उसे उस देश की कुछ आश्चर्यजनक चीजें दिखायीं।

राजा के दाढ़ी के बालों के टुकड़ों से बने कंघे को मैंने उसे दिखाया और एक दूसरा कंघा दिखाया जो राजा के कटे नाखूनों का बना था। वहाँ की सुइयों और आलपीनों को भी मैंने दिखाया, जो एक फुट से तीन फुट लम्बी थीं। बर्रे की डंक दिखाई जो काँटे जैसी थी। रानी के टूटे बाल दिखाए और उसकी एक अँगूठी भी दिखाई जिसे उसने मुझे एक दिन खुश होकर उपहार स्वरूप दिया था। वह मेरे गले के कालर जैसी थी। मैंने उस अँगूठी को कप्तान को भेंट-स्वरूप देना चाहा, पर उसने लेने से इन्कार कर दिया। तब मैंने उसे वहाँ के अनाज की एक बाल दिखाई, जो मैंने खुद तोड़ी थी। यह इतनी बड़ी थी जैसे लौकी।

और जब मैं इंगलैंड वापस आया तो उसमें गड्ढा कर उसे चाँदी में जड़वा कर प्याले के काम में लाने लगा। उसे मैंने अपनी ब्रीचेज भी दिखाई जो कि वहाँ के चूहों की खाल की बनी थी।

मैंने उसे एक नौकर का टूटा हुआ दाँत भी दिखाया। इसे देखने के लिए मैंने उससे विशेष आग्रह किया। सचमुच यह देख कर उसे महान् आश्चर्य हुआ और वह उसे लेने को राजी भी हो गया। यह दाँत करीब एक फुट लम्बा और चार इंच चौड़ा था।

मुझसे मिल कर और आप बीती सुन कर कप्तान बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने मुझे राय दी कि इंगलैंड वापस जाने पर मैं अपनी इस यात्रा की बातें अखबारों में अवश्य छपवाऊँ। मैंने कहा कि हमारे देश में यात्रा-सम्बन्धी पुस्तकों की कोई कमी नहीं और अब तो कोई यात्रा भी आश्चर्य-जनक नहीं समझी जाती। वास्तव में अधिकतर लेखक अपनी पुस्तकों में सचाई को कम स्थान देते हैं और अपनी भावनाओं को ही अधिक। मेरे यात्रा-वर्णन में आश्चर्यजनक पेड़-पौधों, चिड़ियों, जानवरों आदि के अलावा और कुछ विशेष नहीं होगा या फिर वहाँ के रहने वालों के जंगली आचार-व्यवहार आदि का ही चित्रण होगा। फिर भी मैंने कप्तान को

उसकी इस राय के लिए बहुत धन्यवाद दिया और इस विचार को ध्यान में रखने का वायदा भी किया।

इस समय हमारा जहाज टान्किन के निकट था जो इंगलैंड के उत्तर-पूर्व में ४४ अक्षांश और १४३ देशान्तर पर था। हम यद्यपि इंगलैंड की ओर ही बढ़ रहे थे परन्तु एक भारी तूफान आने के काफी समय तक हम लोगों को दक्षिण की ओर ही चलना पड़ा। न्यू हालैंड के किनारे कुछ समय रुक कर फिर हम लोग थोड़ा घूम कर उत्तमाशा अन्तरीप तक पहुँचे।

हमारी यात्रा अत्यन्त मनोरंजक रही। एक दो बन्दरगाहों पर रुक कर हम अपनी जरूरत की चीजें माँगते हुए, रास्ता तय करते रहे और ३ जून, १७०६ को डाउन्स पहुँचे। यह दिन मेरी यात्रा शुरू करने के नौ महीने बाद आया था और तब तक मैंने जहाज के बाहर कदम नहीं रखा था। मैंने कप्तान से कहा कि किराए की जगह वह मेरा सामान रख ले, लेकिन कप्तान ने कुछ भी लेने से साफ इन्कार कर दिया। हम लोग एक दूसरे से विदा हुए लेकिन मैंने कप्तान से वायदा करा लिया कि वह मुझसे मिलने मेरे घर रेडिफ जरूर आयेगा। मैंने एक घोड़ा किराए पर लिया और कप्तान से पाँच शिलिंग उधार भी लिये।

अब घर की ओर जाते हुए, सड़क पर इस यात्रा में देखे घरों, पेड़ों, आदमियों के बारे में सोचता हुआ चला जा रहा था, तो लिलीपुट की बातें भी मेरे मस्तिष्क में चक्कर काटने लगीं, जहाँ रहते समय मुझे हर समय यही डर लगा रहता था कि कहीं कोई मेरे पैरों के नीचे आ कर दब न जाये और कितनी ही बार चिल्ला-चिल्ला कर कहना पड़ता था कि रास्ते से हट जाओ।

जब मैं अपने गाँव के नजदीक आया तो अपने घर के बारे में लोगों से पूछ-ताछ की। घर पहुँचा तो एक नौकर ने दरवाजा खोला और मैं सिर झुका कर अन्दर घुसने लगा। मेरी बीबी मेरे पास दौड़ी आयी और मुझसे लिपट गयी, लेकिन मैं उसके घुटने तक झुक गया। मेरे दिमाग में था कि यदि मैं नहीं झुकूँगा तो वह शायद ही मेरे चेहरे तक पहुँच पायेगी। मेरी लड़की भी अभिवादन करने को मेरे आगे झुकी। लेकिन मैं उसे तब तक देख ही नहीं पाया जब तक वह सीधी खड़ी नहीं हो गयी क्योंकि

मुझे सदा साठ फुट ऊपर देखने की ही आदत पड़ गयी थी। फिर मैं उसकी कमर में एक ही हाथ डाल कर उठाने लगा। मैंने घर के नौकरों और वहाँ उपस्थित एक-दो मित्रों की ओर आश्चर्य भरी दृष्टि से इस प्रकार देखा जैसे वे सभी बौने हों और मैं महामानव जैसा ऊँचा। मैंने बीबी से शिकायत की कि वह बेहद दुबली हो गयी है, क्योंकि मेरी अनुपस्थिति में उसने बहुत कंजूसी से दिन गुजारे। संक्षेप में यही कहना ठीक होगा कि मेरे इस प्रकार के व्यवहार से उन लोगों ने मुझे पागल ही समझा। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ मैं अभी तक बीते दिनों की पड़ी आदतों से मुक्त नहीं हुआ था।

लेकिन थोड़ी देर बाद ही सब ठीक हो गया। मैं, मेरे परिवार के लोग और मित्रगण एक-दूसरे को पूरी तरह समझ गये। मेरी बीबी ने बड़ी दृढ़ता से कहा कि अब आगे से वह मुझे समुद्र-यात्रा के लिए कभी भी नहीं जाने देगी क्योंकि वह समझ गई थी कि मेरा दुर्भाग्य ही मुझे समुद्र-यात्रा में घसीट ले जाता है, जिस पर उसका या मेरा कोई जोर नहीं था।